मनोकामना सिद्धि विशेषांक
जून ९५
मूल्य-१८/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
लोकसभा चुनावों से
पहले और बाद में
एक सम्पूर्ण अध्ययन

गुरु पूर्णिमा शिविर

9 से 12 जुलाई 1995

पानीपत

- ★ योग . . . . . अर्थात् एक बार फिर वही गाथा . . . . .
- ★ नदी निकली और समुद्र से मिलने चली! . . . . . वर्षों की दोहराई गाथा!!
- ★ प्रवाह की गाथा, किन्तु नदी प्रवाह खो चुकी . . . . . क्योंकि बात नहीं की गई उससे हिमालय की . . .
- ★ जिसका गर्भ चीर कर वह निकली . . . . . . जिसने उसे प्रवाह दिया।
- ★ इसी से बासी पड़ गईं तुम्हारी उपमायें . . . . . और हृदय को छू नहीं सकीं . . . . .
- ★ आओ . . . . . अब हिमालय की बातें कहें और सुनें . . . . . गुरु को भी हिमालय ही कहा गया है. . . . . और चलें इस गुरु पूर्णिमा पर, पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठें।

: सम्पन्न होने वाले प्रयोग :

क्रिया योग, राज योग
कुण्डलिनी जागरण प्रयोग
प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग
पूर्ण साधना सिद्धि प्रयोग
सिद्धाश्रम साधना

: सम्पन्न होने वाली दीक्षाएं :

आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा, क्रिया योग दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा, कुबेर सिद्धि दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, ब्रह्माण्ड दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा और वे दीक्षाएं, जो आप-अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्राप्त करना चाहेंगे।

आयोजन स्थल : डेरा बाबा जोधसचियार, गोहाना चौक, जी. टी. रोड, पानीपत।

शिविर शुल्क : 660/-

आयोजक

श्री एस० वी० सक्सेना, 101, विशन स्वरूप कॉलोनी, पानीपत
श्री सतीश सिंघला, होटल सिंघला पैलेस, पानीपत, फोन : 01742-23396
श्री विलायती राम अग्रवाल, एडवोकेट, 438, मॉडल टाउन, पानीपत, फोन : 01742-22507
ब्रिगेडियर जे. आर. सेठी, वी. एस. एम., 210 पुरानी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, पानीपत, फोन : 01742-20210
श्री वी. पी. जैन, उद्योगपति, मॉडल टाउन, पानीपत
डॉ० उदयभान दिवान, सलारगंज गेट, पानीपत, फोन : 01742-21694
श्री अविनाश ग्रोवर, हरिबाग कॉलोनी, पानीपत
निखिल ध्यान केन्द्र, गौतम बाजार, पानीपत
श्री धर्मवीर सलूजा, रिटायर्ड सेक्रेटरी एम. सी. डी. मॉडल टाउन, पानीपत

पानीपत, दिल्ली से 100 कि.मी. दूर रेल व बस द्वारा जुड़ा महत्त्वपूर्ण नगर है। पश्चिमी उत्तर-प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के साधक यहां तक सीधे भी पहुंच सकते हैं। शेष प्रान्तों के साधकों के लिए दिल्ली आकर अन्तर्राज्यीय बस स्टैंड (पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास स्थित) से पानीपत पहुंचना ही सुविधाजनक रहेगा।

अभयकुमार उत्तम

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

कौबेरस्य च वैभवं सुविमलमैश्वर्य लक्ष्म्याः नुतम्
कामः पौरुष संयुतं रतियुतं सौन्दर्य कान्ति प्रदम् ।
मांगल्यं त्रिपुरावदात्त सकलं वल्गा सवल्गा भवेत्
एकेनैव कृपाकटाक्ष स्फुरिता सर्वा मनोकामना ।।

हे गुरुदेव! आपकी एक ही कृपा-कटाक्ष से कुबेर का सम्पूर्ण वैभव, लक्ष्मी द्वारा प्रदत्त ऐश्वर्य, कामदेव का पौरुष, रति का दिव्य सौन्दर्य, त्रिपुर सुन्दरी द्वारा प्रदत्त मंगल, बगलामुखी की शत्रु संहारक शक्ति सभी साधकों को प्राप्त हो, यही मेरी मनोकामना है।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

११ पारद गणपति
१५ आरक्ष साधना
२३ पूर्ण पौरुष साधना
२६ शत-पत्रिका यक्षिणी साधना
३१ विशिष्ट लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग
४५ हमारे जीवन की इच्छाएं अनन्त हैं
४७ लक्ष्मी प्राप्ति के लिये अचुक प्रयोग
५६ बगलामुखी साधना
६७ श्राद्ध
७७ कल्कि प्रयोग

स्तम्भ

०४ पाठकों के पत्र
४६ साधक साक्षी हैं
५६ राशिफल
५८ ज्योतिष प्रश्नोत्तर
७५ राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट
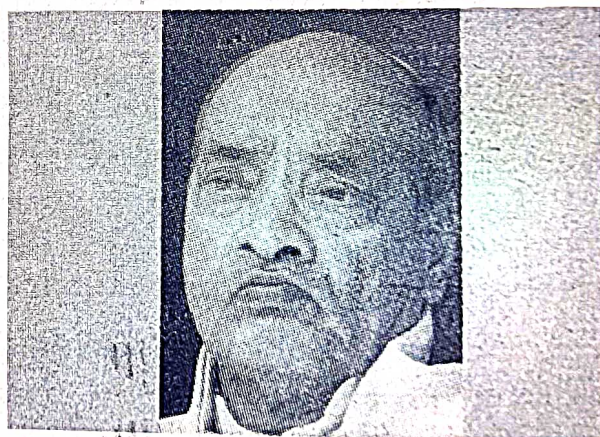
विवेचनात्मक

२७ ध्यान में छिपे हैं जीवन के रहस्य

सद्गुरुदेव

०६ संस्कृति के पुरोधा डॉ० श्रीमाली
५१ गुरुदेव कैलाश चन्द्र जी श्रीमाली

कथ्य

७१ सिंहस्थ योगिनी

रिपोर्ताज

३७ जब सम्पूर्ण विश्व कस्तूरी की तरह महकने लगा – सद्गुरुदेव जन्मोत्सव
३५ गुरु सेवा

ज्योतिष

१६ लोकसभा चुनावों से पहले. . .

विशेष

६३ गुरु पूर्णिमोत्सव
३४ भव्य साधनात्मक शिविर

साधकों के लिये विशेष

कई बार साधकों के पत्र आते हैं, कि साधना विधि आपने नहीं भेजी, पत्रिका में प्रत्येक साधना की विधि उसमें प्रकाशित रहती है, आप उसमें से ही देख कर साधना सम्पन्न करें।
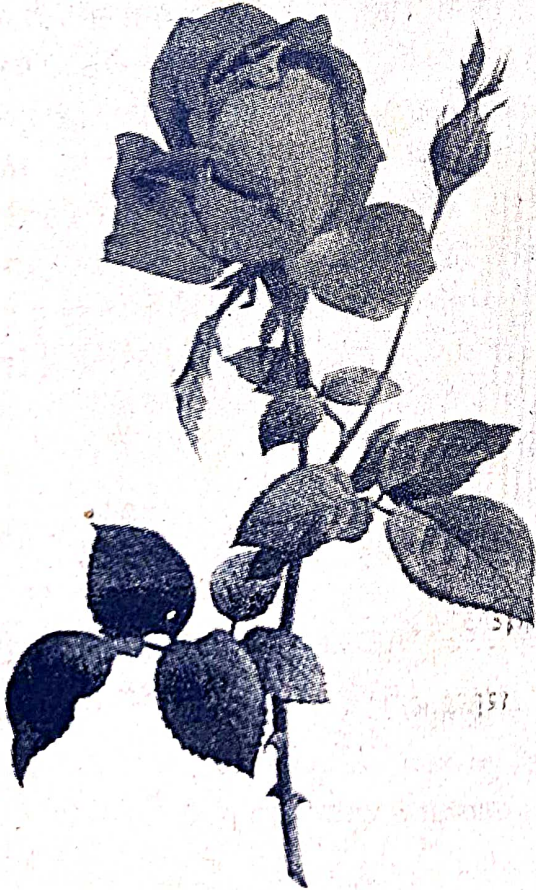
पाठकों के पत्र

● पूज्य गुरुदेव, **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान फरवरी ९५''** के अंक में **''त्राटक''** सम्बन्धी जानकारी पढ़कर संशय का समाधान मिला। मेरी हार्दिक इच्छा है, कि यह पत्रिका फूले-फले, जिससे लाखों-करोड़ों शिष्यों एवं साधकों का कल्याण हो सके, तथा गुरुदेव से प्रार्थना है, कि मुझे 'गुरु दीक्षा' तथा 'खेचरी क्रिया' में पूर्णता प्रदान करने की कृपा करें।

नेत्र सिंह रावत, मलकोट, पौड़ी गढ़वाल

● कुंडली का मंगली योग होना या विवाह के योग में कुंडली का मंगली होना क्या है? इस विषय पर तथा इसके गुण-दोषों पर आधारित यदि कोई लेख पत्रिका में प्रकाशित करें, तो अधिक प्रासंगिक एवं सामयिक तो होगा ही, साथ ही हम पाठकों पर भी बड़ी कृपा होगी।

रवि प्रकाश, इन्दौर

— आपका सुझाव अच्छा है, भविष्य में इससे सम्बन्धित लेख पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

उपसम्पादक

क्या यंत्र व माला का प्रयोग सफलता मिलने तक किया जा सकता है या विसर्जन करना आवश्यक है?

सुभाष शर्मा, दिल्ली

—आप साधना-सामग्री का प्रयोग साधना में सफलता प्राप्ति तक कर सकते हैं, परन्तु यदि आप एक यंत्र व माला से तीन बार प्रयोग कर सामग्री बदल लें, तो अधिक फलप्रद होगा।

उपसम्पादक

● **मार्च ९५** के अंक में **पृष्ठ ६** पर प्रकाशित **''त्वदीयं वस्तु निखिलं तुभ्यमेवं समर्पयेत्''** पढ़कर मन आनन्द से भर उठा। वास्तव में गुरु ही शिष्य के जीवन का मुख्य आधार हैं।

जमुना प्रसाद, जहांगीर पुरी, दिल्ली

● आदरणीय सम्पादक जी, पत्रिका में ऑडियो-वीडियो कैसेट का विवरण पढ़कर, जोधपुर से वीडियो कैसेट प्राप्त की, जिसे देखकर ही प्रत्येक व्यक्ति का, जो कि वीडियो कैसेट को देख रहा था, उसका रोम-रोम झंकृत होने लगा। वास्तव में ही पूज्य गुरुदेव की वाणी सत्यता और प्रामाणिकता से ओत-प्रोत है।

अनिमेष चौहान, आगरा

● जनवरी माह की पत्रिका प्राप्त हुई, पत्रिका काफी आकर्षक लगी। पत्रिका में **भैरवी चक्र, ज्वालामालिनी, त्रिलोचना आकर्षण, उर्वशी तंत्र** तथा **हिडिम्बा तंत्र** काफी रोचक रहा। 'उर्वशी तंत्र' तथा 'हिडिम्बा तंत्र' आज के परिवेश में युवा वर्ग के लिए तथा वृद्ध व्यक्तियों के लिए भी उपयोगी है। हिडिम्बा तंत्र का उपयोग कर वृद्ध अपने बच्चों पर अपना पूर्ण नियंत्रण रख सकते हैं तथा समाज में भी एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

धनंजय कुमार निराला, राघोपुर

● पूज्य गुरुदेव, मैंने जोधपुर कार्यालय से एक पारद मुद्रिका, पारद शिवलिंग, कनकधारा यंत्र, तांत्रोक्त नारियल तथा सर्वरोग निवारण यंत्र आदि मंगवाये थे, जो कि मेरे लिए अत्यन्त अनुकूल सिद्ध हुए, इसके लिए आपको लाख-लाख धन्यवाद।

सतीश त्रिवेदी, हुगली

● पूज्य गुरुदेव, **''अप्सरा सिद्धि दीक्षा''** प्राप्त करने के पश्चात् मेरी धन-प्राप्त करने की गति बढ़ गई है। कृपया मुझे शीघ्र ही **''दैनिक साधना विधि''** पुस्तक भेजने का कष्ट करें।

राकेश कुमार शर्मा, कौथल पुरी

● माह जुलाई ९४ में अचानक मेरी दृष्टि **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका पर पड़ी, तब से मैं लगातार पत्रिका खरीद रहा हूं, और मैंने पत्रिका से गुरु मंत्र प्राप्त कर प्रतिदिन ध्यान करना भी प्रारम्भ कर दिया है, जिससे मुझे असीम मानसिक शांति प्राप्त होने लगी है।

श्रीनिवास पाण्डेय, देवघर

— प्रिय बन्धु, गुरु और शिष्य के सम्बन्ध तो जन्मांतरीय होते हैं, अर्थात् ये कभी न टूटने वाले होते हैं। फिर भी लौकिक मर्यादावश हर बार गुरु दीक्षा प्राप्ति का विधान है अतः आप स्वयं आकर या अपना फोटो भेज कर गुरु दीक्षा प्राप्त करें, तथा जीवन में पूर्ण भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर अग्रसर हों।

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर जोधपुर टेलीफोन नं०-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आप के द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में २४ घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं० - 0291-32209
फेक्स नं० - 0291-32010

वर्ष 15 **अंक 6** **जून 95**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार** - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन : 0291 - 32209, फेक्स : 0291 - 32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

सम्पादकीय
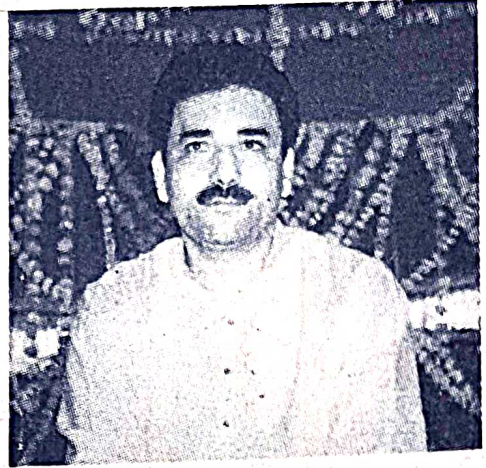
मुझे एक कथा स्मरण आ रही है. . .

एक बार अंधकार ने भगवान से शिकायत की, कि सूर्य मेरे पीछे पड़ा हुआ है। मैं जहां जाता हूं, वह मेरे पीछे-पीछे चला आता है, और मुझे वहां से भाग जाना पड़ता है. . . मैंने उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है, पर फिर भी वह मुझे परेशान करता है. . . . आप मुझे न्याय दीजिये!

भगवान ने सूर्य को बुला कर पूछा— तुम अंधकार को क्यों परेशान करते हो, क्यों उसके पीछे आकर उसे भगा देते हो?

सूर्य ने कहा— भगवन! मैंने तो उसे आज तक देखा ही नहीं है, मुलाकात भी नहीं हुई है, आप उसे बुलाओ, तो मैं उससे माफी मांग लूंगा।

— और आज तक अंधकार और सूर्य का मिलन हो ही नहीं सका।

. . . . कहने का तात्पर्य यह है, कि जहां साधना रूपी सूर्य का प्रकाश होगा, वहां जीवन के अभाव, पीड़ा, कष्ट रूपी अंधकार टिक ही नहीं सकता, क्योंकि साधनाओं के माध्यम से पूर्ण पौरुषता को प्राप्त किया जा सकता है, ध्यान की अतल गहराइयों में जाकर जीवन के आनन्द को समझा जा सकता है. . . और साधनाओं के माध्यम से जीवन की सभी मनोकामनाओं को पूर्णता प्रदान की जा सकती है . . . . इस माह मैं साधनाओं के अथाह भण्डार में से कुछ ऐसी साधनाएं आपको दे रहा हूं, जैसे — **पारद गणपति, पूर्ण पौरुष साधना, विशिष्ट लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग, बगलामुखी साधना, कल्कि प्रयोग।** इन प्रयोगों को मैंने कई बार, कई साधकों को सम्पन्न करवाया है, और उन्होंने अपने जीवन की सभी मनोकामनाओं को पूर्णरूप से प्राप्त किया है, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक हों। मेरी यही आकांक्षा है, कि आप भी इन साधनाओं को कर अपने जीवन की मनोकामनाओं को पूर्ण करें। इसके साथ ही साथ **स्थायी स्तम्भ** तो है ही, जिसका इन्तजार तो आपको रहता ही है— **राशिफल, राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट, ज्योतिष प्रश्नोत्तर।**

आशा है मेरा यह प्रयास आपके जीवन की मनोकामना को पूर्ण करेगा. . . . और इसका जवाब प्राप्त होने वाले सैकड़ों पत्रों के माध्यम से मुझे मिल ही जाता है . . . . शुभकामनाओं के साथ . . . .
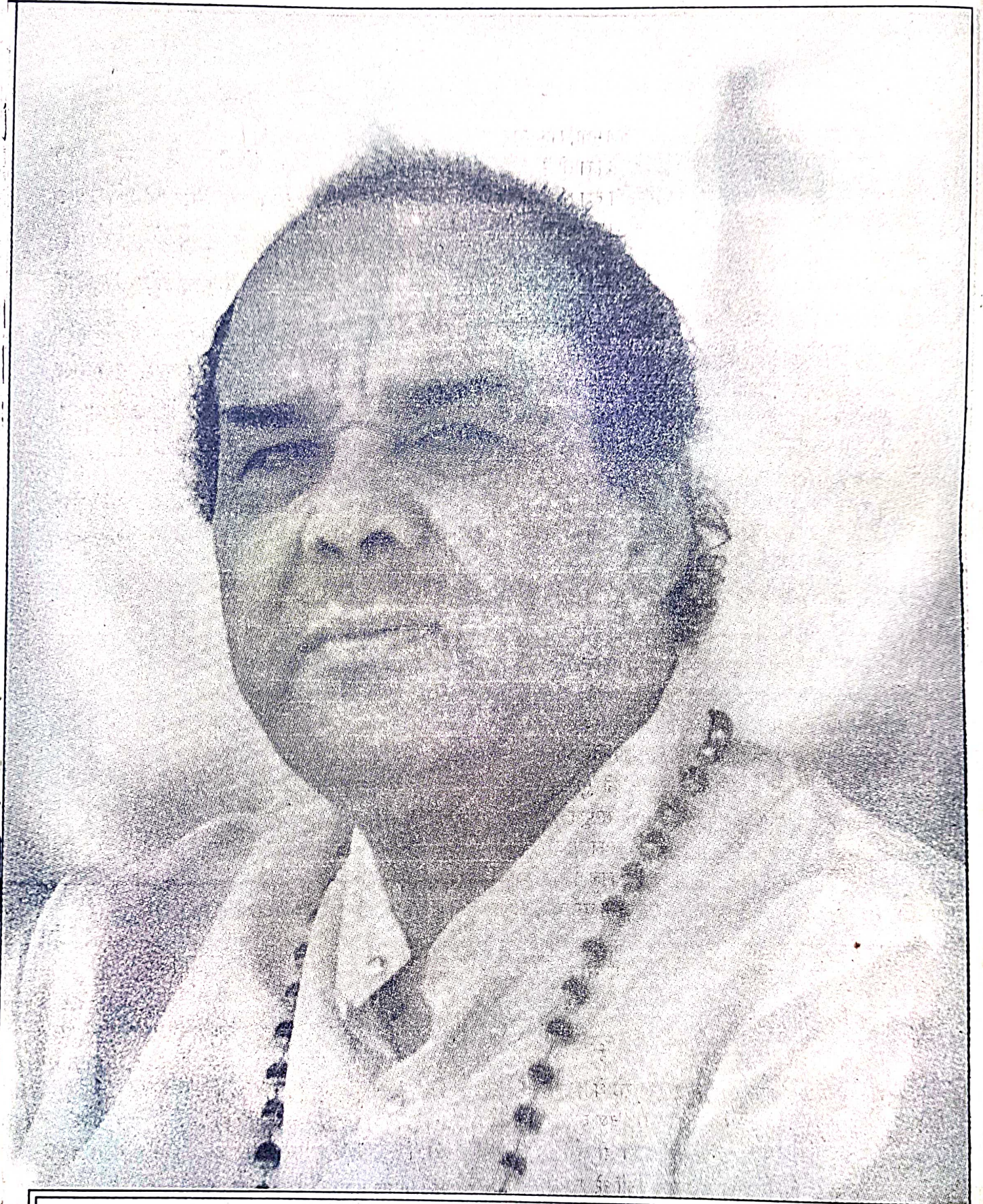
संस्कृति के पुरोधा डॉ० श्रीमाली

किसी भी देश के रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान और भाषा आदि 'सभ्यता' कहलाती है, तथा हृदय में व्याप्त गुणों को 'संस्कृति' कहते हैं। किसी देश की सभ्यता और संस्कृति में केवल मात्र यही भेद है, कि सभ्यता किसी भी देश से जुड़ी हो सकती है, किन्तु संस्कृति कभी एक जैसी नहीं होती, और इस संस्कृति को शुद्ध एवं परिमार्जित करने का एकमात्र माध्यम है— 'शिक्षा', जो देश जितना अधिक शिक्षित होगा, उसकी संस्कृति उतनी ही उन्नत व उदात्त होगी।

इस देश का ऋषिकाल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, क्योंकि ऋषि अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का संस्कृति, शिक्षा और समाज को श्रेष्ठ बनाने में उपयोग करते रहे हैं, तथा अपनी विद्वता, प्रेम और तपस्या के अमृत जल से इस मानव-समाज को सींचते रहे हैं, और इन्हीं के अथक प्रयासों और परिश्रम से आज भी भारतीय संस्कृति संसार की उन्नत संस्कृतियों की सिरमौर है।

हमारे पूर्वज ऋषियों ने अपनी तपस्या, अपने ज्ञान तथा अपने अथक प्रयासों से इस संस्कृति को चिरंजीवी बनाने के लिए अपना स्वत्व भी समाप्त कर दिया, और इसी का परिणाम है, कि इतने हजार वर्षों के बाद भी यह संस्कृति अपनी उदारता तथा महत्ता को कायम रखे हुए है।

वर्तमान में आज भी वह धारा अक्षुण्ण रूप से ऋषिकल्प परम पूज्य गुरुदेव द्वारा इस देश में वह रही है, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम और प्रयास से इस भारतीय संस्कृति को सुसंस्कृत करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए, अपने सम्पूर्ण जीवन को ही इस उद्देश्य हेतु समर्पित कर दिया है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें किसी के मुख से नहीं, अपितु उनके जीवन काल के कुछ घटना क्रमों से ही झलक जाता है, और इससे ही हमें उनके व्यक्तित्वारविन्द के इन्द्रधनुषी आयामों का सुखद बोध होता है।

उनके जीवन की हजारों घटनाओं में से कुछ घटनाएं आगे पंक्तियों में अंकित हैं—

★★ अग्नि कुण्ड के निकट ही कुछ पण्डित मंत्रोच्चारण कर विवाह कार्य को सम्पन्न कर रहे थे. . . विवाह था उस ११ वर्षीय बालक का, जो उम्र से तो ११ वर्ष का था, परन्तु ज्ञान से हजारों वर्षों की आयु प्राप्त योगी हो, ज्ञात हो रहा था. . . अचानक उसके मुख से उच्चरित मंत्रों के सस्वर गुंजरण ने पण्डितों को हतप्रभ-सा कर दिया, तीन दिन की एक लम्बी प्रक्रिया को पूर्ण कर उसने स्वतः ही अपने विवाह कार्य को सम्पन्न किया. . . और उस शास्त्रोक्त प्रक्रिया से वहां उपस्थित सभी पण्डित-पुरोहितों को अवगत करा आश्चर्यचकित कर दिया!

"क्या यह सम्भव है कि एक हाड़-मांस का अदना सा आदमी छोटी-सी उम्र में ही पूरे हिमालय को छान मारे . . . एक साधारण व्यक्तित्व योग, दर्शन, मीमांसा, शास्त्र, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्र, तंत्र, चिकित्सा, साधना, ध्यान एवं समाधि सभी क्षेत्रों में पारंगत हो, सर्वश्रेष्ठ हो, अद्वितीय हो।

. . . नहीं, ये लक्षण, यह पहिचान तो अति मानव की है, अद्वितीय युग-पुरुष की है।"

★★ . . .यह भगदड़ कैसी. . . और यह प्रकाश, यह शोरगुल. . . क्या हुआ?. . . पूछने पर. . . उस घर में आग लग गई है! और एक बच्चा उस आग की लपटों के बीच मौत से खेल रहा है. . . यह सुनते ही वे दौड़े और बिना अपनी जान की परवाह किये उस भीषण आग को चीरते हुए हवा के झोंके की तरह गये और जब लौटे तो शिशु उनके हाथ में था, किन्तु उनका शरीर जगह-जगह से जल गया था, परन्तु फिर भी उनके चेहरे पर कष्ट के भाव के स्थान पर मुस्कराहट तैर रही थी. . .

★★ 'नहीं'. . . अभी इसके लिए उचित क्षण नहीं आया है, ज्योतिषीय आकलन के अनुसार। उसके बार-बार पूछने पर यही एक उत्तर मिलता था. . . तो क्या कभी वह क्षण आयेगा भी, जब मेरी पुत्री का विवाह सम्पन्न हो सकेगा. . . यह सुनकर उनका वहां से निराश होकर चले जाना. . . लो वह क्षण भी आ गया, कि आज घर में चारों ओर खुशियां ही खुशियां बिखरी हैं, क्योंकि आज पुत्री का विवाह जो है, परन्तु उनका बार-बार मना करना, कि समय ठीक नहीं है, जैसे कुछ क्षणों के लिए मैं भूल गया था, मेरे अनुरोध और पुत्री के यह कहने पर, कि "बाबा क्या मेरी शादी में नहीं आओगे". . . वे आ गये, किन्तु उदास और दुःखी मन से समय को एकटक ताक रहे थे. . . क्योंकि

वे जान रहे थे, कि कुछ ही समय बाद वह विधवा हो जायेगी. . . और ऐसा ही हुआ. . . क्योंकि उन्होंने तो काल के भाल पर लिखी बातों को पहले से ही पढ़ लिया था, कि जिस युवक से इसका विवाह होना है, वह अल्पायु है।

★★ शिमला की वह ठिठुरती रात. . . आज तो सवेरे से ही हिमपात हो रहा है, और उनको हल्का-सा ज्वर है। जिस उद्देश्य के लिए वे जोधपुर से आये हैं, उसे पूरा करने के लिए उनका वहां उपस्थित होना जरूरी था. . . एक ऊन का मोटा-सा शॉल लपेटे वे उस कार्य हेतु निकल पड़े. . . किन्तु तीन किलोमीटर दूर जाने पर ही, अरे! यह क्या. . . एक अबला और दो बच्चे इस ठिठुरती सर्दी से संघर्ष कर रहे हैं. . . यह देख उनकी आंखें नम हो आईं, और दूसरे ही क्षण अपनी तबियत की चिंता किये बिना ही उन्हें अपनी शॉल ओढ़ाते हुए किञ्चित मुस्कान के साथ आगे बढ़ चले।

★★ कामाख्या का प्रांगण. . . औघड़, कपालिक, नाथ, तांत्रिकों की भीड़. . . हर कोई अपने-अपने क्षेत्र में सिद्धहस्त. . . कोई किसी से न्यून नहीं. . . अधिपति का चयन कैसे हो. . . इसी शोरगुल में किसी ने प्रस्ताव रखा— "श्री नारायण दत्त जी"।

— पर यह क्या?

— एक गृहस्थ और तांत्रिक सम्मेलन में!! सबकी भृकुटियां तन गईं, सबके अहं को चोट पहुंची. . . क्रोध से अभिप्रेरित हो. . . औघड़ों और तांत्रिकों ने इकट्ठे ही अपने उच्चतम मारण तंत्रों का उस गृहस्थ पर प्रयोग किया. . . पर आश्चर्य! घोर आश्चर्य!! उसका कुछ भी अहित न हुआ. . . और वह मुस्कराता हुआ मंच पर खड़ा है. . . लेकिन अगले ही क्षण क्रोध के कारण उसका चेहरा लाल भभूका हो उठा, और **"प्रत्युक्त"** प्रयोग से उन सभी तांत्रिकों को घुटनों के बल झुकने पर मजबूर कर दिया. . . चारों तरफ उसके नाम का जयकारा गूंज उठा, और उसे अधिपति के रूप में स्वीकार किया गया।

★★ हिमालय का ताज. . . "कौसानी"। चारों तरफ उन्मुक्त भाव से प्रकृति खिली हुई सी दिखाई दे रही थी. . . सूर्योदय का दृश्य इतना सुन्दर लग रहा था, कि उसको शब्दों में बांधना सम्भव नहीं. . . प्रातःकालीन बेला में सप्तरंगी किरणें चारों तरफ बिछी बर्फ पर बिखर रही थीं, और विविध रंगों में चारों ओर छिटक रही थीं. . . ऐसा लग रहा था, मानो आकर्षक रंगों का गलीचा पूरी जमीन पर बिछा हुआ हो. . . और दूसरी तरफ खड़ा था हिमालय से भी ऊंचा व्यक्तित्व, जो सैकड़ों-हजारों शिष्यों पर साधना के विविध रंगों को बिखेरता हुआ दिखाई दे रहा था. . . वास्तव में ही पुरुष और प्रकृति का ऐसा अनुपम सामञ्जस्य पहली बार ही देखने को मिला. . . जो कि आनन्द से आप्लावित कर देने वाला था।
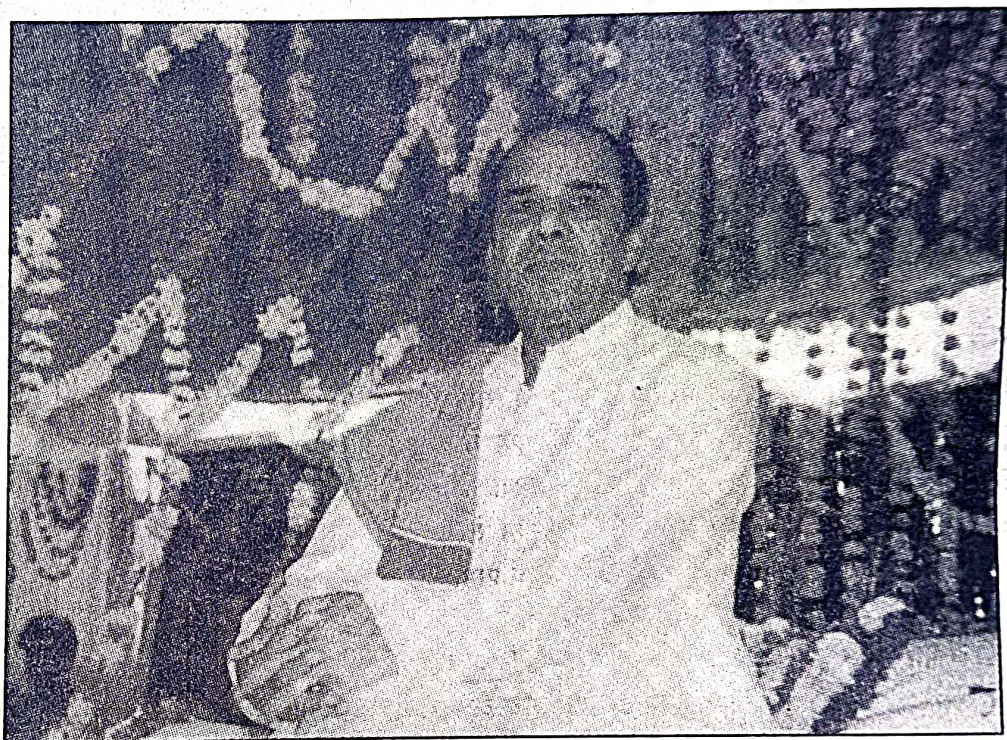
★★ गुरुदेव ने अपने सभी शिष्यों से कहा— "जाओ और दो-तीन किलोमीटर तक के क्षेत्र में जो भी बेकार पौधा मिले, उसे ले आओ". . . इस आज्ञा को मान, सभी कोई न कोई पौधा तोड़ कर ले आये, परन्तु एक व्यक्ति खाली हाथ चुपचाप सिर झुकाए वहीं खड़ा हो गया। गुरुदेव ने उसे अपने निकट बुलाकर पूछा— क्यों, क्या हुआ? तुम कोई पौधा क्यों नहीं लाये?

—क्षमा करें गुरुदेव! मुझे कोई भी पौधा बेकार नहीं लगा।

गुरुदेव के चेहरे पर संतोषजनक मुस्कान तैर गई, और आशीर्वाद देते हुए बोले— "तू ही आयुर्वेद के क्षेत्र में श्रेष्ठता प्राप्त करेगा, तू ही इस ज्ञान के लिए उचित पात्र है". . . और वही व्यक्ति बाद में विख्यात हुआ **'निखिलेश्वरानन्द'** के रूप में।

★★ यह छोटा-सा शरारती, नन्हा-सा बालक. . . कभी इस झूले पर, कभी उस झूले पर. . . कभी भूत बंगले में उन कंकाल-खोपड़ियों को देख घबराता-डरता, तो कभी जोर से खिलखिलाता, तालियां बजाता. . . छोटे-छोटे बच्चों के साथ किलकता हुआ वह अद्वितीय व्यक्तित्व! कौन हो सकता है? थोड़ा पास जाकर देखा. . . अरे! यह तो कोई और नहीं, श्रीमाली जी ही हैं!

यहां तो उनका स्वरूप बिलकुल अलग है. . . क्या ये वही हैं, जो उस समय अंतर्राष्ट्रीय सम्मोहन सभा में गंभीरतायुक्त, विद्वतापूर्वक सम्मोहन के गूढ़ रहस्यों को समझा रहे थे!!

★★ चारों तरफ से तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी. . . देखा तो, दूर से ही चार कारें तेजी से उस स्टेडियम की ओर आती हुई दिखाई दे रही थीं. . . तभी उसमें से एक सीधा-सादा दिखने वाला, सामान्य सा धोती-कुरता धारण किये हुए, लम्बा-चौड़ा, गौर वर्ण का व्यक्ति मंच की ओर प्रस्थान करता हुआ दिखाई दिया. . . हर कोई उत्सुक था उसकी बात को सुनने के लिए. . . **क्या सूर्य विज्ञान और योगबल से ऐसा सम्भव है?. . . ऐसा कैसे हो सकता है. . . तभी एक चमत्कार सा दिखा, सूर्य सिद्धान्त को समझाने के साथ ही साथ सूर्य की रश्मियों द्वारा लोहे को लाल गुलाब के पुष्प में परिवर्तित होते हुए सभी ने अपनी इन स्थूल आंखों से देखा. . . जिससे यह प्रमाणित हो गया, कि भारतीय विद्या, विज्ञान से अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित है, और वह आज भी जीवित एवं प्रामाणिक है।**

★★ सन् ८४, विश्वनाथ का प्रांगण. . . शिवरात्रि का दिन. . . साधकों की भीड़-भाड़. . . विश्वनाथ के श्रृंगार का समय, परन्तु पण्डों की हठधर्मिता एवं रूढ़िग्रस्त व्यवहार. . . तभी मानो एक लहर-सी उठी और उस छोटे-से प्रांगण में सैकड़ों साधक एक साथ जय गुरुदेव —जय गुरुदेव का जयघोष करते हुए, मानो विश्वनाथ का ही आह्वान कर रहे हों. . . एक ही क्षण में जैसे गुरुदेव के ही स्वरूप में पूर्ण विश्वनाथ रौद्र रूप में प्रतिबिम्बित हो रहे हों. . . और सायं के कुछ क्षण पहले ही अभिमान से भरे पण्डे, जिन्होंने भर्त्सना करने का दुस्साहस किया था . . . वे अगले ही क्षण इस स्वरूप के आगे नतमस्तक थे. . . और फिर दोबारा गूंज उठा शिव के उन सैकड़ों गणों का नाद. . . जय गुरुदेव! जय विश्वनाथ!!

★★ सन् ८६ की वह बसंत पंचमी, जब कुछ अबोध, नन्हें बालकों को 'सरस्वती साधना' सम्पन्न करवाई जा रही थी. . . एक ही कतार में बैठे वे नन्हें-नन्हें बालक एकटक गुरुदेव की क्रिया-प्रतिक्रिया को बहुत ही ध्यानपूर्वक देख रहे थे, और उनके आदेशानुसार ही वे उस साधना को सम्पन्न करने के लिए वहां उपस्थित थे।

गुरुदेव ने उन्हें एक-एक शलाका पकड़ाते हुए कहा— इस शलाका को ठीक जीभ के अग्र भाग की ओर रखना, और जिस क्षण मैं कहूं, उसी क्षण तुरन्त शलाका से "ऐं" बीज का अंकन जीभ पर कर देना, उस क्षण का दसवां हिस्सा भी नहीं चूकना है, ध्यान रहे, संकेत से पहले वह शलाका जीभ से स्पर्श न हो।

यह तो उन बालकों के लिए बड़े ही सौभाग्य की बात थी, कि उन्होंने उस दुर्लभ क्षण को पकड़ा. . . और सभी कुशाग्र और तेजस्वी बने, किन्तु उनमें भी एक अंतर था, जिसने उस क्षण विशेष को पकड़ लिया, वह ज्यादा कुशाग्र, मेधावी एवं तेजस्वी बना, और जिसने क्षण के हजारवें हिस्से में स्पर्श किया, वह भी इन गुणों से सम्पन्न तो हुआ, किन्तु थोड़ा कम। अतः काल का कितना अधिक प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता है, यह तो उनसे ही जाना जा सकता है. . . क्योंकि गुरुदेव तो काल-ज्ञान के पुरोधा हैं।

"डा० श्रीमाली"
इस युग के सर्वाधिक जाग्रत, चैतन्य और प्रबुद्ध व्यक्तित्व हैं।
उन्होंने समाज को एक नवीन दिशा दी है, उनके प्रत्येक अक्षर पाखण्ड पर प्रहार हैं, वे जो कुछ कहते हैं, वह इतिहास के भाल पर अंकित दस्तावेज है।

★★ आठ दिन के उस भव्य शिविर में, जहां सैकड़ों-हजारों साधक व शिष्य मौन रहकर गुरुदेव के मुख से उच्चरित शब्दों को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुन रहे थे. . . गुरुदेव पुनर्जन्म के रहस्य को स्पष्ट कर रहे थे, और यह ज्ञान दे रहे थे, कि गुरु द्वारा शक्तिपात से कैसे और किस प्रकार पूर्वजन्म को देखा तथा समझा जा सकता है. . . तभी वहां उपस्थित साधकों

का ध्यान यकायक एक स्त्री की ओर केन्द्रित हो गया. . . और सभी ने उसे यह कहते सुना, कि यह सब ढोंग है, पाखण्ड है. . . मैं वहुत देख चुकी हूं, ऐसे गुरुओं को. . . शक्तिपात जैसा कुछ भी नहीं होता, तभी गुरुदेव ने नेत्रों द्वारा शक्तिपात किया. . . और वह बेहोश होकर गिर पड़ी. . . सभी साधक भयग्रस्त थे, कि क्या होगा!! **गुरुदेव ने उसका आज्ञा चक्र जाग्रत किया और उसके मुंह के आगे माइक रख दिया गया. . .फिर तो एक बार आज्ञा देने पर उसने अपना सारा पूर्वजन्म, जन्म से मृत्यु तक कह सुनाया. . . उस जीवन में गुरुदेव के साथ उसने जो क्षण बिताये थे, वे उसे स्मरण हो आये, तब उसे यह एहसास हुआ, कि ये तो उसके कई-कई जन्मों से गुरु हैं. . . जब उसे वापिस उस सामान्य स्थिति में लाया गया, तो उसके आंसू रुक ही नहीं रहे थे, और वह उसी क्षण गुरुदेव के चरणों में श्रद्धा पूर्वक झुक गई!**

★★ विद्वत समाज एकत्र था. . . सभी अपने-आप में उच्चकोटि के ज्ञाता, मीमांसक, वेदज्ञ. . . आपस में काफी तर्क-वितर्क हो रहा था. . . एक पण्डित एक मंत्र का उच्चारण कर रहा था, तो दूसरा उसका खण्डन करने का प्रयास करता, तभी एक व्यक्ति उठा और उसने एक श्लोक सभी पण्डितों और वेदज्ञों के बीच उद्घोषित किया. . . पर यह तो सही नहीं है, एक श्रेष्ठतम पण्डित ने कहा . . . क्या तुमने इसके चौथे भाग का अध्ययन किया है? प्रत्युत्तर मिला— 'नहीं'. . . उसे तो ज्ञात ही नहीं था. . . बाद में सभी को उन लुप्त ग्रंथों, उपनिषदों के बारे में उस मेधावी पुरुष ने बताया, जिसका ज्ञान केवल ब्रह्माण्ड से ही प्राप्त किया जा सकता था. . . सभी उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे तथा अपने-आप को उनके समक्ष बौना-सा अनुभव करने लगे!

★★ बालकनी में कुर्सी पर वे बैठे डूबते सूरज को एकटक देख रहे थे, उस दिन वे बड़े ही उदास और चिंतित से दिखाई दे रहे थे. . . करीव दस-पन्द्रह मिनट तक मैं उन्हें इसी अवस्था में देखता रहा, आखिरकार साहस बटोर कर मैंने उनसे उनके क्षुब्ध हृदय की व्यथा को जानना चाहा, बहुत ही धीरे से पीड़ित स्वर में वे बोले— मैं चारों ओर तवाही के बादल मंडराते देख रहा हूं. . . और यह सामने सूर्यास्त की लालिमा नहीं, अपितु उन सैकड़ों भोले-भाले लोगों के रक्त का सूचक है, जो आने वाले समय में इस धरती पर वहेगा. . . यह कहकर उनकी आंखें नम हो आईं— मात्र चार दिन वाद उनकी यह वात सत्य हो गई, ईराक-ईरान युद्ध के रूप में!

★★ होली का वह आगमन. . . सभी के प्राण झंकृत थे, सभी के दिलों में उमंग, उल्लास, जोश भरा हुआ था, सभी भंवरे की भांति फूलों का रस पीकर आनन्द से आप्लावित थे. . . और यही महत्त्वपूर्ण दिवस था "सावर साधनाओं" का . . . और वे साधकों को प्रवचन द्वारा, उन मंत्रों की महत्ता को समझा रहे थे. . . उसके वाद दीक्षा, साधनाएं सम्पन्न हुईं. . . यह सारी क्रिया बड़े ही मर्यादापूर्ण वातावरण में सम्पादित हुई. . . पर इसके एक-आध घण्टे बाद ही समय आ गया उल्लास का, आनन्द का, त्यौहार का. . . जहां अभी कुछ समय पहले वे 'गुरु' रूप में उपस्थित थे, तो वहीं अब सखा रूप में उन शिष्यों पर गुलाल एवं रंगों की बौछार कर रहे थे, और स्वयं भी विभिन्न रंगों से सरावोर थे!

निश्चय ही वे सभी रंगों से पूर्ण व्यक्तित्व हैं, जहां कुछ ही क्षणों पहले उनका गाम्भीर्य युक्त व्यक्तित्व देखने को मिला, वहीं वे एक सामान्य से गृहस्थ के रूप में भी सभी साधकों के समक्ष उपस्थित थे।

यह तो मात्र उनके जीवन की एक छोटी-सी प्रस्तुति है, कि उनका व्यक्तित्व नये-नये रंगों में हमारे सामने आया। यदि एक क्षण के लिए वे गुरु के रूप में हमारे सामने आये, तो दूसरे ही क्षण प्रेममय, मधुरिम स्वरूप में भी उनका व्यक्तित्व उभर कर हमारे समक्ष आया, इसमें जहां एक ओर उनके क्षमाशील, दया, ममत्व, मानव प्रेम, बाल्य स्वरूप आदि गुणों का स्पष्ट चित्रण दिखाई पड़ता है, वहीं दूसरी ओर उनकी गम्भीरता, विद्वत्ता, पौरुषता जैसे गुणों का भी स्पष्ट उल्लेख देखा जा सकता है, साथ ही ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, आयुर्वेद, सूर्य विज्ञान, काल ज्ञान, अलौकिक व्यक्तित्व, भूत-भविष्य को देखने की क्षमता, शक्तिपात प्रक्रिया आदि बड़ी-बड़ी विद्याओं में भी वे निष्णात हैं, और किसी भी विषय पर धाराप्रवाह बोलने की क्षमता उनमें है. . . कोई भी क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है।

वे तो उस परम्परा की विभूति हैं, जिसे 'षोडश कला पूर्ण' कहा गया, पूर्णत्व कहा गया है. . . निश्चय ही आने वाली पीढ़ियां हम पर गर्व करेंगी. . . हमारे सौभाग्य को सराहेंगी, कि हमें ऐसी दिव्य विभूति के साथ अपने जीवन के कुछ क्षण बिताने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

श्रीमन्तात्भुवि भाष्करौ वसुधिवै ज्योतिर्महाभूषणौ,
दानाद् ध्यान क्षमा परा च विविधा ज्ञानं शतै वाद्रुपि।
विख्यातं भुवितैर्वदा भुवि वदै ज्ञानं च पौर्वात्यकं;
विद्वद् नारायणः शतैच सुधरं श्रेष्ठं नरं कुण्डलात्।।
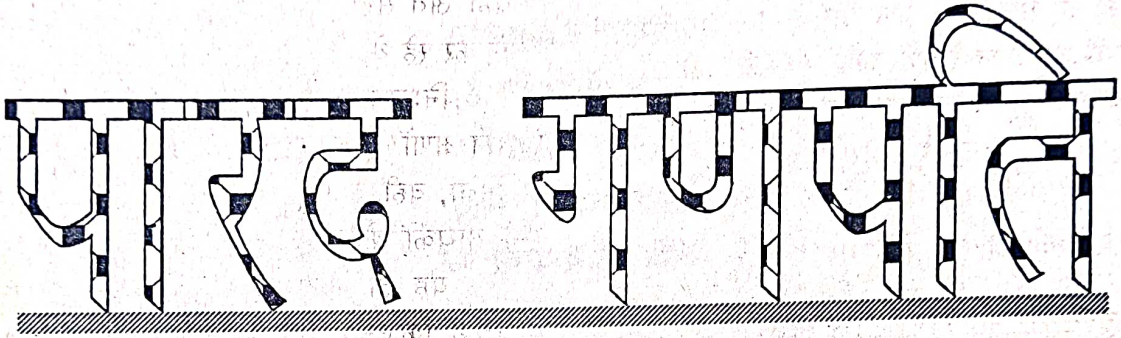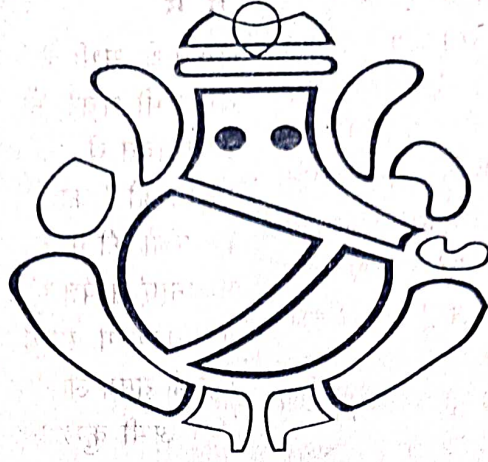
पारद का महत्त्व सर्वविदित है, इसके महत्त्व का आंकलन **"रस रत्न समुच्चय"** नामक ग्रंथ की इस पंक्ति से किया जा सकता है—

"सिद्धरसे करिष्ये निर्द्रारिद्र्यमगदं जगत्"

अर्थात् "यदि पारा सिद्ध हो जाय, तो यह संसार रोग और दरिद्रता से मुक्त हो जायेगा।"

इसी रस रत्न समुच्चय में आगे कहा गया है— "मानव-शरीर को जरा-रोग रहित रखने में कोई भी वनस्पति या धातु समर्थ नहीं है, क्योंकि सभी वस्तुएं पानी से भीगती हैं, आग में जलती हैं और ताप से सूखती हैं, किन्तु पारद ही एकमात्र ऐसी वस्तु है, जो इन सव से अप्रभावित रहता है। पारद को कुछ विशेष प्रक्रिया से बांध कर स्थिरीकरण प्रदान किया जाता है, तो वह अमृत हो जाता है, और इस प्रकार के बद्ध पारद के द्वारा असम्भव को भी सम्भव बनाने की प्रक्रिया सम्पादित हो सकती है।"

– और इसी बद्ध पारे के द्वारा जव भगवान् गणपति का विग्रह बनाया जाता है, तो उन पारद गणपति की आराधना करने वाले साधक को विद्या, बुद्धि और समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त होने लगती हैं, क्योंकि ऋद्धि-सिद्धि के पति होने के साथ ही साथ मंगलमूर्ति भगवान् श्री गणेश वेदविहित समस्त कर्मों में प्रथम पूज्य नित्य देवता हैं।

सनातन हिन्दू धर्म का कोई भी मांगलिक कार्य बिना

卐

गणानां बुद्धीशं, सुरगणमुनीनां हितकरं,
मनीषा सम्मानं, धनबलसुविद्यासुखकरम्।
विधत्ते कल्याणं, हरतिजनविघ्नं विजयदं;
गणेशं तं वन्दे, गमयति सदा यो निजपदम्॥

"देवगणों के अधिपति, बुद्धि के अधिष्ठातृ देव, देवताओं और मुनियों के हितचिन्तक, अपने बुद्धि-वैभव से सर्वत्र सम्मानित, धन, बल एवं श्रेष्ठ विद्याओं के दाता, मंगलमूर्ति, सभी विघ्नों को दूर करने वाले, सर्वत्र विजयदाता, अपने भक्त को ब्रह्मत्व प्रदान करने वाले भगवान् गणपति को मैं नमस्कार करता हूं।"

卐

भगवान् गणपति की पूजा के प्रारम्भ ही नहीं होता। इतना ही नहीं, प्रत्येक देवी-देवता की आराधना-साधना करने से पूर्व भगवान् गणपति से ही प्रार्थना की जाती है, कि वे मेरी साधना पूर्ण होने में सहायक बनें। इतना महत्त्व किसी अन्य देवी-देवता को नहीं प्राप्त है, कितना असाधारण महत्त्व है भगवान् गणपति का हिन्दू धर्म के उपास्य देवों में।

गणेश का शाब्दिक अर्थ है— गणों का स्वामी। मानव-शरीर पांच कर्मेन्द्रियों, पांच ज्ञानेन्द्रियों और चार अन्तःकरण द्वारा संचालित होता है, और इनके संचालित होने के पीछे जो शक्ति है, वह विभिन्न चौदह देवताओं की शक्ति है, जिनके मूल प्रेरणा स्रोत हैं— भगवान् गणपति।

''गाणपत्यर्थवशीर्ष'' नामक ग्रंथ के अनुसार— ''श्री गणेश का प्रधान देव के रूप में पूजित होने का मुख्य कारण है, शब्द ब्रह्म 'ओऽम' का प्रतीक होना।'' जिस प्रकार किसी भी श्लोक या मंत्र के उच्चारण के पूर्व 'ॐ' का गुंजरण करना अनिवार्य है, उसी प्रकार भगवान् गणपति का प्रथमतः पूजन होना अनिवार्य है।

भगवान् गणपति का स्वरूप अत्यन्त मनोहर एवं मंगलप्रद है। वे एकदन्त और चतुर्भुज हैं। वे अपने चारों हाथों में पाश, वीणा, धान्य मञ्जरी और वर मुद्रा धारण किये हुए हैं। वे रक्त वर्ण हैं, लम्बोदर हैं, शूर्पकर्ण तथा रक्त वस्त्रधारी हैं। रक्त चन्दन के द्वारा उनके समस्त अंग अनुलेपित हैं। उनकी पूजा रक्त पुष्पों द्वारा होती है। वे अपने साधकों पर कृपा करने के लिए साकार रूप में उपस्थित होते हैं। भक्तों की कामना पूर्ण करने के लिए ज्योतिर्मय जगत् के कारण तथा प्रकृति और पुरुष से परे होकर वे आविर्भूत हुए हैं।

भगवान् गणपति अपने साधक के लिए कल्पवृक्ष के समान फलप्रदायक हैं, उनकी साधना करने वाले साधक को समस्त भौतिक सुख-सम्पत्ति, समस्त नौ निधियां प्राप्त होती हैं। गणपति विद्या के आगार हैं, अतः वे अपने साधक को कुशाग्र बुद्धि प्रदान करते हैं, और इसके साथ ही साथ ओंकारवत् होने के कारण अपने साधक को आध्यात्मिक रूप से भी परिपूर्ण करते हैं।

भगवान् गणपति के बारह नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं, इन नामों का पाठ तथा श्रवण करने से विद्यारम्भ, विवाह, गृह प्रवेश, नगर प्रवेश अथवा गृह-नगर से निर्गम, किसी भी संकट का निवारण होता ही है। इनके बारह नाम अनन्त नामों में से अति प्रमुख हैं— सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र तथा गजानन, इनके स्मरण मात्र से व्यक्ति के समस्त दुःखों का नाश होता है।

भगवान् गणपति, जो मात्र अपने नाम का उच्चारण करने वाले साधक पर कृपा कर, उसके समस्त विघ्नों का नाश कर, उसके जीवन में सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं, ऐसे श्री गणपति की आराधना-साधना को यदि विशिष्ट क्रम से प्राण-प्रतिष्ठित **''पारद गणपति''** के श्री विग्रह पर सम्पन्न किया जाय, तो उससे प्राप्त होने वाले लाभ की तो गणना करना ही सम्भव नहीं है।

मोदक प्रिय भगवान् श्री गणेश के कर्म अद्भुत और अलौकिक होते हैं, इनकी साधना से, नाम-स्मरण से, ध्यान, जप और आराधना से मेधा शक्ति का परिष्कार होता है, समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है, और समस्त विघ्नों एवं दुःखों का विनाश होकर परम कल्याण होता है।

साधक के मन की जो भी इच्छा हो, इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर निश्चित रूप से पूर्ण होती ही है। जब आपके व्यापार में घाटा होने लगे, जब लक्ष्मी आपसे रूठने लगे, आपका व्यापार और कारोबार बन्द होने के कगार पर आ गया हो, शरीर रोगों से त्रस्त हो गया हो, निरन्तर परीक्षा में

卐

पारद रोगों को समाप्त करने में दक्ष है, दरिद्रता को समाप्त करने में सक्षम है, संसार के सभी व्यक्तियों के लिए अप्रिय वृद्धावस्था को समूल नष्ट कर नव-यौवन प्रदायक है, इसके साथ ही सम्पूर्ण अष्ट सिद्धियों को देने वाला है। भगवान शंकर के शरीर से उत्पन्न होने वाले रसश्रेष्ट पारद की तुलना किसी भी वस्तु से नहीं की जा सकती है।

卐

असफलता प्राप्त हो रही हो, पढ़ाई में मन नहीं लगता हो, अर्थात् जीवन के किसी भी क्षेत्र में मिल रही असफलता की समाप्ति के लिए यह प्रयोग रामबाण है। भगवान् गणेश के इन्हीं लाभों के कारण तो उन्हें विघ्नहर्ता कहा जाता है।

प्रथम पूज्य भगवान् गणपति की साधना करना अत्यधिक सरल है, इनकी साधना कोई भी व्यक्ति, नर-नारी, बालक-बालिका हो, सम्पन्न कर सकता है। इनकी साधना में कोई विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती है, आवश्यकता है, तो केवल शुद्ध भाव की, श्रद्धा की।

साधना विधान–

सामग्री - **पारद गणपति, श्रीफल, मूंगे की माला।**

दिवस - **गणेश चतुर्थी (२६-८-६५) या सप्ताह के किसी भी मंगलवार को।**

समय - **प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर नित्य ही भगवान् पारद गणपति के श्री विग्रह का पूजन करना चाहिए, किन्तु जब आप साधना के रूप में करें, तो प्रातःकाल ४ बजे से ८ बजे के मध्य में इसे सम्पन्न करें।**

दिशा - **पूर्व या उत्तर**

विधि -

प्रातःकाल दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर अपने साधना स्थल को स्वच्छ करें। स्वयं पीला वस्त्र पहिनें तथा पीले आसन पर बैठ कर ही इस साधना को सम्पन्न करें। पवित्रीकरण और न्यासादि **''दैनिक साधना विधि''** के अनुसार सम्पन्न करें। अपने सामने किसी ताम्र पात्र में हल्दी से स्वस्तिक अंकित कर, उस पर **'पारद गणपति'** की स्थापना कर कुंकुम, अक्षत व पीले पुष्प से संक्षिप्त पूजन सम्पन्न करें।

卐

'रसेन्द्र चूड़ामणि' के अनुसार रस-रस ऐसा कहने पर मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है और शुद्ध पारद का दर्शन कर कल्याणपद धर्म को प्राप्त करता है।

शास्त्रीय विधि से बद्ध पारद के द्वारा निर्मित भगवान गणपति की पूजा-अर्चना करने वाले साधक के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता।

卐

अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लें तथा अपनी इच्छा, जिसकी पूर्ति के लिए आप यह साधना सम्पन्न कर रहे हैं, उसका उच्चारण कर पूर्ण होने की प्रार्थना करें, और जल को जमीन पर छोड़ दें तथा हाथ जोड़ कर भगवान् गणपति का निम्न प्रकार से ध्यान करें –

वीणां कल्पलतामरिं च वरदं दक्षे विधत्ते करै,
र्वामे तामरसं च रत्नकलशं सन्मंजरी चाभयम्।
शुण्डादण्डलसन्मृगेन्द्रवदनः शंखेन्दुगौरः शुभो;
दीव्यद्रत्ननिभांशुको गणपतिः पायादपायात् स नः।।

अर्थात् ''भगवान् गणपति, जिन्होंने अपने दाहिने हाथ में वीणा, कल्पलता, पाश तथा वरद धारण कर रखा है, और बाएं हाथ में रत्न कलश, अंकुश, कमल, धान्य मञ्जरी तथा अभय धारण किए हुए हैं। उनका सिंह सदृश्य मुख शुण्ड से सुशोभित है, शंख और चन्द्रमा के समान उनका वर्ण गौर है, उनके वस्त्र विभिन्न दिव्य रत्नों से सुसज्जित हैं, ऐसे शुभ स्वरूप वाले भगवान् श्री गणेश मेरी समस्त बाधाओं का विनाश कर समस्त विपदाओं से मेरी रक्षा करें।''

इसके बाद **'श्रीफल'** पर कुंकुम लगाकर उसे भगवान् गणपति के सम्मुख अर्पित करें, और **'मूंगे की माला'** से निम्न मंत्र का तीन माला मंत्र-जप सम्पन्न करें।

मंत्र

ॐ गं गणपतये गं नमः

पारद गणपति को पूजा स्थान में रखें। मूंगे की माला और श्रीफल को नदी, तालाब या कुंए में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार यह एक दिवसीय साधना सम्पन्न करने वाले साधक पर भगवान् गणपति प्रसन्न होकर उसकी मनोवांछित कामना को अवश्य ही पूर्ण करते हैं। ●

> सदियों से चली आ रही परम्परा . . . बहिन द्वारा भाई के हाथ में बांधा जाने वाला एक डोरा . . . ''रक्षा सूत्र'', जो प्रतीक है सम्पूर्ण जीवन भाई अपने बहिन की रक्षा करेगा ही।
>
> इतना ही नहीं, अपनी रक्षा की कामना लिए कोई भी अपने हितैषी को यह रक्षा सूत्र बांध सकता है . . . लेकिन क्या यह सम्भव है, कि हम आज भी दूसरों से अपनी रक्षा की अपेक्षा लिए बैठे रहें, क्यों न हम अपनी रक्षा स्वयं करें . . . एक सम्पूर्ण साधना से, जो श्रावण मास की पूर्णिमा को सम्पन्न की जा सकती है।

पूर्ण रक्षा का रहस्य छुपा है रक्षाबन्धन में

रक्षाबन्धन एक पवित्र त्यौहार है, भाई-बहिन के बीच का एक पवित्र वन्धन है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है, कि इस दिन वहिन जव भाई के सीधे हाथ की कलाई पर सूत्र बांधती है, तो उस दिवस विशेष पर वह सूत्र भाई की कलाई में स्थित चेतना नाड़ी को स्पन्दित करता है, जिसके स्पर्श के प्रभाव से भाई के मन में वहिन के प्रति मधुर भावना स्थायी होती है, उनके प्रेम में और अधिक प्रगाढ़ता आती है, और साथ ही चेतना नाड़ी के स्पन्दित होने पर उस भाई के अंतर्मन में आत्मविश्वास, दृढ़ता, सजगता, वल,

प्रखरता और तेजस्विता जैसे गुणों का स्वतः ही समावेश होने लगता है, जिसके कारण वह अपने-आप को अधिक बलवान महसूस करने लगता है, और यही कारण है, कि वह उस दिन बहिन को यह वचन दे डालता है, कि वह उसकी जीवन पर्यन्त रक्षा करेगा। यह बात बहुत कम लोग जानते हैं, किन्तु यही सत्य है, तभी तो इस दिन को **''रक्षाबन्धन''** के नाम से जाना जाता है।

मुगल काल में जब रानी पद्मावती ने अपनी तथा अपने राज्य की सुरक्षा-भावना को ध्यान में रखकर मुगल सम्राट अकबर के पास भारतीय परम्परा के अनुसार रक्षा-सूत्र भेजा और सम्राट को 'भाई' शब्द से सम्बोधित किया, उसके बाद से ही रक्षाबन्धन का पर्व भाई-बहिन के त्यौहार के रूप में स्थापित हुआ।

जबकि ऐसा नहीं है, यह तो एक पवित्र बन्धन है, रक्षा का बन्धन है, जो भाई के अलावा अन्य किसी को भी चाहे वह पिता हो, पुत्र हो या प्रेमी हो अपनी सुरक्षा हेतु बांधा जा सकता है, जो कि उसकी जीवन भर रक्षा कर सके, और न ही यह जरूरी है, कि यह सूत्र एक बहिन या स्त्री ही बांधे, ऐसा कहीं नहीं लिखा है, यह वन्धन तो एक पुरुष भी अन्य किसी पुरुष को अपनी रक्षा हेतु बांध सकता है।

यह मानव-जीवन हर क्षण चिंताओं और परेशानियों के बवंडर से घिरा रहता है, जिसके लिए हर किसी को जीवन में सुख-शांति हेतु किसी ऐसी सुरक्षा की आवश्यकता महसूस होती है, जो इस ववंडर से उसको निकाल सके।

इस मानव-जीवन में व्यक्ति को तीन प्रकार के परिताप ही प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होते हैं, जो उसके जीवन को कष्टप्रद वना देते हैं— १. दैविक २. दैहिक ३. भौतिक।

१. दैविक

दैविक का अर्थ है, देवताओं से सम्बन्धी कष्ट, जैसे— भूकम्प का आ जाना, अकाल पड़ जाना, अकस्मात् आग लग जाना तथा इसके अतिरिक्त भूत-प्रेत का प्रभाव व्याप्त होना या पितृ दोष आदि लगा होना, इस प्रकार के दुःख व्यक्ति को भोगने पड़ जाते हैं, और ऐसी महामारी या छुआछूत की बीमारी, जिससे गांव के गांव समाप्त हो जायें, यह सब भी 'दैवी प्रकोप' ही कहा जाता है।

२. दैहिक

दैहिक का अर्थ है— देह से सम्बन्धित, अर्थात् देहगत्। किसी भी प्रकार के रोग से होने वाले शारीरिक दुःख को 'दैहिक' कहा जाता है, जैसे— पेट दर्द, सिर दर्द इत्यादि।

३. भौतिक

भौतिक कष्ट अर्थात् ऐसे कष्ट, जो भावनात्मक रूप से मानसिक रूप से व्यक्ति को कष्ट देते हैं, जिनका प्रभाव उसके निजी जीवन में, उसके पारिवारिक जीवन में पड़ता ही है, जैसे— मुकदमेबाजी, बेरोजगारी, धन का अभाव, रोजमर्रा की छोटी-बड़ी समस्याएं, लड़ाई-झगड़े इत्यादि, जिनसे व्यक्ति पीड़ित व दुःखी हो जाता है।

इस प्रकार व्यक्ति का पूरा जीवन ही इन तीन प्रकार के परितापों से ग्रसित रहता है, जिसके कारण उसका जीवन कष्टप्रद एवं निराशाजनक बन जाता है, और वह अपने-आप को हर पल असुरक्षित सा महसूस करने लग जाता है, फिर उसके जहन में यही प्रश्न उठते हैं, कि—

— क्या इन दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है?

— क्या अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बनाया जा सकता है?

— क्या अपने जीवन में जानोमाल की सुरक्षा प्राप्त की जा सकती है?

. . .और इसके लिए व्यक्ति को आवश्यकता पड़ती है एक ऐसे ढाल की, जो उसके जीवन को सुखमय बना सके और उसके दुःखों का नाश कर सके।

यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें, विघटनकारी तत्त्व आपके जीवन की लय, क्रमवद्धता, शांति, सौहार्द भंग करने का प्रयास करते ही रहते हैं। शत्रुओं के रहते व्यक्ति हमेशा चिन्तित बना रहता है, वह हर क्षण इसी चिन्ता में खोया रहता है, कि शत्रुओं से कैसे मुकाबला किया जाय. . . और वह अपना सर्वस्व गंवा देता है। शत्रुओं के रहते सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना उसके लिए असम्भव सा हो जाता है, कई बार यदि शत्रु प्रबल होता है, तो उससे मुकावला करना या बदला लेना कठिन हो जाता है, ऐसी स्थिति में ही व्यक्ति को साधना का सहारा लेना पड़ता है, **क्योंकि मंत्र-शक्ति के वल पर ही वह सुरक्षा चक्र प्राप्त किया जा सकता है, जिसके माध्यम से जीवन को सुरक्षित एवं सुखमय बनाया जा सके।**

'आरक्ष साधना' भी एक ऐसी ही साधना है, जो प्रभावपूर्ण एवं पूर्ण फलदायक है। इस साधना में एक विशेष प्रकार के यंत्र का उपयोग किया जाता है, जो कि अपने-आप में ही अद्भुत एवं निश्चित सफलतादायक यंत्र है, जिसे प्राप्त करने पर व्यक्ति अपने जीवन के समस्त पापों-संतापों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

कलियुग में तो इस यंत्र का प्रभाव पग-पग पर स्पष्टतः देखा जा सकता है, शत्रुओं से, चाहे वे शत्रु दैविक हों, दैहिक हों अथवा भौतिक हों, पूर्णतया बचा जा सकता है, क्योंकि शत्रुओं पर हावी होने, बलवान शत्रुओं का मान-मर्दन करने, भूत-प्रेत आदि को दूर करने एवं समस्त प्रकार की उन्नति करने में यह यंत्र श्रेष्ठतम माना गया है।

भारत के लगभग सभी तांत्रिकों एवं मांत्रिकों ने एक स्वर में यह स्वीकार

किया है, कि इस यंत्र के समान अन्य कोई यंत्र या विधान ऐसा नहीं है, जो कि इतने वेग से और तुरन्त प्रभावशाली हो सके, अंतः विशेष अनुष्ठान या मंत्र-जप के द्वारा, जो **''आरक्ष यंत्र''** सिद्ध किया जाता है, वह तुरंत कार्य सिद्धि में सहायता प्रदान करता ही है।

''आरक्ष साधना'' इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण है, और रक्षाबन्धन के दिन इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति को इसका आश्चर्यजनक परिणाम मिलता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार– **''रक्षाबन्धन साधनात्मक दृष्टि से एक विशेष पर्व है, इस दिन का अपना एक विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि वर्ष में केवल 'अक्षय तृतीया' और 'रक्षाबन्धन' ये दो ही दिन ऐसे होते हैं, जब समस्त ग्रह एक विशेष बिन्दु पर आकर एकत्र होते हैं, और उनका प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता ही है।''** इसीलिए इस दिन इस यंत्र विशेष को सामने रख कर मंत्र-जप करने से साधक को साधना में सिद्धि व सफलता तो प्राप्त होती ही है, साथ ही समय विशेष के महत्त्व और उस यंत्र के प्रभाव के कारण साधक के भीतर एक विशेष तत्त्व का समावेश हो जाता है, जो कि एक ढाल बनकर उसके जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है।

इस दिन की योगीजन, संन्यासी व ऋषि-मुनि बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं, जिससे कि वे इस दिन का लाभ उठाकर शीघ्र सिद्धि व सफलता प्राप्त कर सकें, क्योंकि रक्षाबन्धन में ही पूर्ण रक्षा का रहस्य छिपा है, और इस दिन साधना करने पर अपने जीवन में समस्त प्रकार के रोग-शोक, दुःख-दैन्य आदि से मुक्ति प्राप्त कर जीवन में उन्नति प्राप्त करते हुए, उसे पूर्ण सुरक्षित बनाया जा सकता है।

सामग्री – **आरक्ष यंत्र, सुरक्षा माला, तीन अभय गुटिका।**

दिवस – **रक्षाबन्धन(१० अगस्त १९९५) या किसी भी गुरुवार को।**

समय – **प्रातः पांच से आठ बजे या रात्रि ९.४५ से १२.०० बजे के लगभग।**

शत्रु . . . चाहे वे दैविक हों, दैहिक हों या भौतिक, पूर्णतया बचा जा सकता है, क्योंकि शत्रुओं पर हावी होने और उनका मान-मर्दन करने हेतु कलियुग में इससे श्रेष्ठ उपाय और कोई नहीं . . . !

विधि –

साधक सर्वप्रथम स्नानादि एवं नित्यकर्म से निवृत्त होकर, शांत एवं प्रसन्न मन से इस विशेष दिन के महत्त्व को समझकर व साधना से होने वाले लाभ के प्रति आशान्वित होकर अपने पूजागृह में काले रंग के अतिरिक्त अन्य किसी भी रंग के आसन पर बैठ जायें, तथा दक्षिण को छोड़कर किसी भी दिशा में अपनी इच्छानुसार बैठ जायें।

फिर अपने सामने गुरु चित्र स्थापित कर, उसके सामने किसी प्लेट पर कुंकुम से त्रिकोण बनाकर उस पर **'तीनों अभय गुटिकाओं'** को और ये तीनों गुटिकाएं तीनों परितापों की परिचायक हैं, जो हमें सतत सुरक्षा प्रदान करती हैं, तथा पुनः हमारे जीवन में इन बाधाओं का प्रवेश नहीं होने देतीं, एक-एक कोण पर रख दें, तथा मध्य में **'आरक्ष यंत्र'** को स्थापित कर दें, इसके बाद चित्र, यंत्र एवं गुटिकाओं पर कुंकुम, अक्षत चढ़ा दें, और तीनों कोणों में तीन तेल के दीपक प्रज्वलित करें, जिसका आशय है, तीनों प्रकार के ताप से परिमुक्त होकर साधक के जीवन में सौभाग्य रूपी प्रकाश का विस्तारित होना। इसके पश्चात् साधक अपने इष्ट या गुरु का मन ही मन ध्यान करें तथा ५ माला गुरु मंत्र-जप करें, आरक्ष यंत्र और तीनों अभय गुटिकाओं का धूप, दीप, पुष्प आदि से यथाविधि पूजन करके शुद्ध घी का हलवा बनाकर भोग लगायें। इसके बाद साधक **'सुरक्षा माला'** से निम्न मंत्र का ११ माला जप करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं आरक्ष आरक्ष ह्रीं फट्

मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् वह जल अपने दाएं-बाएं थोड़ा-थोड़ा गिरा दें, **और आरक्ष यंत्र को लाल धागे में पिरोकर तथा सुरक्षा माला को गले में धारण कर लें,** परन्तु तीनों गुटिकाओं को घर से बाहर किसी एकान्त जंगल या सुनसान जगह पर गाड़ आयें, लौटते समय पीछे मुड़कर न देखें। हलवे के भोग को स्वयं ग्रहण करें तथा परिवार में वितरित कर दें। माला तथा यंत्र को पन्द्रह दिन तक धारण करने के पश्चात् उन्हें नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार यह साधना अपने-आप में अद्वितीय एवं प्रभावकारी है, जो शीघ्र ही लाभ देकर साधक को समस्त पापों-तापों से मुक्त कर सुख, सौभाग्य और अभय प्रदान करती है। प्रत्येक साधक को समय विशेष का महत्त्व समझते हुए, उसका लाभ उठाकर इस एक दिवसीय साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना में स्थापित यंत्र प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र-सिद्ध होना चाहिए। ध्यान रखें, कि साधना काल में वे तीनों दीपक बराबर जलते रहें।

लोकसभा चुनावों से पहले और बाद में एक सम्पूर्ण अध्ययन

इस समय देश में एक अजीब सा राजनैतिक वातावरण चल रहा है, एक ऐसा ऊहापोह चल रहा है, कि कुछ भी स्पष्ट नहीं है। ज्यों-ज्यों लोकसभा के चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं, त्यों-त्यों एक अजीब सी बेचैनी, एक अजीब सी ऊहापोह, एक अजीब सी उत्सुकता पूरे राजनैतिक वातावरण में छाती जा रही है। लोग यह जानने को उत्सुक हैं, कि लोकसभा चुनाव कब होंगे? लोग यह जानने को उत्सुक हैं, कि लोकसभा चुनाव होंगे भी या नहीं? लोग यह जानने को उत्सुक हैं, कि लोकसभा चुनाव होंगे, तो बिना खून-खराबे के शांति से सम्पन्न हो जायेंगे, और चौथा प्रश्न जनमानस को मथ रहा है, कि लोकसभा चुनाव में क्या पुनः कांग्रेस सत्ता में आ सकेगी या कोई दूसरी पार्टी सत्ता में आयेगी, या कोई मिली-जुली पार्टी सत्ता में आयेगी, क्या होगा कुछ भी स्थिति स्पष्ट नहीं है।

श्री पी.वी. नरसिम्हा राव

जहां तक कांग्रेस का प्रश्न है, इस समय कांग्रेस एक अजीब सी स्थिति में है। यह देश की सबसे बड़ी पार्टी है, और इसका कुशल नेतृत्व प्रधानमंत्री **श्री नरसिम्हा राव** जैसे तपे-तपाये नेता के हाथों में है, मगर इसके बावजूद भी कांग्रेस चार भागों में बंटी हुई स्पष्ट दिखाई दे रही है।

एक वर्ग वह है, जो पूरी तरह से श्री राव के प्रति आस्था रखता है और उनके साथ है। दूसरा वर्ग वह है, जो ऊपर से तो राव के प्रति आस्था स्पष्ट कर रहा है, मगर अन्दर से उस समय का इन्तजार कर रहा है, कि अगर पाला बदलने की जरूरत पड़े, तो वे पाला बदल दें और किसी दूसरी ओर चले जायें। कांग्रेस का तीसरा वर्ग वह है, जो असन्तुष्ट है, जो खुलकर प्रधानमंत्री के खिलाफ खड़ा हो गया है, और उनको चुनौती देने के लिए हर समय तैयार है। और चौथा कांग्रेस का वह वर्ग है, जो इस उम्मीद में बैठा हुआ है, कि अगली बार मंत्री पद का चांस मिल जाय, इसलिये चुप्पी साधे हुए समय का इन्तजार कर रहा है, और यदि उन्हें मंत्री पद महीने-डेढ़ महीने में नहीं मिलता है, तो वह किसी भी तरफ जा सकता है।

चारों अपनी-अपनी गोटियां बिठाने में समर्थ हैं, चारों अपनी-अपनी बाजियां खेल रहे हैं। मगर चारों ही अपने-अपने मानस में अस्पष्ट हैं, कि क्या होगा और कैसे होगा? इस समय कोई ऐसा नेता नहीं है, जो जनमानस से वोट बटोर सके। पिछले जो चुनाव हुए हैं, वे वर्तमान शासक कांग्रेस के अनुकूल नहीं हैं, इसलिये उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा है।

महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना की मिली-जुली सरकार बनी है, और दूसरे राज्य में भी कांग्रेस का आधार खिसका है। **शरद पवार, अर्जुन सिंह, नारायण दत्त तिवारी** जैसे नेता इस अवसर का लाभ उठाने की तैयारी में हैं, किन्तु इन में भी आपस में एकता नहीं है, सभी एक-दूसरे के पंख कतरने के लिये तैयार हैं, सभी एक-दूसरे से आगे बढ़ने की फिराक में हैं, सभी अवसर का इन्तजार करते दिखाई दे रहे हैं।

जहां तक लोकसभा सदस्य (एम. पी.) का सवाल है, वे बिलकुल खामोश बैठे हुए हैं, और खामोश बैठे रहना उनकी मजबूरी है। मजबूरी इसलिये, कि जब तक लोकसभा के चार साल पूरे नहीं हो जाते और उस बीच में ही यदि मध्यावधि चुनाव हो जाते हैं या वे लोकसभा से इस्तीफा दे देते हैं, तो उनको पेंशन, भत्ता या एम. पी. की जो सुविधाएं होती हैं, वे प्राप्त नहीं हो पायेगीं, और २१ जून को ये चार साल पूरे होंगे, इसलिये सारे एम.पी. २१ से २२ जून तक तो बिलकुल शांत बैठे रहेंगे, क्योंकि बीच में लोकसभा से त्याग पत्र देना या यह स्थिति पैदा कर देना, कि ल
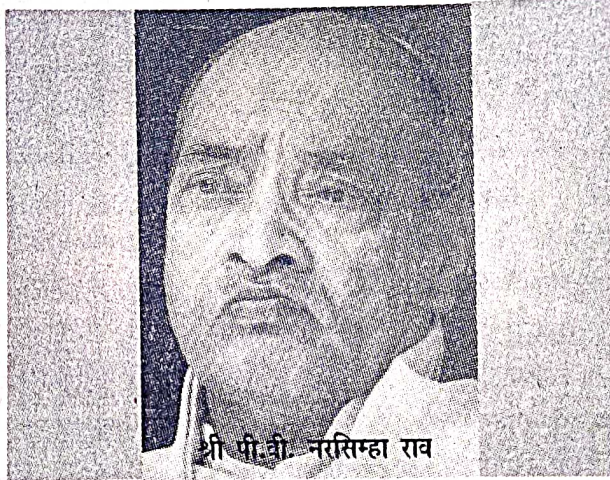
०लोकसभा भंग करने के लिये श्री राव मजबूर हो जायें, दोनों ही स्थितियां उनके लिये नुकसानदायक हैं।

इधर २१ जून तक तो वे बिलकुल दम साधे बैठे रहने के लिये मजबूर हैं ही, और तब तक श्री राव को किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं है। इसके बाद ही सारे लोकसभा के सदस्य अपने भविष्य की चिन्ता में लगेंगे, कि इन चारों वर्गों में से किसका साथ दें? कौन ऐसा व्यक्ति है, जो इनकी नैया को पार लगा सकेगा, क्योंकि लोकसभा का चुनाव बहुत महंगा और अनिश्चित है, कि न जाने ऊंट किस करवट बैठे, और जो उस सत्ता का सुख भोग रहे हैं, वह उन्हें प्राप्त हो या नहीं हो।

ऐसी स्थिति में यह प्रश्न भी आंखों के सामने साकार है, कि यदि वर्तमान प्रधानमंत्री यह अनुभव करेंगे, कि बगावत ज्यादा फैल रही है और एम. पी. विद्रोही खेमे में ज्यादा जा रहे हैं, तो हो सकता है, कि वे मध्यावधि चुनाव के लिये खड़े हो जायें, और अचानक मध्यावधि चुनाव करा देने से न भारतीय जनता पार्टी को संभलने का मौका मिलेगा और न ही किसी अन्य पार्टी को, और इसका लाभ कांग्रेस को होगा, क्योंकि अभी भारतीय जनता पार्टी इस स्थिति में नहीं है, कि वह अचानक लोकसभा के चुनाव का सामना कर सके। इस समय कांग्रेस भी इस स्थिति में नहीं है कि लोकसभा के चुनाव को झेल सके, मगर फिर भी श्री राव, यदि ऐसी स्थिति आ ही जाती है, तो वे लोकसभा भंग कर मध्यावधि चुनाव कराने के लिये राष्ट्रपति को सिफारिश कर सकते हैं। परन्तु यह बात निश्चित है, कि यह श्री शेषन ने आदेश निकाल दिया है, कि हर हालत में अप्रैल से पहले चुनाव सम्पन्न हो जाने चाहियें, और अप्रैल में केवल १० महीने बाकी रहे हैं और इन दस महीनों में काफी उथल-पुथल सम्भव है।

प्रश्न यह उठता है, कि क्या मध्यावधि चुनाव होंगे? क्या समय से पहिले चुनाव होंगे, क्योंकि समय से चुनाव की स्थिति तो मार्च ९६ के आस-पास ही आती है?

मैं पहिले भी इन्हीं पन्नों पर लिख चुका हूं, कि मध्यावधि की कोई सम्भावना नहीं है और मध्यावधि चुनाव इस समय हो, ऐसा कोई ग्रह संयोग भी नहीं है। इसलिये यह बात निश्चित है, कि चुनाव अपने समय पर होंगे, चाहे वे फरवरी में हों, चाहे मार्च में या अप्रैल के प्रारम्भ में हों।

अब प्रश्न उठता है, कि इन चुनावों में राजनैतिक स्थिति क्या होगी?

जहां तक कांग्रेस की स्थिति है, उसकी बिलकुल दो जड़ें होंगी। एक तो वे कांग्रेसी, जो ये समझेंगे कि हम किसी भी प्रकार से जीत नहीं सकते, वे दूसरे खेमे में जाकर खड़े हो जायेंगे या बागी बन जायेंगे, और उस आधार पर लोकसभा चुनाव लड़ने की तैयारी करेंगे, और दूसरा वह वर्ग होगा, जो श्री राव के नेतृत्व में चुनाव लड़ेगा। अब यह सम्भावना बहुत कम रह गई है, कि दोनों जड़ें मिलें और मिलजुल करके चुनाव लड़ें, और ऐसी स्थिति में कांग्रेस को नुकसान ज्यादा है, लाभ कम है। इससे पहिले इन दोनों में समानता हो, ऐसा भी प्रतीत नहीं होता है। ऐसा भी प्रतीत नहीं होता, कि किसी भी एक बात पर एक मत हो सकें। ऐसा भी प्रतीत नहीं होता, कि राव साहब किसी दूसरे को कांग्रेस का अध्यक्ष बना दें, और राव साहब स्वयं प्रधानमंत्री बने रहें, ऐसी भी सम्भावना कम है, क्योंकि जो भी कांग्रेस का अध्यक्ष होगा वोटों के बटवारे में बहुत कुछ उसके हाथ में होगा, और ऐसी स्थिति में जो अध्यक्ष होगा, वह लाभ उठा सकेगा, और श्री राव इस महत्त्वपूर्ण कार्य को दूसरों के हाथों में नहीं सौंपना चाहेंगे, परन्तु यह निश्चित है, कि यदि समय पर भी चुनाव हुए, तब भी इस समय कांग्रेस की लोकसभा में जो स्थिति है, उससे अच्छी स्थिति बनने की सम्भावना नहीं के बराबर है।

इस समय भी किनारे पर कांग्रेस खड़ी है और जोड़-तोड़ करके **अजीत सिंह** के गुट के लोगों को तोड़कर वह बहुमत के आधार पर अपनी नाव को भंवर में खे रही है। यद्यपि इस समय कांग्रेस को कोई खतरा नहीं है, मगर इतना भी बहुमत नहीं मिलता, तो स्वाभाविक है, कि कांग्रेस को दूसरी पार्टियों का मुंह ताकना पड़ेगा, और दूसरी पार्टियां यदि कांग्रेस का साथ देती हैं, तो बहुत कुछ लेकर के साथ दे पायेंगी या उन बागी कांग्रेसियों को भी साथ लेना पड़ेगा, जो बहुत कुछ प्राप्त करके कांग्रेस में वापिस आयेंगे। इसलिये वर्तमान समय में आने वाले ग्रह संकेत कांग्रेस के लिये भारी हैं, चिन्ताजनक हैं, और वर्तमान नेतृत्व यदि समय रहते नहीं सम्भला, यदि कार्य प्रणाली में अन्तर नहीं किया, यदि कोई दैविक सहायता उपलब्ध नहीं की, तो समस्याएं कांग्रेस के लिये ज्यादा अनुकूल दिखाई नहीं देंगी।

इधर दूसरी पार्टियों की तरफ यदि हम ध्यान देते हैं, तो भारतीय जनता पार्टी सशक्त विरोधी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आ रही है, मगर इनमें भी मतैक्य नहीं है। **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** का मानसिक चिन्तन अलग प्रकार का है, **लाल कृष्ण आडवानी** दूसरे तरीके से सोच रहे हैं, **मुरली मनोहर जोशी** का विचार अपने-आप में अलग है, मगर यह बात निश्चित है, कि इस बार भारतीय जनता पार्टी अगर लोकसभा चुनाव लड़ेगी, तो केवल अपने बलबूते पर लड़ेगी, किसी दूसरी पार्टी के साथ गठबन्धन करके नहीं लड़ेगी, जैसे कि वर्तमान महाराष्ट्र में उन्होंने शिवसेना के साथ गठबन्धन करके चुनाव लड़ा, और यह बात भी निश्चित है, कि इस समय हिन्दुत्व की लहर उन्हें बहुत अधिक लाभ नहीं दे पायेगी।

भारतीय जनता पार्टी इस समय मुसलमानो की तुष्टिकरण की नीति में लगी हुई है, और यह एहसास कराने में लगी हुई है, कि वह सिर्फ हिन्दुवादी पार्टी नहीं है, अपितु मुसलमानों के प्रति भी उसके मन में हमदर्दी है, और वह उनको भी साथ लेकर चलना चाहती है, मगर वे इसमें कितना कामयाब हो पायेंगे, यह एक अलग प्रश्न है।

यदि लोकसभा चुनाव का आंकलन करें, तो वर्तमान में

भारतीय जनता पार्टी के पास जो सीटें हैं, इतनी सीटें मिलना भी कठिन है, इन सीटों में बढ़ोत्तरी नहीं आ सकती, न्यूनता आ सकती है, और ऐसी स्थिति में अकेले भारतीय जनता पार्टी देश का नेतृत्व अपने हाथों में ले, ऐसी स्थिति नहीं के बराबर दिखाई दे रही है। जनता पार्टी का वर्चस्व बिहार और दक्षिण में एक-दो स्थानों पर है। उस पार्टी में इतनी अधिक क्षमता नहीं है, कि वह चुनाव में बहुत कुछ करने की स्थिति में हो। यह हो सकता है, कि जो भी पार्टी सत्ता के निकट हो, वह इन पार्टियों का सहयोग लेकर के आगे बढ़ सकती है।

ग्रह संयोग इस बात की ओर संकेत करते हैं, कि बृहस्पति इस समय वृश्चिक राशि में चल रहा है और आगे जाकर के धनु राशि में परिवर्तित होगा, और इससे भी बड़ी बात यह है, कि शनि मीन राशि में आयेगा और यह मीन राशि का शनि अपने-आप में अस्थिरता का सूचक रहेगा, क्यों कि बृहस्पति की राशि पर वह गतिशील होगा। अन्य ग्रहों की स्थितियों का आंकलन करने पर भी यह स्पष्ट होता है, कि जहां तक नेतृत्व का प्रश्न है, वह धुंधला है, स्पष्ट नहीं है।

अब यहां यह प्रश्न उठता है, कि लोकसभा चुनाव के बाद देश का नेतृत्व देश की कौन-सी पार्टी सम्भालेगी, कौन देश का प्रधानमंत्री बनेगा, किसके हाथों में सत्ता जायेगी?

इस समय प्रधानमंत्री बनने की होड़ में श्री नरसिम्हा राव, श्री राजेश पायलेट, श्री नारायण दत्त तिवारी, श्री अर्जुन सिंह, श्री लाल कृष्ण आडवानी अन्य कई नेता भी हैं, जो इस आशा में सपने संजोये हुए बैठे हैं, कि वे प्रधानमंत्री पद पर बैठ सकेंगे। जहां तक ग्रह संयोगों का प्रश्न है, उनमें श्री तिवारी और श्री राव जी के ग्रह दूसरों की अपेक्षा ज्यादा मजबूत हैं, मगर दूसरी पंक्ति में श्री लाल कृष्ण आडवानी, श्री अर्जुन सिंह, श्री राजेश पायलेट आदि भी हैं, इन में बहुत बड़ा अन्तर नहीं है।

यह बात स्पष्ट है, कि अकेली कोई पार्टी अगले चुनाव में बहुत अधिक बहुमत लेकर के आ जाय, ऐसी सम्भावना नहीं के बराबर दिखलाई पड़ती है। किसी न किसी पार्टी का सहयोग लेकर के या निर्दलीय लोगों का सहयोग लेकर पार्टी बनाने का प्रयत्न किया जायेगा, मगर वह अस्थिर सा होगा, क्योंकि बहुमत और न्यूनमत के बीच में बहुत छोटी-सी रेखा होगी, मगर जो भी प्रधानमंत्री बनेगा, वह बहुत अधिक कठिन दौर से गुजरेगा।

और "तंत्र" में लिखा है कि —

विना दैवी प्रयोगेन न साफल्यं कदाचन।
पूर्णत्व चामुण्ड तंत्रैश्च राजा भवति निश्चयः।।

जो **चामुण्ड प्रयोग** है, और जिसका समय-समय पर उच्चकोटि के राजाओं ने अपने लिये प्रयोग सम्पन्न करवाया है, चाहे वह विक्रमादित्य हों, चाहे राजा भोज हों, चाहे वह अन्य कोई राजा हो. . . उनके सामने भी जब इस प्रकार की समस्याएं आयी हैं, तो उन लोगों ने भी इस प्रयोग को सम्पन्न करवाया है, क्योंकि यह भगवती जगदम्बा का अत्यधिक उज्ज्वल, श्रेष्ठतम और अद्वितीय प्रयोग है। इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा, कि दैवी सहायता या प्रयोग अपने-आप में तीक्ष्ण, प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण होते हैं। आपको भी स्वीकार करना पड़ेगा, कि ज्योतिष अपने-आप में परिपक्व और पूर्ण है। इस बात को भी स्वीकार करना पड़ेगा, कि तंत्र प्रयोग अपने-आप में पूर्णतः सफल और श्रेष्ठतम भारतवर्ष की विधा है, और इस श्लोक के अनुसार ऐसी अनिश्चय की स्थिति में विभिन्न राजाओं ने अपने जीवन में पूर्णता, परिपक्वता और श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिये इस प्रयोग को सम्पन्न करवाया है।

मैं इन पंक्तियों में यह नहीं कहना चाहता, कि यह प्रयोग सम्पन्न हो या किया जाय, या करें, मैं तो केवल यह कह रहा हूं, कि आवश्यकता इस बात की है, कि देश में किसी पार्टी का नेतृत्व पूर्ण हो, जिससे देश आगे की ओर गतिशील हो सके, सुदृढ़ बन सके, विश्व के सामने अपनी बात को मजबूती के साथ रख सके, परन्तु ग्रह संयोग यह कह रहे हैं, कि बिखरा हुआ जो बहुमत होगा, जो एक-दूसरे की बैसाखी के सहारे बहुमत बनेगा, वह देश को अनिश्चयता के दौर की ओर ले जायेगा, और यह अनिश्चयता का दौर अपने-आप में सही ढंग से नेतृत्व नहीं कर सकता, ऐसी स्थिति में पिछले पांच हजार वर्षों में जिस गोपनीय प्रयोग, अद्वितीय प्रयोग, दुर्लभ प्रयोग का वर्णन ऊपर की पंक्तियों में किया है, उस प्रयोग को करने में हानि नहीं है, जिससे कि देश में स्थिरता आ सके, देश में अनिश्चय का वातावरण दूर हो सके, देश सही ढंग से गतिशील हो सके, और जैसा कि **"तंत्रमुच्चय ग्रंथ"** में लिखा है —

चामुण्डनुष्ठान पूर्णत्वं पूर्ण धारण रूपी च।
यदि पूर्णत्वमनुष्ठानं किंकरं नृप भव्यताम्।।

यदि चामुण्ड प्रयोग, जो कि बहुत कम लोगों को ज्ञात है, जो कि केवल उच्चकोटि के ग्रंथों में सिमट कर रह गया है, मगर इतिहास साक्षी है, कि इस प्रयोग को कई उच्चकोटि के विक्रमादित्य जैसे चक्रवर्ती राजाओं ने भी सम्पन्न करवाया है, और इस श्लोक के अनुसार यदि सही अर्थों में सही जानकार व्यक्ति इस प्रयोग को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर लेता है, तो अत्यन्त सामान्य, साधारण व्यक्ति भी राजा बन सकता है, राजा बन जाता है, इसमें कोई दो राय नहीं, और शास्त्र अपने-आप में मिथ्या नहीं हो सकता। इन पंक्तियों के लेखक का भी यही अनुभव रहा है, कि इस प्रकार का प्रयोग अपने-आप में अद्वितीय, अचूक और पूर्णतः लक्ष्य भेदन में सफल होता है।

जो भी हो, देश को एक सुयोग्य प्रधानमंत्री प्राप्त हो, जिसे बहुमत मिले, देश मजबूती के साथ आगे बढ़े, देश गतिशील हो, विश्व के सामने पूर्णरूप से सफल हो, मैं ऐसी ही प्रार्थना प्रभु से करता हूं।

— दिव्य चक्षु

विशेष
तंत्र रक्षा कवच
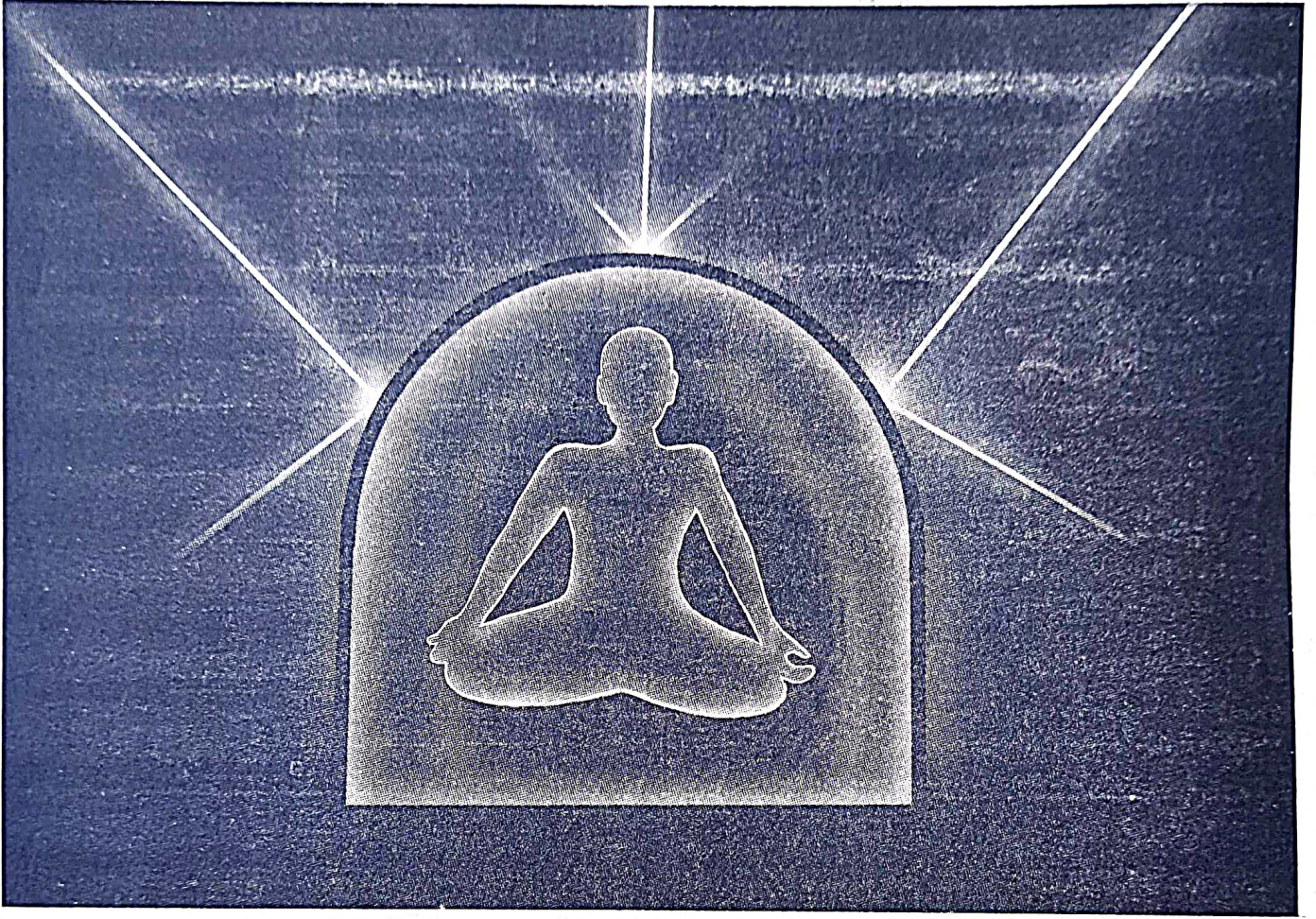
जब जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के
हल सही नहीं सूझते. . .यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए

- कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
- शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
- पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
- विवाह में बात बन - बनकर विगड़ जाए
- घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
- ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
- निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
- बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों

या फिर झगड़े- झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमेबाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फैक्सः०११-७१८६७००

क्या हम श्रीकृष्ण की तरह सोलह कलापूर्ण बन सकते हैं?

पूर्ण पौरुष साधना

जब हम कलाओं की बात करते हैं, तो हमारे सामने ऐसी विभूतियों के चेहरे घूमने लग जाते हैं, जो आज भी सभी के लिए वन्दनीय हैं, पूजनीय हैं, जैसे – बुद्ध, राम, कृष्ण, ईसा मसीह, गुरु नानक इत्यादि। इनमें से कोई बारह कलापूर्ण था, तो कोई चौदह कलापूर्ण. . . और सोलह कलापूर्ण तो केवल कृष्ण ही माने जाते हैं, जिन्हें 'जगद्गुरु' भी कहा जाता है।

कृष्ण का स्वरूप आज से पांच

हजार वर्ष पहले जितना सार्थक था, आज भी उतना ही सार्थक है और आगे भी रहेगा, उनके स्वरूप की व्याख्या, गुणों की व्याख्या, और उनकी क्रियाएं कुछ शब्दों या पंक्तियों में समेटी ही नहीं जा सकतीं। कृष्ण का चरित्र ऐसा नहीं है, कि हर व्यक्ति उन्हें अपने से अलग समझ कर एक आदर्श मान कर देखे, अपितु कृष्ण का जीवन चरित्र बालपन से लगाकर निर्वाण तक रस से, योग से, माया से, जीवन से ओत-प्रोत है, जिनका प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक महत्त्व है।

भगवान श्रीकृष्ण, जिन्होंने व्यक्ति को सम्पूर्णता के पथ से परिचित कराया और षोडश कलायुक्त कहलाए . . . समूची प्रकृति भी जिनके वशीभूत हो गई. . . मीरा, सूर ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण समाज ही उनके रंग में रंग गया . . . ऐसे कला के पक्षधर पूर्ण पुरुष कहलाए।

लाखों-करोड़ों में से कोई एकाध ही व्यक्ति ऐसा होता है, जो इन कलाओं से पूर्ण हो, फिर वह मानव नहीं, अपितु 'महामानव' कहलाता है, फिर वह युग के अनुरूप नहीं चलता, अपितु युग उसके अनुरूप चलता है।

– और केवल एक कृष्ण ही ऐसे व्यक्तित्व थे, जो सभी क्षेत्रों में पूर्ण थे, चाहे वह धर्म का क्षेत्र हो, चाहे कर्म का क्षेत्र हो और चाहे प्रेम का, वे पूर्ण पुरुष कहलाये, और आप भी पूर्ण पुरुष बन सकते हैं, यदि उन कलाओं से पूर्ण हों तो।

चार या छः कलाओं से सम्पन्न व्यक्ति भी महामानव कहलाने की स्थिति में आ जाता है, परन्तु यदि वह सोलह कला सम्पन्न हो, तो अपने-आप में अद्वितीय युग-पुरुष कहलाता है। ये सोलह कलाएं निम्नलिखित हैं–

१. वाक्‌सिद्धि

जो कुछ कहा जाय, वह व्यवहार में भी पूरा हो, उसे 'वाक् सिद्धि' कहते हैं। सामान्यतः हम देखते हैं, कि कोई भी साधारण व्यक्ति जो कुछ बोलता है, यह जरूरी नहीं, कि वह पूरा हो ही, किन्तु इस तरह के महापुरुष जो भी बोलते हैं, वह अक्षरशः पूरा होता ही है, चाहे वह भूत हो, वर्तमान हो या भविष्य से ही सम्बन्धित कोई घटना क्यों न हो। इस तरह के महापुरुष जब भी बोलते हैं, वे बोलने से पूर्व चर्चा के विषय को अच्छी तरह समझ-बूझ कर ही अपने शब्दों का प्रयोग करते हैं, क्योंकि वाक् सिद्धि सम्पन्न व्यक्ति श्राप और वरदान देने में सक्षम होते हैं और लोक व्यवहार में उनके द्वारा बताई बात खरी उतरती है।

२. दिव्य दृष्टि

दिव्य दृष्टि प्राप्त व्यक्ति के सामने जो भी व्यक्ति या प्राणी आता है अथवा जिसका भी वह चिन्तन करता है, उसका भूत, भविष्य, वर्तमान और सम्पूर्ण जीवन क्रम एक फिल्म की रील की भांति सामने दिखाई दे जाता है, चाहे वह व्यक्ति सैकड़ों या हजारों मील दूर क्यों न बैठा हो, उस व्यक्ति के बारे में सभी कुछ देखा या जाना जा सकता है।

३. प्रज्ञा सिद्धि

प्रज्ञा का अर्थ होता है– "मेधा", मेधा का अर्थ है– वह अद्वितीय स्मरण शक्ति या दिव्य ज्ञान, जिसके द्वारा व्यक्ति समस्त शास्त्रों को, समस्त श्रुति-स्मृतियों को और समस्त आगम ज्ञान को अपने में समेटे हुए होता है। उसके अन्दर एक नवीन चेतना पुञ्ज जाग्रत रहता है, जिससे कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में उसे अपने भीतर किसी भी प्रकार की न्यूनता का आभास नहीं होता।

४. दूर श्रवण

दूर श्रवण का अर्थ है– सैकड़ों-हजारों वर्ष पूर्व बीती हुई घटनाओं में होने वाली बातचीत को अपने कानों से वर्तमान में सुनना, जैसे– महाभारत काल में कृष्ण ने युद्ध के समय अर्जुन को जो भी गीता का ज्ञान दिया, वह आज भी इस कला के माध्यम से सुना जा सकता है।

५. जल गमन

जल गमन की सिद्धि प्रायः बहुत से योगियों में पाई जाती है। हम देखते हैं, कि जो भी भारी या वजनदार वस्तु होती है, वह जल में डूब जाती है, किन्तु इस कला से पूर्ण व्यक्ति जब जल में चलता है, तो वह उसी तरह चल सकता है, जिस तरह हम भूमि पर गमन करते हैं, वह उत्ताल तरंगों वाले समुद्र में, भयावह नदियों की धाराओं में भी सहज रूप से चल सकता है।

६. वायु गमन

जब व्यक्ति अपने स्थूल तत्त्व को छोड़कर साधना के बल से सूक्ष्मतम हो जाता है, तब वह आकाश में अपनी इच्छानुसार पक्षियों की तरह उड़ सकता है, विचरण कर सकता है। इस प्रकार वह समस्त ब्रह्माण्ड में तथा अनेकानेक लोकों में शीघ्रातिशीघ्र गमन करने में सक्षम हो जाता है।

. . . ऐसा व्यक्तित्व, जो सोलह कलापूर्ण हो, वह केवल एक व्यक्ति ही नहीं, एक समाज ही नहीं, अपितु युग को भी परिवर्तित करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है. . . और तब उसके चिन्तन, विचार तथा धारणा से पूरा जनसमुदाय अपने-आप ही प्रभावित होने लग जाता है।

७. अदृश्यीकरण

इस कला से पूर्ण व्यक्ति अपने इस स्थूल शरीर को भी सूक्ष्म शरीर की तरह छुपाने में समर्थ हो जाता है, बिना उसकी इच्छा के कोई भी प्राणी उसे नहीं देख सकता। इसलिए वह जहां भी अपने-आप को आवश्यक समझता है, स्वयं को गोपनीय बनाये रख सकता है, क्योंकि कई बार उसे इन कलाओं के कारण जन साधारण से बचने के लिए इस सिद्धि का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है।

८. विषोका

विषोका का अर्थ है— "अनेक रूपाय।" इस कला के द्वारा वह व्यक्तित्व अपने-आप को आवश्यकतानुसार अनेक रूपों में परिणित कर सकता है, जैसे— श्रीकृष्ण ने रासलीला के समय प्रत्येक गोपी के साथ अनेक रूपों में नृत्य किया था।

९. देवक्रियानुदर्शन

इस कला के द्वारा विभिन्न देवों द्वारा की जाने वाली क्रियाओं या लीलाओं को देखा जा सकता है, उनका साहचर्य प्राप्त किया जा सकता है, उनकी सामीप्यता प्राप्त की जा सकती है, उनसे बातचीत की जा सकती है, यथानुकूल उनसे सहयोग लिया जा सकता है।

१०. कायाकल्प

कायाकल्प का अर्थ है— "शरीर परिवर्तन।" कोई भी मानव-शरीर समय के अनुसार जर्जर और रोग युक्त हो जाता है, जिससे कि शरीर की कार्य क्षमता समाप्त सी हो जाती है और वह कुरूप और अस्वस्थ सा हो जाता है, किन्तु इस कला के द्वारा उस जर्जर और विपन्न शरीर को नवीन, चेतनावान एवं सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है, अतः वृद्धावस्था को पुनः यौवनावस्था में पूर्णरूप से परिवर्तित किया जा सकता है।

११. सम्मोहन

सम्मोहन का तात्पर्य है— "सभी को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता।" इस कला से पूर्ण व्यक्ति, मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी व समूची प्रकृति को भी चाहे तो अपने वश में करके, उन्हें अपने अनुकूल बना कर कोई भी कार्य करवा सकता है। भगवान् श्रीकृष्ण इसके अद्वितीय प्रमाण हैं, जिनके व्यक्तित्व के प्रभाव से सारा जगत् ही नहीं, अपितु समस्त ब्रह्माण्ड उनके वशीभूत हो गया था।

१२. गुरुत्व

इसका तात्पर्य है— "गरिमावान होना।" इस कला से पूर्ण व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, चाहे वह ज्ञान का हो, चाहे धर्म से सम्बन्धित हो अथवा सौन्दर्य या प्रेम से सम्बन्धित हो, या फिर बल या पराक्रम से सम्बन्धित हो, सभी क्षेत्रों में पूर्ण होता है।

१३. पूर्ण पुरुषत्व

इसका अर्थ है— "अद्वितीय पराक्रम एवं अत्यधिक बलशालिता।" इस कला से पूर्ण व्यक्तित्व कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में अपने प्रतिद्वन्द्वियों से भयभीत नहीं होता, वह सदैव निडर एवं बलशाली बना रहता है। महाभारत के कृष्ण इतनी बड़ी घटनाओं के बाद भी किंचित मात्र भी विचलित नहीं हुए, कहीं परास्त नहीं हुए, और सदैव हर क्षेत्र में अग्रणीय बने रहे।

१४. सर्वगुण सम्पन्नता

जितने भी संसार में उदात्त गुण होते हैं, सभी कुछ उस व्यक्ति में समाहित होते हैं, जैसे— दया, दृढ़ता, प्रखरता, ओज, बल, तेजस्विता इत्यादि। इन्हीं गुणों के कारण वह सारे विश्व में श्रेष्ठतम व अद्वितीय माना जाता है, और इसी प्रकार वह विशिष्ट कार्य करके संसार में लोकहित एवं जनकल्याण करता है।

१५. इच्छा मृत्यु

इन कलाओं से पूर्ण व्यक्ति कालजयी होता है, काल का उस पर किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं रहता, वह जब चाहे अपने शरीर का त्याग कर नया शरीर धारण कर सकता है।

१६. अनूर्मि

अनूर्मि का अर्थ है— "जिस पर भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी और भावना-दुर्भावना का कोई प्रभाव न हो।"

यह समस्त संसार द्वन्द्व धर्मों से आपूरित है, जितने भी यहां प्राणी हैं, वे सभी इन द्वन्द्व धर्मों के वशीभूत हैं, किन्तु इस कला से पूर्ण व्यक्ति प्रकृति के इन बन्धनों से ऊपर उठा हुआ होता है।

इन समस्त सोलह कलाओं से पूर्ण व्यक्ति ही पूर्ण पुरुष, देवपुरुष कहलाता

है। एक साधारण व्यक्ति भी जन्माष्टमी के स्वर्णिम क्षणों में यदि 'पूर्ण पौरुष साधना' को सम्पन्न कर लेता है, तो वह अद्‌भुत एवं अद्वितीय व्यक्तित्व का अधिकारी हो जाता है, फिर वह मानव नहीं, अपितु महामानव कहलाता है, क्योंकि उसमें देवत्व जैसे गुणों का स्वतः ही समावेश होने लग जाता है. . . और आप भी इस अद्वितीय साधना को सम्पन्न कर देवतुल्य बन सकते हैं।

इस मनुष्य-जीवन के तो दो ही पहलू हैं— पहला भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक, और जब व्यक्ति इन दोनों क्षेत्रों में इस पूर्ण पौरुष साधना को सिद्ध कर पूर्णता प्राप्त कर लेता है, तब वह जीवन की जो उच्चता है, श्रेष्ठता है, सर्वोच्चता है, उसे प्राप्त कर लेता है, क्योंकि यह साधना अपने-आप में सर्वश्रेष्ठ है, जो साधक के जीवन के सभी आयामों को स्पर्श कर उसे पूर्ण मानव बना देती है। इस साधना को करने के बाद व्यक्ति विभिन्न सोलह कलाओं में पारंगत हो जाने पर सिद्ध पुरुषों की श्रेणी में आ जाता है।

इसके पश्चात् फिर वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपूर्ण नहीं रहता, वह जो चाहे, जब चाहे, जहां चाहे अपने मनोनुकूल कार्य कर सकता है या करवा सकता है, फिर वह असम्भव कार्यों को करने में भी सक्षम एवं सामर्थ्यवान हो जाता है. . . और ऐसा व्यक्तित्व, जो सोलह कला युक्त हो, वह केवल एक व्यक्ति ही नहीं, एक समाज ही नहीं, अपितु युग को भी परिवर्तित करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है, और तब उसके चिन्तन, उसके विचार तथा उसकी धारणा से पूरा जनसमुदाय अपने-आप ही प्रभावित होने लग जाता है।

साधना विधि

साधना सामग्री पैकेट -

१. सारश्वत २. दिव्यौघ ३. मेध्या ४. श्रौत ५. पद्‌म ६. सर्वग ७. अणुनि ८. नानका ९. दीप्ता १०. च्यावना ११. वश्यी १२. गुरु गुटिका १३. पारुणी १४. सौरभ १५. कालता १६. ऊर्जिता।

दिवस- कृष्ण जन्माष्टमी १८ अगस्त १९९५ या किसी भी शुक्रवार को।

समय– रात्रि ९ से १२ बजे के मध्य। यह रात्रिकालीन साधना है।

दिशा– पूर्व या उत्तर।

विधि–

प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर साधक नित्य साधना विधि के अनुसार गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र-जप आदि सम्पन्न करें, तथा दिन में केवल फलाहार ही ग्रहण करें। इस पावनतम साधना के अनुसार इसके महत्त्व को देखते हुए उस दिन साधक के आचार-विचार पूर्ण सात्विक होने चाहिए, जहां तक हो सके कम-से-कम बातचीत करें तथा धार्मिक कार्यों में ही अधिक समय व्यतीत करें, और यदि हो सके, तो उठते-बैठते, चलते-फिरते आप किसी भी मुद्रा में गुरु मंत्र का जप करते रहें।

इसके बाद आप-अपने पूजा स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके पीले आसन पर बैठ जायं तथा सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर सोलह चावल की ढेरियां चार पक्तियों में बनाकर उपरोक्त सामग्री को क्रमशः एक-एक चावल की ढेरी पर रखें, फिर उन पर कुंकुम का तिलक करें तथा अक्षत, पुष्प आदि भी चढ़ायें। इसके पूर्व गुरु चित्र स्थापित करके, उसका पूजन कर एक माला गुरु मंत्र-जप अवश्य करें—

गुरु मंत्र –

''ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः''

इसके पश्चात् उन सोलह ढेरियों पर स्थापित सामग्री पर क्रमशः इन बीजाक्षरों का तीन-तीन बार उच्चारण कर गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ायें।

ऐं-सारश्वत	अं-दिव्यौघ
प्रं-मेध्या	क्षं-श्रौत
नीं-पद्‌म	वं-सर्वग
हं-अणुनि	षं-नानका
दं-दीप्ता	कं-च्यावना
सं-वश्यी	गुं-गुरु गुटिका
पूं-पारुणी	सं-सौरभ
कां-कालता	द्रं-ऊर्जिता

फिर इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें। संकल्प में अपने नाम व गोत्र का उच्चारण करते हुए, पूर्ण सोलह कला प्राप्ति हेतु इस मनोकामना को स्मरण करते हुए जल को भूमि पर छोड़ दें, फिर निम्न मंत्र का एक घंटे तक बिना माला के शांत चित्त होकर मंत्र-जप करें-

मंत्र

ॐ श्रीं अनंगाय कृष्णत्वाय नमः

मंत्र-जप समाप्त कर यदि आप जन्माष्टमी पूजन करते हों, तो उसके पश्चात् लघु होम करें। साधक को चाहिए कि वह आम, बेर अथवा अन्य जो भी पवित्र लकड़ी उपलब्ध हो, उसे जला लें तथा उपरोक्त साधना-सामग्री को घी में मिलाकर उस मूल मंत्र, जिसका एक घंटा जप किया था, उसे सोलह बार उच्चारण कर, सभी सोलह सामग्रियों को क्रमशः अग्नि में होम कर दें, आहुति देते समय मूल मंत्र के उच्चारण के अंत में ''स्वाहा'' का उच्चारण अवश्य करें। यदि आप चाहें तो उन सामग्रियों के साथ हवन-सामग्री भी मिला कर आहुति दे सकते हैं।

पूर्णाहुति के बाद आरती करें और आनन्दपूर्वक पंचामृत एवं उपलब्ध प्रसाद को सभी उपस्थित परिजनों में बांट कर खायें। दूसरे दिन आहुति की राख को तथा अन्य बचे हुए पुष्प, अक्षत आदि सामग्री को नदी, तालाब या कुंए में विसर्जित कर दें। इस साधना काल में धूप, दीप आदि सुगन्धित वस्तु अवश्य जलती रहे, जिससे कि वातावरण सुगन्धित रहे।

यह अपने-आप में अद्वितीय साधना है, निश्चित ही इस साधना के बाद उस साधक का सौभाग्य उज्ज्वल होता ही है, क्योंकि इस प्रकार की दुर्लभ साधना कभी-कभी ही पत्रिका परिवार प्राप्त कर पाता है। ●

ध्यान में छिपे हैं जीवन के रहस्य

''ध्यान'' अपने आन्तरिक मन में प्रवेश करने की क्रिया है, जहां ऊपरी भाव अर्थात् बुद्धि, राग, द्वेष, भ्रम, सन्देह सब कुछ परे हट जाता है, समाप्त हो जाता है, और वहां एक नवीन आलोक पैदा होता है। हर धर्म के लोगों ने ध्यान की क्रिया को अपने-अपने ढंग से समझाने का प्रयास किया है, हर देश में इसकी कोई न कोई विशिष्ट पद्धति अवश्य रही है। **'महर्षि पतंजलि'** के अनुसार— **''जब बाहर के सभी विषयों को छोड़ कर मन केवल आत्मा या परमात्मा का ही चिन्तन-मनन करता है, तब ध्यान की स्थिति बनती है, और इस स्थिति में पहुंच कर साधक अन्नमय-कोष, प्राणमय-कोष और मनोमय-कोष से ऊपर**

उठकर, ज्ञानमय-कोष में पहुंचने की साधना करता है।

कुछ ही दशक पहले ध्यान को जीवन का एक अभिन्न अंग भी माना जाता था। अलग-अलग गुरुओं ने अपने-अपने ढंग से इसे समझाने का प्रयास किया, तथा देश-विदेश में इसका प्रचार व प्रसार भी किया। आज भौतिकता सम्पन्न पश्चिमी देशों में इस क्रिया की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि जीवन की आपाधापी से उपजे तनाव और संत्रास से मुक्ति ध्यान के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। यह भारत के प्राचीन ऋषियों की देन है, किन्तु इसका अन्य धर्मों में भी प्रचलन है, अन्य धर्मों के अनुयायिओं ने भी इस क्रिया को अपने-अपने ढंग से अलग नाम व रूप देकर उसी प्रकार पूर्णता के साथ अपनाया है, जिस प्रकार भारतीयों ने अपनाया है।

ध्यान का अन्य सभ्यताओं और धर्मों में प्रचलित रूप–

१. मसीही ध्यान–

भारतीय हठयोगियों की तरह **''डेजर्ट फादर्स''** भी बीहड़ स्थलों में ध्यान की साधना करने पर जोर देते थे। उनका यही कहना था– ''प्रभु का नाम हर सांस में रम जाना चाहिए।'' पांचवीं शताब्दी में **'येरुसलम'** के प्रसिद्ध गुरु **''हेसीचियस''** ने इस नाम-जप की पद्धति को एक नया नाम दिया, जिसे **''हेसिचिज़्म''** कहा जाता है। हेसीचियस के अनुसार– **''विचार विकार का जन्मदाता है, और जब तक विचार आते हैं, तब तक मन चंचल रहता है। विचार शैतान का दूत है, यदि कोई भगवान् को पाना चाहता है, तो उसे पहले अपने मस्तिष्क को विचार शून्य करना पड़ेगा, और विचार शून्य करने का एक ही मार्ग है, किसी शांत स्थल पर बैठकर किसी विशिष्ट प्रार्थना द्वारा प्रभु नाम का जप करना।''**

२. यहूदी ध्यान–

इस पद्धति को यहूदी धर्म में **''कब्बाला''** कहा जाता है। कब्बाला को मात्र ध्यान साधना समझना गलत होगा, क्योंकि यह तो योगियों की तांत्रिक विद्या है। इस पंथ के अनुयायिओं का कहना है– ''व्यक्ति अपने शरीर की आवश्यकताओं और आदतों से बंधा हुआ है, जिस कारण वह सुविधा की तलाश करता है और पीड़ा से दूर भागता है, किन्तु आवश्यकता इस बात की है, कि वह अपने इन आन्तरिक बंधनों को पहिचाने, और फिर इन्हें तोड़ने में जुट जाय। वह अपनी शक्ति, अपनी सामर्थ्य, अपनी सहनशीलता का इतना अधिक विकास करे, कि शरीर की सीमाओं से पार हो सके।'' इस प्रकार स्पष्ट है, कि कब्बाला एक ऐसी गूढ़ विद्या है, जिसके माध्यम से अव्यक्त पहलू, जिसका सम्बन्ध आत्मा से है, तक पहुंचा जा सकता है।
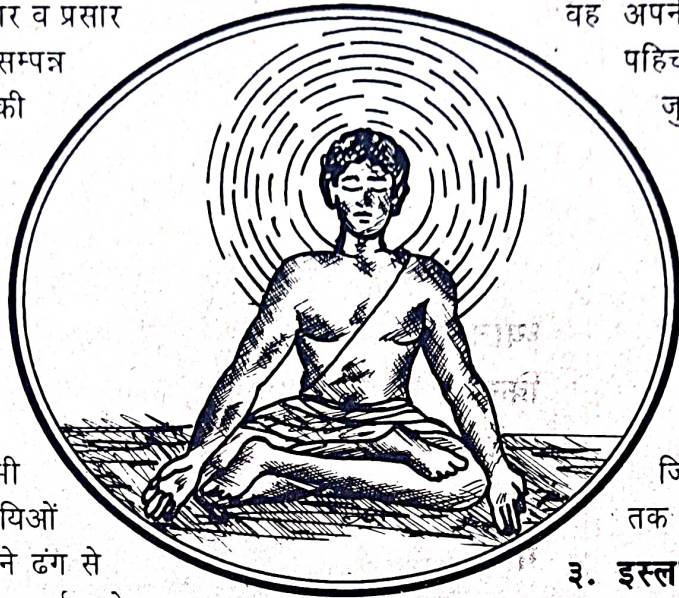
३. इस्लामी धर्म–

इस्लाम में रहस्यवादी सूफियों ने जप और ध्यान की एक विशेष पद्धति को अपनाया है, जिसे **''तसव्वुफ''** कहा जाता है। सूफी संतों ने कहा है– **''एक वर्ष तक इबादत करते रहने से एक घंटा ध्यान करना ज्यादा श्रेयस्कर है।''** सूफी ध्यान पद्धति के अनुसार– ''यह संसार नश्वर है, सब नष्ट हो जाता है, केवल वह खुदा अपनी पूरी गरिमा और महिमा के साथ बना रहता है'', यह विचार सूफियों के लिए प्रेरणा स्रोत है, जो उन्हें नश्वर संसार से विरक्त होकर अजर-अमर खुदा से मुखातिब रहने की शिक्षा देता है।

४. अर्हत परम्परा–

जैन और बौद्ध धर्म में ध्यान को विशिष्ट महत्त्व दिया जाता है। इनके मतानुसार– **''ध्यान के द्वारा व्यक्ति समस्त सांसारिक विकारों से मुक्त होकर अर्हत या बुद्धत्व प्राप्त कर लेता है।''** जैन और बौद्ध धर्म की ध्यान पद्धति के अनुसार प्रारम्भ में मस्तिष्क को किसी एक वस्तु या विचार पर केंद्रित करना सिखाया जाता है। ध्यान से बोध तक पहुंचने की कई सीढ़ियां मानी गई हैं, जिसमें बताया गया है, कि ''नश्वर के बोध को नष्ट कर, अनश्वर के बोध को जानो, और अपने मूल मानस को पहिचान लो।'' इनका उद्देश्य था– साधक का ध्यान महाशून्य पर केन्द्रित करना।

ध्यान की इस प्रक्रिया को **''जाजेन''** का आसन भी कहा जाता है। जाजेन, यानी पद्मासन की मुद्रा में

बैठना। जैन धर्म के अनुसार इसका पहला चरण है— पद्मासन साध कर ध्यान लगाना, दूसरा चरण है— यों ही बैठे-बैठे और बगैर किसी चीज पर ध्यान केंद्रित किये हुए, सब कुछ देखते और सुनते हुए निस्संग रह सकना, और तीसरे चरण में चलते-फिरते हर क्षण चारों ओर समस्त जीवन व्यापार में निस्संग अवस्था में रह कर जीना।

इस प्रकार सभी ने किसी न किसी रूप में ध्यान की पद्धति को समझाने का प्रयास किया है, किन्तु इन सभी पर भारतीय ध्यान पद्धतियों की छाप विद्यमान है। मनोवैज्ञानिकों का मत है— "जिस प्रकार स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार मानसिक स्वस्थता अर्थात् स्वस्थ मानस के लिए आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता होती है, जिस प्रकार व्यायाम करने से शरीर चुस्त व फुर्तीला बनता है, उसी तरह नियमित रूप से ध्यान करते रहने से मानसिक स्फूर्ति प्राप्त होती है।"

आंख बंद कर बैठ जाने की क्रिया ध्यान नहीं है, ध्यान तो अंतःमन की अतल गहराइयों में उतर जाने की क्रिया है. . . और इसके लिए कोई लम्बी-चौड़ी प्रक्रिया नहीं है. . . इसके लिए शांत चित्त की आवश्यकता है। जव वह अतल गहराई में उतर जाता है. . फिर वह वाहरी माया-मोह के बन्धन से मुक्त हो जाता है. . . और जीवन का आनन्द प्राप्त कर लेता है. . . जिसे वेदों में, शास्त्रों में 'ब्रह्मानन्द' कहा गया है। इसके लिए वर्ग विशेष या जाति सम्प्रदाय का कोई महत्त्व नहीं है।

ध्यान शरीर और मन को साध कर आत्मलीन होने की क्रिया है, अपने आन्तरिक मन में प्रवेश करने की क्रिया है, अतः मन की अतल गहराइयों में डूब जाना ही ध्यान है. . . और जव मनुष्य इस अवस्था तक पहुंच जाता है, तो फिर वह संत या योगी कहलाने लगता है, क्योंकि अंतर्मन में प्रवेश करने का तात्पर्य है–वाहरी मोह-माया के वन्धनों से मुक्त हो जाना. . . और जब ऐसा हो जाता है, तो फिर जीवन का आनन्द भी प्राप्त हो जाता है, जिसे 'ब्रह्मानन्द' कहा जाता है, जिसे 'परमानन्द' कहा जाता है, और यही जीवन की सर्वोच्चता है।

प्रत्येक व्यक्ति को वहुत नहीं तो थोड़ा समय निकाल कर अवश्य ही इस ध्यान प्रक्रिया को सम्पन्न करना चाहिए। ध्यान करना तो ठीक इसी प्रकार है, मानो जल शांत हो और हम तलहटी तक झांककर देख सकें। ध्यान अपने अन्दर की समस्त ऊहापोह, वेचैनी, छटपटाहट, व्यग्रता और तनाव को समाप्त करने की प्रक्रिया है। वस्तुतः ध्यान कोई जटिल प्रक्रिया नहीं है, यह तो विद्वता के प्रदर्शन में कतिपय विद्वानों ने इसे जटिल घोषित कर दिया है। ध्यान करने से जो वाहरी समस्याएं, विकार, चिन्ताएं और कुंठाएं होती हैं, वे शनैः-शनैः दूर हो जाती हैं, और चित्त में एक अपूर्व शांति का प्रादुर्भाव होता है। ●

शत-पत्रिका यक्षिणी

'शत-पत्रिका' यक्षिणी वर्ग की एक अत्यन्त सौन्दर्यवती और दयालु यक्षिणी, जो अपने सिद्ध साधक को प्रत्येक प्रकार की सम्पन्नता प्रदान करती है, और इसे सिद्ध करने के लिए किसी लम्बे-चौड़े विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती है। किसी भी **रविवार** की मध्य रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुंह कर गुरुनामी चादर ओढ़, गुलाबी आसन पर वैठ कर यह साधना सम्पन्न करें।

किसी बाजोट पर **११ कमलबीजों** के मध्य में **"लघु शत-पत्रिका यक्षिणी यन्त्र"** रख कर गुलाब का इत्र चढ़ायें, अन्य किसी प्रकार के पूजन की आवश्यकता नहीं है। निम्न मंत्र का तीस मिनट तक बिना माला के जप करें।

मंत्र – **ॐ ह्रीं हीं फट्**

ऐसा तीन रात्रि तक करें, तो शत-पत्रिका यक्षिणी प्रसन्न होती है और सम्पन्नता प्रदान करती है। **इसे सिद्ध करने वाले साधक को व्यापार में लाभ मिलता है। बेरोजगार व्यक्ति को या तो नौकरी प्राप्त हो जाती है या फिर निश्चित आय का साधन उपलब्ध हो जाता है।** भविष्य में भी यह सहायिका के रूप में साथ देती है। साधना समाप्ति के पश्चात् यन्त्र और कमलबीजों को नदी में विसर्जित कर दें।

पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्रनिभेक्षणाम् ।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियामहम् ।।

देवी की जितनी शक्तियां मानी जाती हैं, उन सब का मूल महालक्ष्मी ही हैं, ये ही सर्वोत्कृष्ट पराशक्ति हैं, ये ही समस्त निधियों की प्रधान प्रकृति हैं। सारा विश्व-प्रपंच महालक्ष्मी से ही प्रकट हुआ है। स्थूल-सूक्ष्म, दृश्य-अदृश्य, व्यक्त-अव्यक्त भी इसी के स्वरूप हैं।

ये भौतिक सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं, यह भौतिक सम्पत्ति जड़ है तथा इस जड़ सम्पत्ति पर भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का अधिकार होता रहता है, इसीलिए यह कभी किसी एक की होकर नहीं रहती, कहीं भी स्थिर नहीं रहती, अतः इसके इस स्वरूप के कारण ही इसे सर्वभोग्या, चंचला, चपला,

बहुगामिनी आदि कहा गया है।

आज प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में सुख, सम्पन्नता व समृद्धि प्राप्त करने के लिए इसकी आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि बिना इसके गृहस्थ जीवन चल ही नहीं सकता, और जिस के भी जीवन में इसका अभाव होता है, वह हर समय दुःखी, पीड़ित, चिन्ताग्रस्त एवं निराशाजनक जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है। आज हर कोई इसके पीछे भाग रहा है, क्योंकि यह किसी एक जगह स्थिर नहीं रह पाती, किन्तु जिस पर भी लक्ष्मी की कृपा हो जाती है, उसे यदि आवश्यकता हो, तो यह स्थिर सम्पत्ति प्रदान कर देती है।

समुद्र-मंथन के समय क्षीर सागर से प्रकट इस कन्या को इन्द्र ने भी अपने राज्य में स्थायित्व देने के लिए विष्णु द्वारा बताए ''स्थिर लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग'' को सम्पन्न किया था, जिससे कि उसके राज्य में लक्ष्मी को पूर्णरूप से स्थायित्व दिया जा सका।

देवराज इन्द्र शुरू में वहुत ही गरीब और दरिद्री थे, और अपने जीवन में व्याप्त इस दुःख और दरिद्रता के कारण वे बिलकुल हताश और निराश हो चुके थे, तव उन्होंने अन्य बड़े-वड़े उच्चकोटि के योगियों, ऋषियों आदि से बड़ी-बड़ी साधनाएं सम्पन्न कर एक नए राज्य का निर्माण किया, जो उनके द्वारा की गई साधनाओं में सफलता और सिद्धि का परिणाम था, और जिस कारण वे अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही दरिद्रता को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा सके, जो कि उनके दुःख का सबसे बड़ा कारण थी, उन्होंने इन साधनाओं के बल पर ही ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं को अपनी तपस्या से प्रसन्न कर अपने राज्य में श्री, वैभव, समृद्धि, ऐश्वर्य, ओज और अप्सराएं आदि सभी कुछ प्राप्त कर लिया था, और इसी प्रकार वे एक सुंदर देवनगरी का निर्माण कर सके।

एक बार भगवान शंकर के अंशभूत महर्षि दुर्वासा भूतल पर विचरण कर रहे थे, तभी घूमते-घूमते वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहां उन्हें इन्द्र अपने ऐरावत हाथी पर बैठकर आते हुए दिखाई दिए, जब देवराज इन्द्र महर्षि के समीप आये, तो दुर्वासा ऋषि ने प्रसन्न हो एक परिजात-पुष्पों की माला, जो दिव्य पुष्पों की बनी हुई थी, उनको पहिना दी, किन्तु इन्द्र ने उसे अपने गले से उतार कर ऐरावत को पहिना दिया, ऐरावत ने उसकी तीव्र गन्ध से प्रभावित हो, उसे उतार कर जमीन पर डाल दिया, जिसे देख दुर्वासा ऋषि क्रोधित हो उठे, इसे अपना घोर अपमान समझ कर अपमान की ज्वाला से क्रोधित हो, उन्होंने इन्द्र को शाप दे डाला, और बोले– ''अरे ओ इन्द्र! ऐश्वर्य के घमण्ड से तेरा हृदय दूषित हो गया है, तुझ पर जड़ता छा गई है, तभी तूने मेरी दी हुई माला का आदर नहीं किया, किन्तु वह माला नहीं, अपितु लक्ष्मी का धाम थी, इसीलिए इस क्षण से ही तेरे अधिकार में स्थित तीनों लोकों की लक्ष्मी शीघ्र ही अदृश्य हो जाएगी।''

यह श्राप सुनते ही इन्द्र घबरा गए और तुरन्त अपने ऐरावत से उतर कर उनके चरणों को पकड़ लिया, उन्होंने दुर्वासा ऋषि को प्रसन्न करने की लाख चेष्टाएं कीं, किन्तु वे टस से मस

न हुए, और इन्द्र को फटकार कर वहां से चल दिए, तभी से इन्द्र के तीनों लोकों की लक्ष्मी अपमान हो जाने के कारण, उससे रुष्ट होकर चली गई।

इस प्रकार त्रिलोकी के श्रीहीन और सत्वरहित हो जाने पर दानवों ने देवताओं पर चढ़ाई कर दी। देवताओं में अब उत्साह कहां रह गया था, सभी ने हार मान ली, और इस प्रकार जब पूरा राज्य अस्त-व्यस्त हो जाने के कारण सभी देवता संकट में पड़ गए थे, तो उन्होंने इन्द्र को भगवान विष्णु की उपासना व तपस्या कर उनकी शरण में जाने को कहा, क्योंकि लक्ष्मी भगवान विष्णु की ही पत्नी हैं, और अभिन्न हैं, उनकी घोर तपस्या को देख विष्णु प्रसन्न मुद्रा में प्रगट हुए बिना न रह सके।

भगवान विष्णु ने इन्द्र की तपस्या से प्रसन्न हो, उन्हें एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग सम्पन्न करने के लिए कहा, जिसका नाम **''स्थिर लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग''** था। उन्होंने कहा— इस प्रयोग को सम्पन्न कर तुम पुनः तीनों लोकों की लक्ष्मी को प्राप्त कर सकते हो, और प्राप्त ही नहीं, अपितु हमेशा-हमेशा के लिए उसे स्थायित्व दे सकते हो। ऐसा कहकर विष्णु जी ने उन्हें दुर्वासा ऋषि के श्राप से मुक्त होने का आशीर्वाद दिया और इस प्रयोग को समझाकर चले गए।

इन्द्र ने घोर परिश्रम कर श्रद्धापूर्वक, पूर्ण विश्वास के साथ भगवान विष्णु द्वारा बताए प्रयोग को सम्पन्न किया, और पुनः अपने राज्य को प्राप्त कर लक्ष्मी को स्थायित्व दे सके।

यह ''स्थिर लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग'' अपने-आप में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है, जिसने इन्द्र को पुनः उसका खोया राज्य वापिस लौटा दिया। लक्ष्मी श्री, वैभव, यश, मान, सम्मान, कीर्ति, समृद्धि और सम्पन्नता प्रदान करने वाली देवी हैं। भौतिक-सुखों की प्राप्ति हेतु प्रत्येक व्यक्ति को इस इन्द्रकृत प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, जो इस प्रकार है –

दिवस – २८-७-९५ श्रावण शुक्ल पक्ष, पुष्य नक्षत्र या किसी भी रविवार को।

समय – सायं - ६ बजकर १० मिनट पर

सामग्री – स्थिर लक्ष्मी प्रदायक यंत्र, महामाया माला।

दिशा – उत्तर

प्रयोग विधि –

साधक को चाहिए, कि वह अपनी पत्नी सहित इस प्रयोग को सम्पन्न करे, और घर में मधुरतापूर्ण वातावरण को बनाए रखे, क्योंकि जहां क्रोध होगा, जहां लड़ाई-झगड़ा होगा, वहां लक्ष्मी नहीं आ सकती, इसीलिए घर-परिवार में प्रेममयी वातावरण होना चाहिए।

साधक सबसे पहले स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजा स्थल में आसन पर बैठ जाए, पूजा स्थान एकदम साफ-सुथरा हो, वहां किसी प्रकार की गंदगी, मिट्टी या जाला नहीं लगा होना चाहिए, फिर शुद्धता पूर्वक उत्तराभिमुख हो, हाथ में जल लेकर, अपने शरीर को शुद्ध और पवित्र कर ले, फिर सामने रखे बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर **''स्थिर लक्ष्मी प्रदायक यंत्र''** को स्थापित कर दे।

यंत्रों को जल, दूध, दही, शहद आदि से स्नान करा कर, पोंछ कर कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प (कमल के फूल) और नैवेद्य (भोग खीर का होना चाहिए) से उनका पूजन सम्पन्न करे, इसके पश्चात् मानसिक गुरु-पूजन कर गुरु मंत्र की चार माला जप करे, और उनसे प्रार्थना करे, कि मुझे इसमें सफलता प्राप्त हो, गुरु मंत्र-जप करने के पश्चात् भगवान विष्णु का ध्यान करे।

विष्णु का ध्यान करने के पश्चात् महालक्ष्मी के स्वरूप का मानसिक रूप से चिन्तन एवं ध्यान करे, और फिर वीर आसन में बैठ कर **''महामाया माला''** से निम्न मंत्र की ११ माला जप करे –

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै वर वरद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् सर्वप्रथम गुरु आरती पति-पत्नी दोनों मिलकर सम्पन्न करें, और हो सके तो पूरे परिवार के साथ ही गुरु आरती सम्पन्न करनी चाहिए, गुरु आरती सम्पन्न करने के पश्चात् लक्ष्मी जी की आरती करें और खीर के लगे भोग को स्वयं ग्रहण कर लें। साधना समाप्त होने के पश्चात् गुरुदेव से टेलीफोन या डाक द्वारा, जैसे भी सम्भव हो, उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तथा आशीर्वाद ग्रहण करने के पश्चात् उस यंत्र और महामाया माला को पास के किसी भी नदी, कुंए या तालाब में रात्रि के समय विसर्जित कर दें।

इस प्रयोग में मंत्र-सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठा युक्त, चैतन्य यंत्र एवं माला का ही प्रयोग होना चाहिए, और पूरे साधना काल में दीपक का जलते रहना आवश्यक है। इस प्रयोग को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न करने पर साधक को सफलता मिलती ही है, जिससे उसके जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं रहता, और वह दरिद्री से धनवान बनने में सक्षम हो जाता है, फिर उसे समस्त भौतिक-सुखों की प्राप्ति हो जाती है, जिससे उसका गृहस्थमय जीवन सुखमय हो जाता है, और भविष्य में भी कभी उसे धन का अभाव नहीं रहता, क्योंकि इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद लक्ष्मी का उसके घर में पूर्णरूप से स्थायित्व हो जाता है।

अतः यह दिव्य प्रयोग प्रत्येक गृहस्थ को सम्पन्न करना ही चाहिए, क्योंकि बिना लक्ष्मी के भौतिक जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं की जा सकती।

गुरु पूर्णिमा शिविर हेतु (९-१०-११-१२ जुलाई १९९५)

भव्य साधनात्मक शिविर

प्रवेश सर्वथा मुफ्त

कोई शिविर शुल्क नहीं

प्रत्येक जीव की यही इच्छा होती है, कि प्रभु ने जितने क्षण दिये हैं, वह ज्यादा से ज्यादा समय उसके साथ बीते. . . फिर उसके लिये वह कोई न कोई उपाय निकाल ही लेता है, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक शिष्य और साधक की इच्छा होती है, कि वह ज्यादा से ज्यादा समय पूज्य गुरुदेव के साथ बिताये. . . ऐसे कई पत्र हमें प्राप्त हुए हैं, अतः उनकी इच्छाओं को ध्यान में रखते हमने एक योजना बनाई है, जिसमें आपको सिर्फ फायदे ही फायदे हैं, आइये देखें आपको क्या करना है—

आप क्या करें. . .

- पत्रिका के अन्दर लगे पोस्टकार्ड को भली प्रकार से हिन्दी या अंग्रेजी में भर दें. . . और फिर अपना नाम व पता भी साफ-साफ लिख दें।
- आपको **दो द्विवर्षीय** पत्रिका सदस्य बनाने हैं, एक साल का पत्रिका शुल्क १९६/- रुपये (वार्षिक सदस्यता १८०/-, डाक व्यय १६/-) है, इस प्रकार से प्रत्येक से ३७५/- रुपये लेने हैं, कुल दो सदस्यों के ७५०/- रुपये लेने हैं।
- आपको हम मात्र सात सौ पचास रुपये की वी.पी.पी. से **''मनोकामना पूर्ति यंत्र''** भेज देंगे, ६६०/- रुपये तो शिविर शुल्क ही है, यह यंत्र तो आपको मात्र ७०/- रुपये में ही प्राप्त हो जाता है।
- वी. पी. पी. छुटने पर उन दोनों को पत्रिका सदस्य बना कर आपको रसीद भेज देंगे। इस प्रकार आपका शिविर शुल्क लगा ही नहीं और ६००/- रुपये का दुर्लभ ताम्र यंत्र मात्र ७०/- रुपये तथा २०/- रुपये डाक व्यय में ही आपको प्राप्त हो जायेगा।
- **आपको पत्रिका प्राप्ति के सात दिन के भीतर-भीतर पोस्टकार्ड भर कर भेज देना है।**

शिविर में भाग लेने के लिये आपको अपने साथ कार्यालय द्वारा भेजी गयी रसीद साथ लानी होगी, तभी आप शिविर में भाग ले सकते हैं, विना रसीद के शिविर में प्रवेश के अधिकारी नहीं होंगे।

(इसमें आप-अपनी पत्रिका सदस्यता नहीं बढ़ा सकते)

एक अभूतपूर्व योजना

आप सभी शिष्यों, साधकों के लिए

ऐसे भी होती है—"गुरु सेवा"
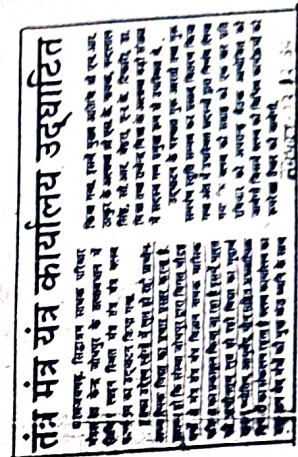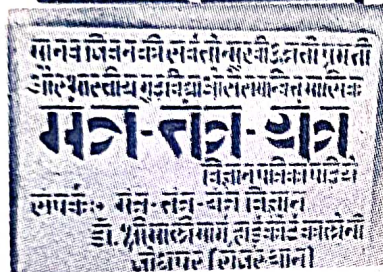
शहरों में लगाये गये होर्डिंग, दीवार लेखन, पेपर में विज्ञापन

पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी भावना प्रकट करने का सबसे सहज और सुगम मार्ग है— "सेवा"। सेवा के माध्यम से कोई भी शिष्य अपना नाम गुरु के होठों पर अंकित कर सकता है।

सेवा करने के लिए यह आवश्यक नहीं है, कि आप गुरुदेव के निकट रह कर, उनकी चरण सेवा करके या उनको पानी पिलाकर ही यह समझें, कि मैंने सेवा की। सेवा के तो अनेकों प्रकार हैं, आप कोई भी प्रकार अपना कर सेवा-कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। फिर यह अनिवार्यता होती ही नहीं, कि आप गुरु की भौतिक देह के निकट हैं या दूर, क्योंकि शारीरिक रूप से दूर रहने वाला शिष्य भी गुरु के इतना अधिक निकट हो सकता है, जितना कि शारीरिक रूप से निकट रहने वाला शिष्य भी नहीं होता।

गुरु की निकटता शिष्य के कर्म पर आधारित होकर ही शिष्य को प्राप्त होती है। इसी को आधार मान कर शिष्य समूह में से कुछ संकल्पबद्ध शिष्य आगे आये, और उन्होंने विभिन्न प्रकार के कार्यों से अपनी गुरु के प्रति निष्ठा और सेवा भावना का पूर्ण परिचय दिया।

समय-समय पर प्राप्त होने वाले पत्रों से हमें इनके कार्यों के बारे में पता चलता रहता है। इन्होंने किन विधियों का उपयोग किया, आप सभी लोगों के उत्साहवर्द्धन हेतु उनके सेवा-कार्य को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसके द्वारा आप भी अपनी आन्तरिक इच्छा को पूर्ण करने के लिए सुगम मार्ग अपना सकें। इस अंक में कुछ ही लोगों के कार्यों का विवरण देना सम्भव हो सका है। निश्चित रूप से आप में से प्रत्येक साधक, पाठक व शिष्य की कामना होगी, कि आगामी अंकों में आपका नाम व आपके कार्यों का प्रकाशन किया जाय, और किया जायेगा। आप निस्संकोच होकर अपने द्वारा किये गये गुरु सेवा-कार्यों का विवरण, जो जनहित को ध्यान में रख कर किया गया हो, उसका विवरण पत्रिका कार्यालय को अवश्य भेजें।

ये कार्य पूज्य गुरुदेव के प्रति शिष्य के दायित्व की पूर्ति है, और शिष्य के द्वारा गुरुदेव के चरणों में अपने समर्पण को प्रस्तुत करने का माध्यम है। जिन शिष्यों ने इस कार्य को किया और भविष्य में भी करते रहने का संकल्प लिया है, उनके नाम निम्नलिखित हैं—

- **श्री चन्द्रमणि पाण्डेय, रीवा म० प्र०**

रीवा से प्रकाशित **"प्रजाताज"** तथा **"समस्याओं का महाकुम्भ"** नामक समाचार पत्रों में **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का विज्ञापन** दिनांक २४ मार्च १९९५ तथा २४ जनवरी १९९५ को प्रकाशित कराकर सराहनीय कार्य किया।

- **श्री सांगा महेंद्र कुमार**

ग्राम-खुंदनी, जिला दुर्ग

इन्होंने पत्रिका के विज्ञापन से सम्बन्धित **स्टीकर** बनाकर तथा **पॉलीथीन पैकेट्स** के ऊपर पत्रिका का विज्ञापन छपवा कर पत्रिका के प्रचार-प्रसार हेतु सराहनीय कार्य किया।

- **श्री पूरन लाल जी, श्री रामरूप बसन्त लाल त्रिपाठी, श्री महेश अग्रवाल एवं श्रीमती लीलावती शर्मा**

गौतम विहार, दिल्ली

इन्होंने पत्रिका के विज्ञापन हेतु **पांच हजार पम्फ्लेट** वितरित किए और **कपड़े के चार बैनर** बनाकर प्रमुख स्थानों पर लगवाये।

● **श्री प्रकाश चन्द्र शेवड़े**

सारंगपुर, जिला राजगढ़, म० प्र०

इन्होंने पत्रिका के प्रसार हेतु **दीवार लेखन** का कार्य बहुत ही आकर्षक ढंग से कर अपने शिष्यत्व का परिचय दिया।

● **श्री शिवकुमार ताम्रकार**

नजफगढ़, नई दिल्ली

इन्होंने पत्रिका के प्रसार हेतु **५०० दीवार लेखन, २००० पम्फ्लेट वितरण,** नजफगढ़-नागलोई **मेन रोड पर होर्डिंग** लगवाया और स्वप्रेरित कर लोगों को **पत्रिका सदस्य** बनाया। गुरु दक्षिणा प्रदान करने के रूप में इन्होंने इस कार्य को किया।

● **डॉ० टी० एम० धुवारे**

जि० भंडारा, महाराष्ट्र

ये **१०० दीवार लेखन, स्थानीय समाचार पत्र में प्रति सप्ताह एक बार पत्रिका का विज्ञापन** प्रकाशित कर रहे हैं, तथा स्वतः प्रेरणा प्रदान कर भी **लोगों को पत्रिका सदस्य** बना रहे हैं। इनके साथ **श्री राम जी धानूसाव चौरागड़े, श्री प्रवीण काशीनाथ सोनवाणे, श्री कमलाकर रामजी चौरागड़े** ने भी सहयोग प्रदान कर गुरु सेवा करने का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

● **श्री गुलाब कोड़ोपे**

आलमगढ़, बैतूल, म० प्र०

इस १७ वर्षीय बालक ने जगह-जगह पर **गुरु चेतना सम्बन्धी कार्यक्रम** का आयोजन कर गुरु चेतना की लहर फैलायी और लोगों को पत्रिका के बारे में बताया। **स्थानीय सिनेमा हॉल में पत्रिका से सम्बन्धित स्लाइड्स** दिखाकर प्रचार कर रहा है। स्कूल से छुट्टी मिलने पर अपने **दोस्तों के परिवार में जाकर गुरु चित्र की स्थापना** कर उन्हें पत्रिका व पूज्य गुरुदेव के बारे में परिचित कराता है। इस गुरु कार्य हेतु इसे अपने परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है।

● **श्री देवेन्द्र देव महतो**

गौरखूटी, धनबाद, बिहार

इन्होंने **स्थानीय समाचार पत्र** में पत्रिका का विज्ञापन कराया, **दीवार लेखन** किया और **लोगों को पत्रिका सदस्य** बना कर एक प्रशंसनीय कार्य किया है।

● **श्री छगन लोन्हारे**

धरमजयगढ़, रायगढ़, म० प्र०

इन्होंने पत्रिका के प्रचार-प्रसार हेतु निम्न कार्य सम्पन्न किये, और इसे भविष्य में भी करते रहने का संकल्प लिया। इस हेतु इन्हें बधाई है।

१. **१०० से अधिक दीवार लेखन।**
२. **पत्र द्वारा** अपने **मित्रों व रिश्तेदारों** को **पत्रिका सम्बन्धित जानकारी** भेज कर उन्हें पत्रिका सदस्य बनाने का प्रयास।
३. स्थानीय **बस स्टैण्ड** पर एक बड़ा **होर्डिंग** लगवाया।
४. **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान क्लब''** की स्थापना कर मित्रों के साथ प्रत्येक **रविवार को गुरु पूजन** का आयोजन।
५. अपने निवास स्थान पर प्रति गुरुवार को **सामूहिक आरती।**
६. समाचार पत्रों में **पम्फ्लेट** रखकर वितरण।
७. पत्रिका के प्रसार हेतु **लोगों के घर जाकर सम्पर्क** बनाना।

● **श्री कन्हैया लाल उपरोल एवं श्री भारत नागले**

आमला, बैतूल (म० प्र०)

इन्होंने आमला व आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थान-स्थान पर विभिन्न साधनाओं को, जिसमें प्रमुख रूप से **''गुरु साधना''** है, सम्पन्न किया। यह आयोजन ये २१/१२/६४ से प्रारम्भ कर अभी तक अनवरत् चला रहे हैं। इसके अलावा **जन प्रचार** का कार्य नियमित रूप से कर रहे हैं। पत्रिका प्रचार हेतु **१०० से अधिक दीवार लेखन** करवा चुके हैं और भविष्य में भी करते रहने का निश्चय किया है। इसके साथ ही संस्था द्वारा अयोजित होने वाले विभिन्न प्रमुख **शिविरों का भी विवरण दीवार लेखन** द्वारा जन सामान्य तक पहुंचाते हैं। इस कार्य में निम्नांकित लोगों का पूर्ण तन-मन-धन से इन्हें सहयोग मिल रहा है, और इस प्रकार इन्होंने **''सिद्धाश्रम साधक परिवार''** के सदस्य होने का परिचय दिया है।

''श्री दयाराम दौताराम उपाले, श्री इन्द्र कुमार सिंह, श्री नरेश प्रजापति, श्री भारत नागले, श्रीमती रमा ठाकुर, श्री एवं श्रीमती जयराम टिटारिया, वन्दना टिटारिया, श्री पंजाबराव खातकर, श्री बसंत अतुलकर, श्री हेमन्त सिसोदिया, गीता, कैलाश, शान्ति सिसोदिया, राजा सिसोदिया, विनोद सिसोदिया, गौरी सिसोदिया, वासुदेव सिसोदिया, श्री व श्रीमती शुक्ला, श्री व श्रीमती सोलंकी, श्री व श्रीमती मारोतीराव कनाठे, सुखदेव नारे बड़े भइया और छोटे भइया, माता जी नारे, कमल अतुलकर, नानकराम चौकिकर और इनका पूरा परिवार, राजू बघेड़े, रूप सिंह, श्री व श्रीमती सत्यनारायण, लक्ष्मी बाई प्रजापति, सुरेश प्रजापति।''

● **श्री अरविन्द सिंह एवं डॉ० साधना सिंह**

भोपाल, म० प्र०

इन्होंने भोपाल के मुख्य सड़क पर पत्रिका के विज्ञापन हेतु सड़क के मध्य में स्थित खम्भों तथा शहर के प्रमुख स्थानों पर लगभग **५० छोटे होर्डिंग बोर्ड** एवं **तीन बड़े होर्डिंग बोर्ड** लगवा कर अपना सहयोग प्रदान किया।

इन सभी शिष्यों को पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद प्रदान किया है, जिससे ये अपने जीवन में मान-सम्मान, सम्पन्नता एवम् साधनात्मक पूर्णता प्राप्त कर सकें।

पत्रिका कार्यालय की ओर से भी इन समस्त गुरु भाई एवम् बहिनों को बधाई है।

– उपसम्पादक ●

सद्गुरुदेव जन्मोत्सव
जब सम्पूर्ण विश्व
कस्तूरी की तरह महकने लगा

उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मोती लाल जी वोरा पूज्य गुरुदेव को सम्मानित करते हुए

जीवात्मा का परमात्मा से मिलन . . . उस क्षण को देखकर तो यही अनुभव हो रहा था— "गुरुरेव परब्रह्म" अर्थात् गुरु ही ब्रह्म है, इस बात के साक्षी तो वे लोग हैं, जो प्रयाग में, हजारों-लाखों की तादाद में आकर गुरुदेव के उस षष्ठीपूर्ति महोत्सव का आनन्द ले रहे थे, ऐसा लग रहा था, जैसे स्वयं भगवान शिव ही वहां उपस्थित हो गये हों, और सारा पण्डाल उनके इस रूप सौन्दर्य का रसास्वादन कर आनन्द से ओत-प्रोत हो रहा हो, एक तरफ गायन-वादन, तो दूसरी तरफ नृत्य गन्धर्वों और अप्सराओं की ही उपस्थिति का भान करा रहे थे, मानो वह कोई पृथ्वी लोक नहीं, अपितु देव लोक हो, जहां सिंहासन पर स्वयं पूज्य गुरुदेव शिव रूप में और गुरु माता पार्वती के रूप में साक्षात् विराजमान हैं।

इलाहाबाद की वह पावन भूमि, जहां शिविर का आयोजन किया गया था, भले ही वह एक छोटी-सी सिद्धस्थली हो, किन्तु
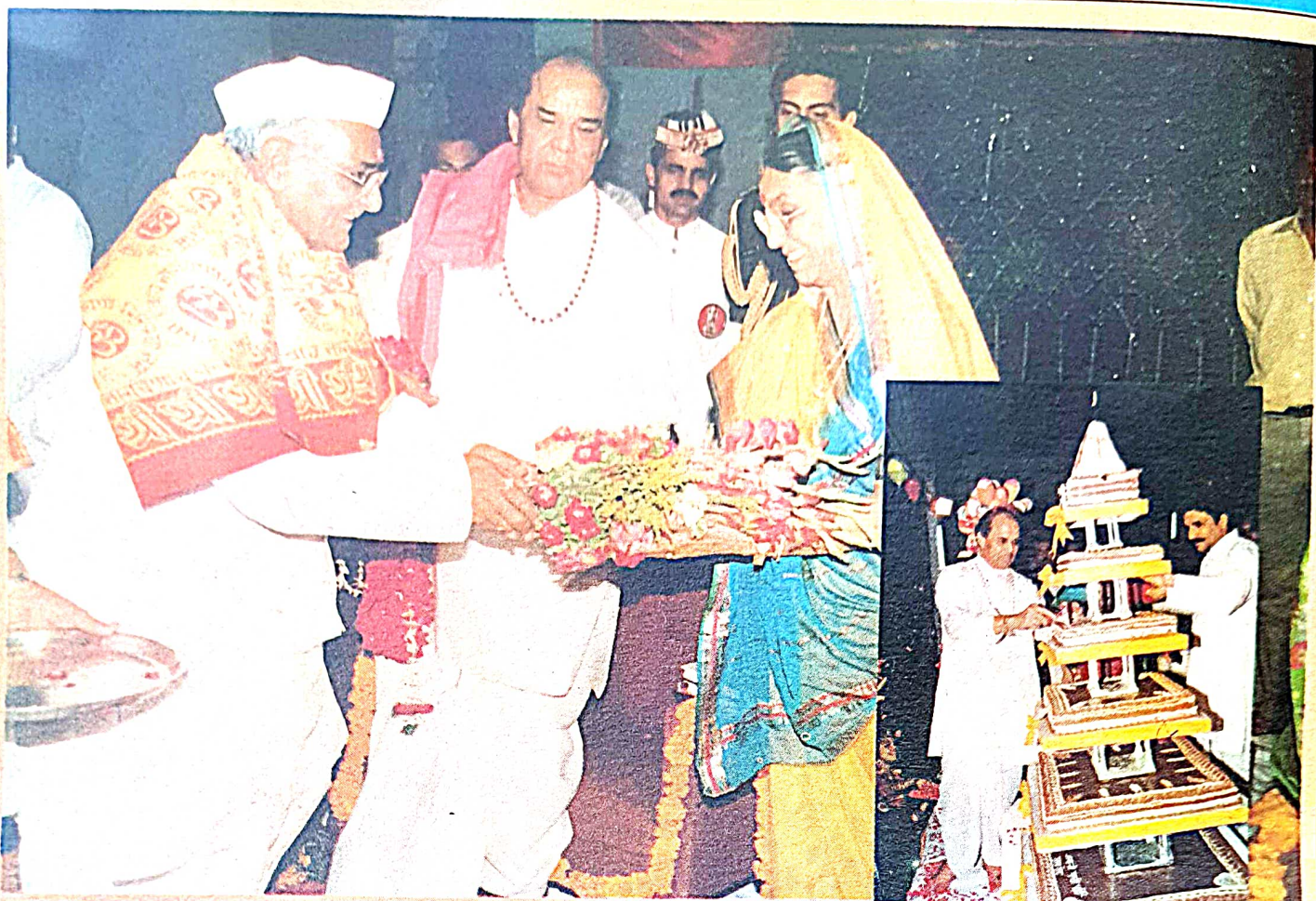
उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मोती लाल वोरा जी पूज्यनीया माताजी को सम्मानित करते हुए

सात फीट ऊंचा व ६० किलो का केक, जो गुरु जन्मोत्सव पर बनाया गया

उस भव्य और अनिवर्चनीय आनन्द को देखकर तो ऐसा लग रहा था, कि वह कोई विष्णु लोक हो, जिसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था, उस चार दिवसीय शिविर में थी ही इतनी दिव्यता, अलौकिकता, अद्वितीयता, कि वहां उपस्थित समूह एकटक उस दृश्य को देखकर अपनी आंखों में उसे बंद कर लेना चाहता था, जिससे कि वह क्षण भर भी उस आनन्द के रोमांच से अछूता न रह जाये, और उसी रस में निमग्न हो सब कुछ भूल कर केवल मात्र उसी में लीन ही रहे, उस देव लोक से निकल कर फिर वापिस पृथ्वी लोक में, जो एक ऐसी दलदल है, जिसमें मनुष्य धंसता ही चला जाता है, उससे उभर कर या उससे निकल कर जीवन का आनन्द, जीवन का लाभ नहीं उठा पाता, वहां लौटना नहीं चाहता, और उस स्वर्ग से वापिस नरक में जाना भी कौन चाहेगा . . . ?

और वास्तविक जीवन केवल मात्र चार दिनों का ही है, यह तो उस अद्‌भुत शिविर को देखकर ही ज्ञात होता है, जीवन्तता, रसमयता, चैतन्यता क्या होती है, यह तो उस शिविर में उपस्थित लोगों से ही जाना जा सकता है, किन्तु कोई भी उस आनन्द की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता, क्योंकि यह तो अव्यक्त है, अनिवर्चनीय है, जिसे कुछ शब्दों में बांधा ही नहीं जा सकता, उसे तो केवल मात्र अनुभव किया जा सकता है।

इस शिविर में प्रयाग भूमि पर उनका सम्मान करने के लिये माननीय **श्री मोतीलाल जी वोरा** और उनकी धर्म पत्नी **श्रीमती वोरा जी** (उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला) वहां पर उपस्थित थीं। इससे पहले भी गुरुदेव वहां के श्रेष्ठ एवं उच्च विद्वानों द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं, और सभी ने उनके कार्यों को तथा उनकी गूढ़तम विद्याओं को, जो कि संस्कृत में कठिन और दुर्बोध हो गई थीं, जिन्हें उन्होंने सरल भाषा में जन-जन के सामने अभिव्यक्त किया था, उसकी सराहना की थी।

इस राजनीति के पंक में जिस प्रकार से श्री मोतीलाल जी वोरा, जिनका चरित्र बेदाग माना जाता है, गुरुदेव के सम्मान में जिन शब्दों का प्रयोग कर रहे थे, वे उनके मुख से अनायास ही उस भव्य आयोजन और पूजनीय गुरुदेव के अलौकिक व्यक्तित्व को देखकर फूट रहे थे, उसमें तनिक मात्र भी बनावटीपन नहीं था, उन्होंने कहा— **"सचमुच यह हम लोगों के लिए अति प्रसन्नता की बात है, कि डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी अपने जन्मदिवस के शुभ अवसर पर प्रयाग में, जो विद्या की नगरी है, जहां गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियों का संगम है, ऐसी स्थली पर हम**

लोगों के बीच उपस्थित हैं, जिन्होंने दुर्लभ साधनाएं की हैं, जो साधनाएं आज सामने प्रत्यक्ष रूप से दिख रही हैं। उन्होंने कहा, कि मेरा उनसे एक ही बार साक्षात्कार हुआ और यह मेरे लिये अत्यन्त सौभाग्य की बात है, किन्तु आप तो मुझसे भी ज्यादा सौभाग्यशाली हैं, जो ऐसे संत के, ऐसे ज्ञानी के निरन्तर दर्शन करते रहते हैं, और वह भी इस भौतिकवादी शरीर से नहीं, जो ज्ञान उन्होंने अपनी पुस्तकों के माध्यम से दिया है, जो ज्ञान उन्होंने प्रवाहित किया है, वह कोई सैकड़ों-हजारों लोगों को लाभान्वित नहीं कर रहा है, वह लाखों और करोड़ों लोगों को न केवल इसी

उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मोती लाल वोरा पूज्य गुरुदेव को सम्मान पत्र देते हुए

मुल्क में, अपितु इस मुल्क के बाहर भी प्रभावित कर रहा है, और ऐसे विद्वानों के कारण ही भारत शिरोमणि है, और बाहरी मुल्क में भी अब इस बात को मानने लगे हैं, कि भारत आज भी वही गुरुता प्रदान कर सकता है।''

पूजनीय गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी ने भी अपने षष्ठीपूर्ति जन्मोत्सव के अवसर पर उन्हें उपहार स्वरूप एक विशेष माला अर्पण की, जिसका एक-एक मनका ज्योतिर्मय मंत्र (संसार का सर्वश्रेष्ठ मंत्र) जो उन्नति, सफलता, पूर्णता, श्रेष्ठता और ईश्वर-भक्ति, जिस मंत्र का विधान हमारे यजुर्वेद ने किया है, उपनिषद ने किया है, उस प्रत्येक मनके पर उसका सवा-सवा लाख जप करके इस माला को तैयार किया गया है, वह माला महामहीम राज्यपाल महोदय को गले में पहिनाकर उनके यशोगान, उनकी उन्नति की कामना की।

और २१ अप्रैल के दिन इस कौस्तुभ जयन्ती के अवसर पर स्थानीय आयोजकों के निमन्त्रण पर पूज्य गुरुदेव को हार्दिक बधाई देने के लिये श्री नारायण दत्त तिवारी भी वहां उपस्थित हुए, और उस भव्य शिविर को देख, उनके चिन्तन, उनकी विचारधारा, उनके तथा शिष्यों के मनोभावों को देख, अति प्रसन्न हो उन्होंने गुरुदेव को हृदयांजलि अर्पित की और कहा— ''कैसे मैं दो शब्दों में उनके व्यक्तित्व और इस सुअवसर के महत्त्व का विश्लेषण करूं, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है, क्योंकि जो उनके जीवन का गहन चिन्तन है, शिष्यों को जो उन्होंने अर्पित किया और मानवता के प्रति उनकी देन, उनकी महानता, उनके साधुवाद का दो शब्दों में विश्लेषण कर सकूं, बड़ा कठिन है। इतने तप के बाद, हिमालय के पत्थरों में टक्कर खाने के बाद उन्हें देखकर यह नहीं कहा जा सकता, कि यह उनका 'षष्ठीपूर्ति महोत्सव' है। आज भी इन को देख कर लगता है, कि ये चिरयुवा हैं। इनके

तारुण्य की छटा-आभा, जो चारों ओर छिटक रही है, उसे देखकर तो ऐसा लगता है, कि ये ''जीवेम शरदः शतम्'' की उक्ति को चरितार्थ करेंगे। इन्होंने मानवता को सार्थकता प्रदान की है, वह भी मानवों में मानवीय बनकर, इसे देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है'', और गुरुदेव ने भी उन्हें अपने आशीर्वचनों से सम्मानित किया, तथा उनके आने पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की।

इस प्रकार प्रयाग की उस नगरी में विशाल, भव्य समारोह के अवसर पर वहां के आयोजक **श्री सुरेन्द्र कुमार मिश्रा, श्री श्यामल कुमार बनर्जी** तथा **गुरु सेवक श्रीवास्तव जी** के विशेष अनुग्रह पर श्री मोतीलाल जी वोरा और श्रीमती वोरा तथा श्री नारायण दत्त तिवारी जी ने जन्मदिवस के अवसर पर गुरुदेव को हार्दिक बधाई देते हुए प्रयाग परिषद की ओर से **''विद्वत शिरोमणि''** तथा **''श्री भारती''** पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया एवं साथ ही **५ लाख का चैक,** जो कि समस्त साधकों के द्वारा इकट्ठी की गई धनराशि थी, राज्यपाल के द्वारा उन्हें सौंपा गया। **श्रीमाली जी ने उस ५ लाख की राशि को पुनः उन्हें लौटाते हुए कहा– कि ''इस धनराशि का उपयोग आध्यात्मिक कार्यों व जन साधारण के हित के लिये व्यय करें,''** यह गुरुदेव के त्याग की मिसाल है।

सभी ने श्रीमाली जी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा, कि--इस अकेले व्यक्तित्व ने अपनी सरस्वती साधना और ध्येय निष्ठा के द्वारा गुरु-शिष्य के पावन सम्बन्धों, सान्निध्य सर्जन शिविरों आदि के माध्यम से पांच हजार वर्ष पुरानी आर्य ऋषियों की परम्परा को विश्व भर में पुनः प्रतिष्ठापित करने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है।

२१ अप्रैल का वह **''कौस्तुभ जयन्ती महोत्सव''** तो वास्तव में ही अवर्णनीय है, उस दिन गुरुदेव ने उपहार स्वरूप अपने शिष्यों को विशिष्ट दीक्षाएं प्रदान कर उन्हें विशेष आशीर्वाद प्रदान किया, तथा वे अपने जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता और अद्वितीयता प्राप्त कर सकें, इस वरदान को देकर उन्हें धन्य-धन्य कर दिया।

गुरुदेव के जन्मोत्सव पर, जिस दिन का इन्तजार बड़े-बड़े सिद्धाश्रम के ऋषि-मुनि बड़ी बेसब्री से करते हैं, उस दिन ६० किलो का ६ खण्डों में विभाजित ''केक'' इलाहाबाद के आयोजकों की तरफ से बनवाया गया, और उस अवसर को देखकर तो ऐसा लग रहा था, मानो वह कोई जन्मदिवस नहीं, अपितु शिव और पार्वती का विवाह समारोह हो. . . जिस उमंग, मस्ती, प्रसन्नता के साथ आनन्दमग्न हो वहां का एक-एक व्यक्ति नाच-गाकर उन्हें जन्मदिन की बधाई दे रहा था, उन शब्दों तथा पूज्य गुरुदेव के जय-जयकार
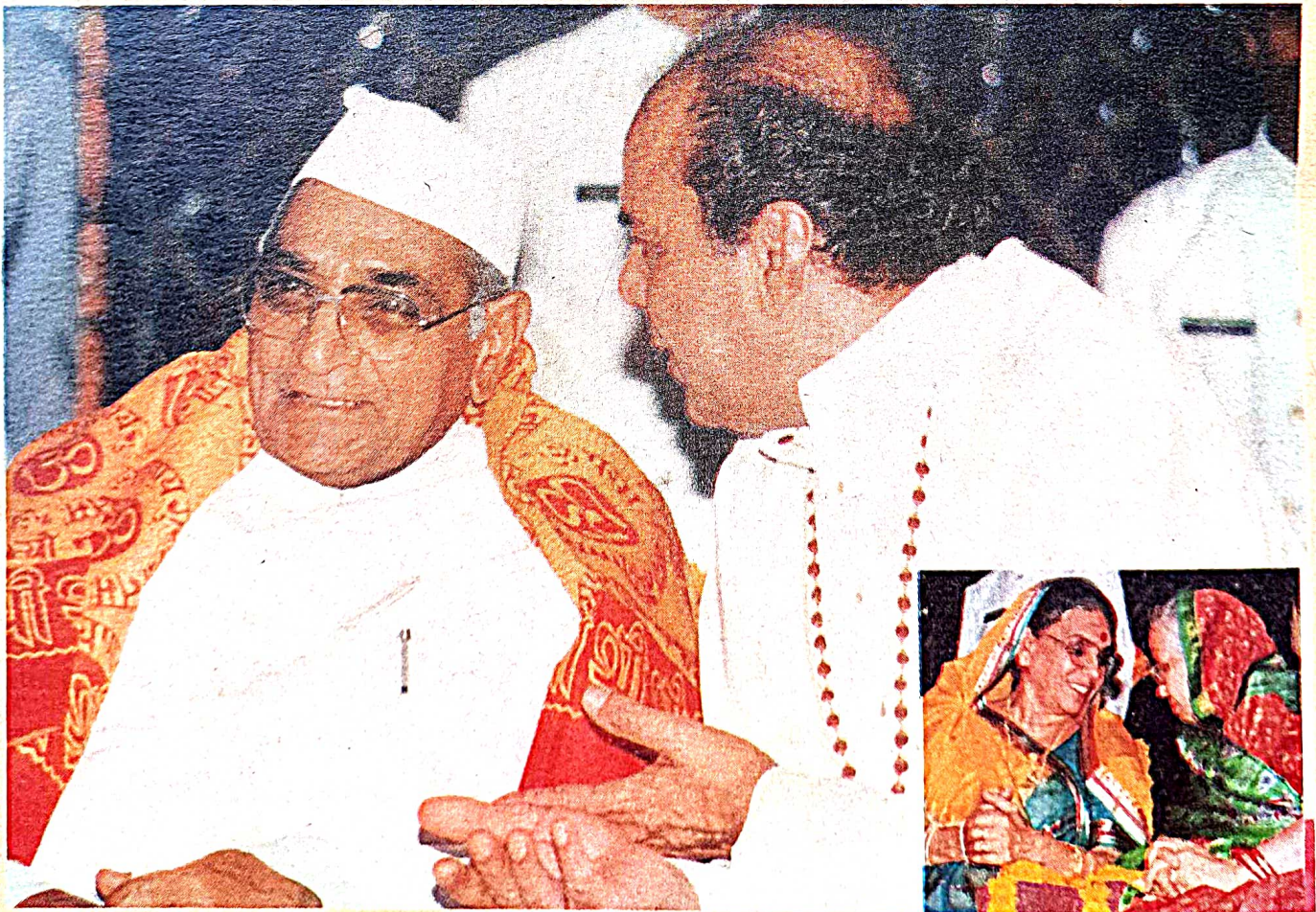
श्री मोती लाल वोरा जी पूज्य गुरुदेव के साथ

उ०प्र० की प्रथम महिला माननीया श्रीमती वोरा पूज्यनीया माता जी से बातचीत करती हुई।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री नारायण दत्त तिवारी जी पूज्य गुरुदेव को सम्मान पत्र देते हुए

की ध्वनि से पूरा पण्डाल ही नहीं, अपितु पूरा इलाहाबाद ही गुंजायमान हो रहा था, एक हफ्ते पहले से ही भीड़ गुरुदेव को बधाई देने के लिए उमड़-घुमड़ कर आ रही थी, उनकी बढ़ती संख्या को देखकर पण्डाल भी छोटा पड़ गया था, लोग आयोजन स्थल के बाहर से खड़े होकर, झांक-झांक कर उनके दर्शन और उनके शब्दों को सुनने के लिये लालायित थे . . . क्योंकि ऐसा ही था वह शिविर, जिसके बारे में कुछ शब्दों में कहना सम्भव ही नहीं असम्भव है।

कौस्तुभ जयंती महोत्सव के भव्य आयोजन में दूर-दूर से आये साधकों, शिष्यों के साथ ही साथ इलाहाबाद के प्रबुद्ध नागरिकों ने भी भाग लिया। इलाहाबाद की जनता में इस जयंती के महत्त्व को प्रचारित व प्रसारित करने में बहुत बड़ा हाथ पत्रकारों का भी रहा है। विभिन्न समाचार पत्र, जिनकी गणना इलाहाबाद ही नहीं, पूरे भारत के समाचार पत्रों के अन्तर्गत की जाती है, उन समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों ने इस आयोजन के प्रत्येक क्षण का सूक्ष्मता से अवलोकन करते हुए जनता को **''सिद्धाश्रम साधक परिवार''** की गतिविधियों से परिचित करवाया। पत्रकार वार्ता के अंतर्गत **गुरु सेवक** ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा— ''इस समाज में भारतवर्ष ही नहीं, पूरे विश्व में, जन-जन के हृदय में, उनके मानस में, किसी भी कार्य के प्रति जागृति पैदा करने में समाचार पत्रों का बहुत बड़ा हाथ होता है।''

सामाचार पत्र वे माध्यम हैं, जिनके द्वारा सत्य की आवाज को जन-जन तक पहुंचाना अत्यधिक सहज है, क्योंकि समय-समय पर सोई हुई जनता को जगाने के लिए विभिन्न महत्त्वपूर्ण समाचार पत्रों के लिए कार्यरत पत्रकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से अत्यधिक सहयोग प्रदान किया है।

निश्चित रूप से पत्रकारों ने आयोजन का अत्यधिक सूक्ष्मता से अध्ययन कर वास्तविकता को जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया। इन समाचार पत्रों में प्रमुख समाचार पत्र हैं— आज, राष्ट्रीय सहारा, ऑवर लीडर, चेतना विचारधारा, प्रयागराज टाइम्स, न्यूजलीड, स्वतंत्र भारत, अमर उजाला, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय अभ्युदय तथा विभिन्न स्थानीय समाचार।

धर्म संकीर्ण हो सकता है अध्यात्म नहीं समाचार पत्र **''आज''** में प्रकाशित इस समाचार के अनुसार **डॉ० श्रीमाली जी** ने कहा, कि ''यदि हम अध्यात्म का विस्तार करते हैं, तो लड़ाई-झगड़े एवं हिंसा की घटनाएं रुक सकती हैं। भारत का स्वर कभी भी दैन्य नहीं रहा, उदात्त ऋषि परम्परा के गौरव से स्वयं

को ब्रह्म घोषित कर पूर्णता से जीवन यहीं के लोग जीये हैं।

समाचार पत्र **''राष्ट्रीय सहारा''** के अनुसार– **मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ विद्या है मंत्र-तंत्र की साधना।**

''प्रयागराज टाइम्स'' में प्रकाशित समाचार के अनुसार **धर्म सत्कर्मों के लिए जीवनोत्सर्ग की प्रेरणा देता है– ''डॉ श्रीमाली जी''** के आदर्शों तथा प्रयासों की मुक्त कण्ठ से सराहना की, कि वे निश्चल भाव से जो समाज सेवा कर रहे हैं, वह अनुकरणीय है।

इसी समाचार पत्र में २१ अप्रैल को प्रकाशित एक अन्य समाचार के अनुसार– **मेरे पास गूढ़ विद्याओं का खजाना है– श्रीमाली।** पिछले तीन दिनों से यह नगर और सिविल लाइन्स क्षेत्र आध्यात्मिक शौर्य में तप रहा है। श्री श्रीमाली जी के भक्ति रस में डूबे विभिन्न प्रान्तों के इन भक्तों को देखकर लगता है, जैसे इस निश्चल भक्ति के सिवा और कहीं डूबने-उतरने का समय उनके पास नहीं है।

महात्माओं की संस्कृति नष्ट नहीं हो सकती इस शीर्षक के अनुसार "जिस देश में समय-समय पर ऐसे साधक, महात्मा तथा ज्ञानी जीवन धारण करते रहे हों, उसे देश की संस्कृति कभी नष्ट नहीं हो सकती। १८ अप्रैल को इस षष्ठीपूर्ति महोत्सव के कार्यक्रम का संचालन **अखिल भारतीय विद्वत परिषद** की प्रयाग शाखा के महामंत्री **श्रीधर शास्त्री जी** ने किया।

''दैनिक जागरण'' में प्रकाशित एक समाचार **नई समस्याओं को हल करने के लिए साधना करना जरूरी** शीर्षक के अन्तर्गत कहा, कि "आज देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है, नई-नई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, इन समस्याओं का हल करने के लिए साधना की जानी चाहिए।" **सिद्धाश्रम संस्था** ने साधना की जो अद्‌भुत मिसाल पेश की है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है, और भारत की महान विद्याओं तथा परम्पराओं को जीवंत रखने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन जरूरी है।

इस समाचार में प्रकाशित एक अन्य समाचार– **२१ वीं सदी में न कोई हिंसा होगी न कोई रक्तपात चाहेगा।**

''राष्ट्रीय अभ्युदय'' के अनुसार– **प्रेम और भक्ति में डूबा एक अनोखा साधना शिविर।**

"डॉ० श्रीमाली" ने अपने शिष्यों को परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने की विधियां बताईं, साथ ही यह भी कहा, कि **''मानव के समग्र विकास से ही समृद्धशाली विश्व का निर्माण सम्भव है।''** चेहरे पर अद्‌भुत तेज रखने वाले डॉ० श्रीमाली जहां भी जाते हैं, वहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है। त्रिदिवसीय साधना शिविर का शुभारंभ उत्तर प्रदेश के राज्यपाल माननीय **श्री मोतीलाल जी वोरा** ने किया।

समाचार पत्र **"Our Leader"** के अुनसार–

Shri Moti Lal Vora paying his compliments to Dr. N.D. Shrimali, the Governor lauded his sincere and selfless efforts to promote and spread the 5000-year-old Indian culture.

Dr. Shrimali blessed Sh. Vora and Smt. Vora and others present there.

समाचार पत्र **''अमर उजाला''** में प्रकाशित– **परमार्थ से महत्त्वपूर्ण कोई दूसरा कार्य नहीं।** कौस्तुभ जयंती पर राज्यपाल का सम्बोधन और एक अन्य समाचार का मुख्य शीर्षक– **जीवन की पूर्णता समृद्धि, सुख और सौभाग्य में है– श्रीमाली।**

"Newslead" में प्रकाशित समाचार – Mr. Vora congratulated Dr. N.D. Shrimali on his 60th birthday and lauded his efforts to spread and publicise the message of Indian Cultural tradition. The Governor earlier lighted the sacred lamp to formally inaugurate the Sadhana Camp.

Incidentally Dr. Shrimali, was also awarded Mahamahopadhyay title at Allahabad 20 years ago by the then Vice President of India Mr. B.D. Jatti.

★★★★★★★

जब गुरुदेव को सम्मानित कर सम्मान स्वयं धन्य हो गया

रविवार दिनांक **७ मई १९९५** रवि पुष्य योग तो था ही, भगवान परशुराम की जयंती को भव्य स्तर पर, भव्य आयोजन का रूप दिया **''अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा''** के पदाधिकारियों ने। दिल्ली महानगर में एक अपूर्व उत्साह का वातावरण बन गया था। आयोजन स्थल **ताल कटोरा स्टेडियम** हजारों बुद्धिजीवियों, सन्त, महात्माओं, विचारकों, विभिन्न क्षेत्रों के उद्‌भट्ट विद्वानों के साथ ही शीर्षस्थ राजनैतिक हस्तियों, पत्रकारों का इतना बड़ा समूह ब्राह्मण सभा के अधिवेशन में इससे पहले कभी एकत्र नहीं हुआ।

भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा रखने वाले समर्पित नर-नारी, युवक-युवतियों, कार्यकर्त्ताओं से पूरा स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था, परन्तु इन सब में पीताम्बरधारी हजारों उत्साहपूरित **''सिद्धाश्रम साधक परिवार''** के साधकों का उत्साह पूरे वातावरण को द्विगुणित कर रहा था, सभी की दृष्टि बार-बार मंच की ओर ही इस बात को देखने जा रही थी, कि हमारे हृदय आराध्य परम पूज्य गुरुदेव **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** किसी भी क्षण वहां पधार सकते हैं, और अभिजित मुहूर्त में वह क्षण भी आया, जब पूज्य गुरुदेव ने मंच पर स्थान ग्रहण किया, तुमुल जयघोषों से पूरा वातावरण ही आर्य संस्कृति के अनुरूप सांस्कृतिक और ब्रह्म चेतना

अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के आयोजन में पूज्य गुरुदेव एवं दांयी ओर द्वारिका के शंकराचार्य श्री स्वरूपा नन्द जी महाराज

द्वारिका पीठ के शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्द जी स्वयं गुरुदेव को ''ब्रह्मर्षि'' की उपाधि देकर उनके सम्मान पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए

से व्याप्त हो गया।

मंच पर केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री **श्री विद्या चरण शुक्ल,** भूतल परिवहन मंत्री **श्री जगदीश टाइटलर,** पाण्डिचेरी की उपराज्य पाल **श्रीमती राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी,** वाहरी दिल्ली के लोकसभा सदस्य और विख्यात श्रमिक नेता **श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा,** हरियाणा के सांसद एवं पूर्व शिक्षा मंत्री **श्री चिरंजी लाल शर्मा,** संसद एवं विख्यात अभिनेता **श्री सुनील दत्त,** मध्य प्रदेश के राज्यसभा सदस्य **श्री सुरेश पचौरी,** उत्तर प्रदेश के **श्री लोकपति त्रिपाठी** के अतिरिक्त अनेक विधायक एवं उच्च पदाधिकारी मंचासीन थे। श्री सुनील दत्त को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिये **''परशुराम सद्भावना पुरस्कार''** दिये जाने के पश्चात् द्वारिका पीठ के जगद्गुरु **शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द** जी ने भगवत्पाद गुरुदेव **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** को अपने हांथों से मंत्र, कर्मकाण्ड, तंत्र एवं ज्योतिष जैसे दुरूह ज्ञान को जन-जन में सुलभ करने तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में यज्ञों, साधनाओं एवं निर्भीकतापूर्वक शांति, सदाचार एवं सभी वर्गों को एक सूत्र में आबद्ध करने हेतु **''ब्रह्मर्षि''** उपाधि एवं

भगवान परशुराम ज्योतिष तंत्र शक्ति पुरस्कार से सम्मानित कर सम्मान स्वयं धन्य हो गया

सम्मान पत्र

सम्पूर्ण जीवन में स्वच्छता, पवित्रता,
दिव्यता, तेजस्विता एवं भारत की प्राचीन
गूढ़ विद्याओं को समस्त भारत वर्ष में आलोकित करने,
मंत्र, कर्मकाण्ड, तंत्र एवं ज्योतिष जैसे दुरूह ज्ञान को जन-जन
में सुलभ करने तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में यज्ञों, साधनाओं एवं निर्भीकतापूर्वक
शांति, सदाचार तथा सभी वर्गों को एक सूत्र में आवद्ध करने के फलस्वरूप

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

को यह महासभा इस ब्रह्मर्षि को श्रद्धा एवं सम्मान के साथ

परशुराम ज्योतिष एवं तंत्र शक्ति पुरस्कार

से सम्मानित करते हुए अपने आप को
सौभाग्यशाली एवं गौरवान्वित अनुभव करती है।

श्रद्धेय श्री स्वरूपानन्द जी सरस्वती
द्वारिकापीठ शंकराचार्य

ब्राह्मण महासभा में पूज्य गुरुदेव को प्रदान किया गया सम्मान पत्र

"परशुराम ज्योतिष एवं तंत्र शक्ति पुरस्कार" से सम्मानित किया, तो जयघोष का ऐसा ज्वार उठा, जो थमने का नाम ही नहीं ले रहा था।

वर्तमान युग में पूज्य गुरुदेव को ब्रह्मर्षि सही रूप में निरूपित किया, क्योंकि उन्होंने मंत्र-तंत्र, ज्योतिष देव दुर्लभ साधनाओं, आयुर्वेद आदि लुप्तप्रायः गूढ़ विद्याओं को खोज निकालने, उसे प्रामाणिकता की कसौटी पर कसकर अपनी तपस्या, साधना के द्वारा अहर्निश कठोर परिश्रम कर ग्रंथों, पत्रिकाओं साधना शिविरों, सम्मेलनों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने में ही अपने पूरे जीवन को खपा दिया है। जब उनको मंच पर बोलने के लिये आमंत्रित किया तो उन्होंने दो टूक शब्दों में स्पष्ट किया, कि "**ब्रह्म को जानने वाला ही ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी है, चाहे वह किसी भी जाति या वेशधारी, भापाभाषी ही क्यों न हो**" उन्होंने यह भी कहा, कि "इसी ब्रह्म तेज के चेतना-संचार के द्वारा ही प्राणी गात्र के कष्टों और न्यूनताओं को दूर कर भौतिक और आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान की जा सकती है। उनका कहना था, कि इन विद्याओं के माध्यम से भारत पूर्व की भांति एक बार पुनः सम्पूर्ण विश्व का सक्षम मार्ग दर्शन करने में समर्थ हो सकेगा। पिछले कुछ वर्षों के परिश्रम से अब यह स्पष्ट हो गया है, कि भारत का यह गौरव और इन विद्याओं की प्रामाणिकता और पूरे विश्व समाज में उसकी स्वीकृति पराकाष्ठा की ओर है, और गूढ़ विद्याओं के माध्यम से इसी ब्रह्म ऊर्जा और दिव्य चेतना को प्रत्येक मानव तक पहुंचाने में विनम्रता पूर्वक मैं पूरी तरह संकल्पित होकर आजीवन इसी कार्य को करता रहूंगा। पूज्य गुरुदेव की वाणी में उस समय जो दैवीय प्रभाव और मुखमण्डल में, जो दैदीप्त आभा दमक रही थी, वह इस बात का प्रतीक थी, कि निश्चय ही वे इस कार्य को पूरा करके रहेंगे, और यही कारण था, कि उनकी इन घोषणाओं का जोरदार जयघोष करतल ध्वनि से पूरे स्टेडियम ने स्वागत किया।

उनकी इस घोषणा की अमिट छाप श्रोताओं और मंचासीन विशिष्ट व्यक्तियों के चेहरों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही थी।

पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और उनके उद्‌बोधन से वातावरण इतना अधिक प्रभावित हो गया, कि मुख्य अतिथि जगद्‌गुरु शंकराचार्य ने अपने उद्‌बोधन में स्वयं इन विद्याओं का उल्लेख किया, और गुरुदेव की ओर इंगित करते हुए उन्होंने इस बात की पुष्टी की, कि प्रत्येक मानव की पूर्णता-प्राप्ति के लिये शक्ति की आराधना का सहारा ही एकमात्र मार्ग है, इतना ही नहीं, उन्होंने कार्य की समाप्ति के समय विशेष प्रतिनिधि के माध्यम से गुरुदेव के प्रति विशिष्ट अभिवादन भिजवाया। इन क्षणों पर हम यह सोचने के लिये बाध्य हो गये, कि वास्तव में उनके चरणों से जुड़े हुए हम सभी शिष्य कितने धन्य हैं, जिन्हें पूज्य श्री चरणों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त है, जिनके चरणों में दो पल का भी सान्निध्य प्राप्त करने के लिये ऐसी-ऐसी दिव्य विभूतियां भी लालायित हैं।

हमें तो ऐसा ही लगता है, कि आज का आयोजन एक ऐसा क्षण था, जब पूज्य गुरुदेव को सम्मानित करने में पूरा ताल कटोरा स्टेडियम ही अपने-आप को धन्य मान रहा था, और उन्हें सम्मानित कर स्वयं 'सम्मान' शब्द भी अपने-आप को सम्मानीत अनुभव कर रहा था।

– गीतिका कल्पित

हमारे जीवन की इच्छाएं अनन्त हैं और यह साधना अनन्त इच्छाओं की पूर्ति में सहायक है

अनन्त संसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव।
अनन्तरूपे विनियोजितात्मा ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।।

हे विष्णु देव! इस अनन्त भव सागर में मैं डूब रहा हूं, मुझे आपके सिवाय कोई सहारा नहीं दिख रहा है, आप ही मेरा उद्धार करें तथा अपने अनन्त स्वरूप में मुझे समाहित कर लें।

हे अनन्त स्वरूप! मैं आपको बार-बार प्रणाम कर रहा हूं, आप मेरी समस्त न्यूनताओं और पापों का विनाश कर मेरी मनोकामनाओं को पूर्ण करें।

बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक व्यक्ति के जीवन में हर क्षण इच्छाएं व्याप्त रहती ही हैं, जो कभी खत्म नहीं होतीं, एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी, तीसरी के बाद चौथी. . . मृत्योपरान्त भी उसमें मोक्ष की इच्छा व्याप्त रहती ही है।

जब मनुष्य है, तो इच्छाएं भी होंगी, और अगर इच्छाएं नहीं हैं, तो फिर वह मनुष्य भी नहीं है, प्रत्येक मानव की यह इच्छा होती है, कि वह अच्छे-से-अच्छा खाए, अच्छे-से-अच्छा पहिने और भली प्रकार तथा व्यवस्थित ढंग से अपने जीवन का निर्वाह कर सके, जिसके लिए उसे पग-पग पर संघर्षशील बने रहना पड़ता है, किन्तु इतनी मेहनत और प्रयत्न करने पर भी वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में असफल ही रहता है, . . अक्षम ही रहता है, और फिर इस प्रकार उसे एक अधूरा, एक निराशाजनक जीवन जीना पड़ता है. . . क्योंकि उसकी इच्छाएं अनन्त हैं, असीमित हैं, और उन इच्छाओं की पूर्ति करना सामान्य

मनुष्य के बस की बात नहीं है।

किन्तु यदि **'अनन्त चतुर्दशी'** के दिन **'अनन्त साधना'** सम्पन्न की जाय, तो व्यक्ति की मनेच्छाएं स्वतः ही पूर्ण होने लगती हैं, फिर उसके कार्य अधिक परिश्रम किये बिना ही सहज रूप से सम्पन्न होने लगते हैं, क्योंकि अनन्त साधना सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली, कल्याणकारी और सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली एकमात्र साधना है, जिसे **भाद्र पद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी** को सम्पन्न किया जाना ज्यादा श्रेयस्कर है, ज्यादा हितकारी है, क्योंकि सही क्षणों को पकड़ना मानव-जीवन की सफलता का मूल रहस्य है।

भविष्य पुराण के अनुसार – भगवान् विष्णु अपने कृष्ण स्वरूप में युधिष्ठर को इस दिन इस साधना का महत्त्व समझाते हुए कहते हैं –

''अनन्त मेरा ही नाम है, संसार का भार उतारने तथा दानवों का विनाश करने के लिए वसुदेव के कुल में मैं ही उत्पन्न हुआ हूं, अतः मेरे अनन्त रूप की साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति की समस्त इच्छाएं, कामनाएं स्वतः ही पूर्ण हो जाती हैं।''

उदित होते हुए सैकड़ों सूर्य के समान तेजस्वी तप्त, स्वर्ण के समान जिनके अंग की कांति है, पृथ्वी एवं लक्ष्मी जिनकी सेवा में निरन्तर रत हैं, जिन्होंने रत्न जड़ित आभूषण, पीताम्बर धारण कर रखा है तथा जिनके चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म सुशोभित हैं, ऐसे दिव्य स्वरूप वाले ''श्री अनन्त विष्णु'' को मैं नमन करता हूं।

अनन्त का अर्थ है— असीमित शक्ति। इस साधना के द्वारा व्यक्ति में वे सभी शक्तियां समाहित हो जाती हैं, जिसके द्वारा वह जीवन में आने वाले प्रत्येक उतार-चढ़ाव को धैर्य के साथ पार करने में सक्षम हो जाता है। साधनाएं अनेक हैं, किन्तु अनन्त साधना लघु परिश्रम से ही उस मंजिल तक पहुंचा देती है, जहां पर पहुंचना ही मनुष्य-जीवन की श्रेष्ठता मानी जाती है।

इस तरह की श्रेष्ठ और गुह्य साधनाओं को यथा समय अवश्य सम्पन्न कर लेना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी हम प्रमादवश या नासमझी से साधनाओं के रहस्य को समझ नहीं पाते या समझने की कोशिश नहीं करते, जो कि हमारे लिए अत्यन्त ही लाभकारी होती हैं। बुद्धिमानी इसी में है, कि इनका यथा समय लाभ उठाते रहना चाहिए, क्योंकि गृहस्थ जीवन समस्याओं का आगार है... और किस समय कौन-सी समस्या आ जाय, यह समझ पाना कठिन है, आने वाली इस प्रकार की समस्याओं के लिए तो, चाहे वे पुत्र से सम्बन्धित हों, स्त्री, धन-दौलत, स्वास्थ्य आदि से सम्बन्धित क्यों न हों, इनसे निपटने के लिए शक्ति के रूप में इनके आक्रमण से पूर्व इस तरह की साधनाओं को सम्पन्न कर शक्ति संचय करते रहना चाहिए।

साधना विधि–

सामग्री – **सुदर्शन माल्य, अनन्त पात्र, जनार्दन यंत्र।**

दिवस – **अनन्त चतुदर्शी ०८/०९/९५ को या फिर किसी भी बृहस्पतिवार को।**

समय – **प्रातःकाल ४ बजे से ८ बजे के मध्य।**

दिशा – **पूर्व या उत्तर।**

विधि –

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व उपरोक्त सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवा लें या किसी प्रामाणिक स्थान से प्राप्त कर लें, किन्तु यह ध्यान रखें, कि इन सामग्रियों का चैतन्यीकरण भगवान् अनन्त के विशिष्ट तांत्रोक्त मंत्रों द्वारा ही होना चाहिए।

इसके अलावा पहले से ही आप पीले पुष्प और पीले पुष्पों की ही माला, पीला वस्त्र, केसर तथा घर में शुद्धता के साथ बनाई हुई खीर तथा अन्य स्वादिष्ट व्यञ्जन भी एकत्र कर लें, साथ ही धूप, दीप, अक्षत, कुंकुम, चन्दन इत्यादि का प्रयोग नित्य पूजन क्रमानुसार ही करें।

अनन्त चतुर्दशी को प्रातःकाल अपनी सुविधानुसार समय निर्धारित कर, स्नानादि से निवृत्त होकर, पूर्ण पवित्रता एवं श्रद्धा के भाव से युक्त होकर अपने आसन पर बैठ जायें, साधना के समय आप पीले वस्त्र ही धारण करें तथा पद्मासन, सुखासन, स्वस्तिकासन जिस आसन में बैठने का आपको अभ्यास हो, उस आसन में स्थिर भाव से बैठ जायें, तत्पश्चात् अपने सामने किसी बाजोट पर पीले वस्त्र को बिछाकर उसके ऊपर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर दें, इन पंखुड़ियों के ऊपर **'जनार्दन यंत्र'** को स्थापित करें और केसर, चन्दन तथा पुष्प माला समर्पित करें। यंत्र के दाहिनी ओर **'अनन्त पात्र'** को स्थापित करें तथा बाईं ओर **'सुदर्शन माल्य'** को, इन दोनों का भी संक्षिप्त पूजन सम्पन्न करें।

पूजन करते समय किसी निर्धारित क्रम की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है, तो आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति-भावना की। यही वह क्रम है, जिसके माध्यम से भगवान् अनन्त निश्चित रूप से पूर्ण साधना काल में उपस्थित होते ही हैं तथा साधक की इच्छाओं को पूर्ण करते ही हैं।

पूजन के बाद किसी पात्र में अक्षत अर्थात् ऐसे चावल के दाने लें, जो टूटे न हों, उन्हें हल्दी से रंग लें, तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए लगातार १५ मिनट तक बाएं हाथ में रखे अक्षत को दाहिने हाथ से अनन्त पात्र में डालते रहें।

मंत्र–

ॐ ऐं सर्वकार्य सिद्धये नमः

१५ मिनट तक मंत्र-जप करने के पश्चात् हाथ जोड़कर भगवान् अनन्त से क्षमा-याचना करें, कि यदि हमारे पूजन और साधना में कोई कमी रह गई हो, तो उसे क्षमा करें, हमें पूर्णता प्रदान करें तथा हमारी इच्छित कामनाओं को शीघ्र ही पूर्ण करें।

क्षमा-याचना के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः।
पाहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव।।
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम्।

इसके पश्चात् 'सुदर्शन माल्य' को अपने गले में धारण कर लें, क्योंकि यह माल्य भगवान् अनन्त के आशीर्वाद से युक्त है। अनन्त पात्र में रखे अक्षत को अपने घर में विशेषकर भण्डारे में डाल दें, ऐसा करने से घर में अनाज की पूर्णता बनी रहती है। अनन्त पात्र और यंत्र दोनों को ही उसी दिन अथवा अगले दिन जल में विसर्जित कर दें। ●

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अचूक प्रयोग

'ॐ श्रीं अनन्ताय नमः' इस मंत्र का जप करते हुए **२१ कमलगट्टे के बीजों** से यदि **अनन्त चतुदर्शी ८ सितम्बर ९५** के दिन हवन किया जाय, तो स्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
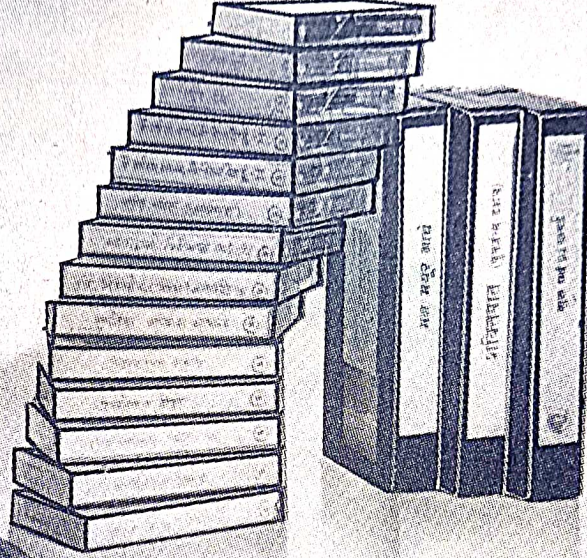
पूज्य गुरुदेव की वाणी में साधना के एक-एक रहस्य को उजागर करते ये अद्वितीय कैसेट्स. . . जिनके माध्यम से हजारों साधकों ने साधना में सफलता प्राप्त की है. . . . यह मात्र कैसेट ही नहीं, आपके जीवन की धरोहर है, आने वाली पीढ़ियों के लिये धरोहर है।

पूज्य गुरुदेव द्वारा साधना शिविरों में कराये गये ये प्रयोग

चैत्र नवरात्रि 1995, कराला

- चामुण्डा प्रयोग
- महाकाली प्रयोग
- महालक्ष्मी प्रयोग
- कूष्माण्ड प्रयोग
- तारा महाविद्या प्रयोग
- कात्यायनी प्रयोग
- गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
- आरती संग्रह
- भजन संग्रह

कौस्तुभ जयन्ती 1995, इलाहाबाद

- पूर्ण पौरुष प्राप्ति प्रयोग
- काल ज्ञान विवरण
- काल ज्ञान प्रयोग
- पूर्णत्व सिद्धि
- पूर्णत्व ब्रह्म दीक्षा
- षोडशी त्रिपुर साधना
- सशरीर सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग
- राजयोग दीक्षा
- मनोकामना पूर्ति प्रयोग एवं गुरु पूजन

वीडियो कैसेट

- नवरात्रि शिविर 1995
- कौस्तुभ जयन्ती 1995
- शिव पूजन
- कुण्डलिनी
- शक्तिपात
- हिप्नोटिज्म रहस्य
- साधना, सिद्धि एवं सफलता
- लक्ष्मी मेरी चेरी

ऑडियो प्रति कैसेट : 30/- **वीडियो प्रति कैसेट : 200/-**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

गुरु सम नाहीं कोई दूजा

२४/०८/९४ को गुरुधाम जोधपुर से भेजी हुई २१० रुपये की वी० पी० से मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त **''चैतन्य यंत्र''** मिला। यह साधना मात्र २१ दिन की थी, और मैंने इसे विधिवत् सम्पन्न किया। दाहिनी तरफ पूज्य गुरुदेव का आसन तथा बाएं आसन पर चैतन्य यंत्र एवं एक आसन पर मैंने स्वयं बैठ कर २१ दिन तक लगातार १०८ बार मंत्र-जप किया। मंत्र था—

''ॐ ह्रीं नमः''

जबकि प्रपत्र में लिखा था, कि अगरबत्ती, दीपक या अन्य किसी भी चीज की इसमें आवश्यकता नहीं है, परन्तु मैंने सोचा, कि पहले गुरु पूजा, फिर उसके बाद ही कोई दूसरी साधना करनी चाहिए, और इसीलिए मैंने पहले गुरु पूजन किया तथा बाद में साधना सम्पन्न की, और २१ दिन के बाद उस यंत्र व माला को नदी में विसर्जित कर दिया।

उस रात मैं पूजा घर में सोया था, कि एक आश्चर्यजनक ध्वनि उत्पन्न हुई, और उसके बाद एक प्रकाश हुआ। वह प्रकाश इतना अच्छा लग रहा था, कि मैंने आज तक अपनी जिंदगी में ऐसा प्रकश नहीं देखा था, और उसी प्रकाश में परम पूज्य गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** ने मेरे सामने प्रत्यक्ष मौजूद होकर गोपनीय युक्तियां बताईं, और प्रत्यक्ष गोपनीय वस्तुओं की पहिचान भी दी, जिसे मैं अभी तक नहीं भुला पाया हूं।

आपने आदेश दिया, कि ये बातें किसी अन्य को न वताऊं, इसलिए मैंने गोपनीय युक्ति से सभी व्यक्तियों की समस्याओं का निदान किया, और आपके आशीर्वाद से ऐसे व्यक्तियों का इलाज किया, जो कि भारत के सभी डॉक्टरों के यहां से निराश होकर लौटे थे।

पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना है, कि मैं सदैव सपरिवार आपके चरणों की पूजा करता रहूं। मैं आपकी पत्रिका का प्रचार-प्रसार तेजी से कर रहा हूं, और प्रचार-प्रसार के दौरान ३१ व्यक्तियों को आपकी पत्रिका का सदस्य वनाने जा रहा हूं। सभी के हृदय की यह आन्तरिक इच्छा है, कि पूज्य गुरुदेव आकर हमें दर्शन एवं मार्गदर्शन दें।

श्री अनूप लाल मंडल
मधेपुरा, बिहार

यों हुई मुझ पर गुरु कृपा

परम पूज्य गुरुदेव,

साष्टांग प्रणाम,

हे प्रभु! मेरे पति ने आपके शिविर **''अमृत महोत्सव''**, जो कि **''सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस''** के रूप में १५ नवम्बर ९४ को भोपाल में मनाया गया, उसमें शामिल होकर **''अपराज्य प्रयोग''** आपके सान्निध्य में सम्पन्न किया, और इसके पश्चात् मैं रायसेन नगर पालिका परिषद में पार्षद का चुनाव जीती। मेरी यह जीत तो प्रभु आपकी जीत है, मैं और मेरा परिवार आपका सदैव ऋणी रहेगा।

श्रीमती किरन शाक्य
म० प्र०

हरि अनन्त हरि कृपा अनन्ता

हे प्रभु! मैं बड़ा असमंजस में हूं, कि आपको किस विधि पुकारुं। मेरे मन में अनेक विचार भाव-विभोर होकर उठते ही रहते हैं। मैंने आपके आशीर्वाद से वहुत-सी सामग्री प्राप्त की, किन्तु इस वार २१ दिन की अवधि में इतना आनन्द मिला, और २१ दिन के भीतर ही मेरी आधी समस्या, जो कि आर्थिक संकट की थी, वह दूर हो गयी, और मेरा रुका हुआ कार्य पुनः इतनी तेज गति से शुरू हुआ, कि मुझमें जीने की नई शक्ति आ गई, मेरा आलस्य दूर हो गया और मैं कार्य में इस तरह मगन हुआ, कि हर घड़ी जुबां पर आपका ही नाम बना रहता है।

देखते ही देखते २१ दिन के भीतर ही घर का कलह भी शांत हो गया और मेरा रुका हुआ कार्य पुनः तेज गति से शुरू हो गया। रुपयों की जरूरत पड़ी, तो अंतरात्मा से गुरुदेव ने आज्ञा दी— ''जाओ, तुम्हें पैसा मिल जायेगा'', और जो लोग कभी मुझे पैसा नहीं देते, जिनके वारे में स्वप्न में भी नहीं सोच सकता, उन्हीं लोगों ने मेरी आर्थिक सहायता की।

२१ दिनों के भीतर ही लड़कियों के सम्बन्ध के लिए मेहमान भी आ गये, और मैं यदि किसी संकट में भी पड़ता, तो गुरुदेव पहले से ही चेता देते, कि यह कार्य नहीं करना। अनेक बार ऐसी ही घटना गुजरी है।

प्रभु! मैं आपका ऋणी हो गया हूं, किस विधि चुका पाऊंगा यह ऋण।

हे गुरुदेव! आज मुझे पहली बार ३८ सालों में यह एहसास हुआ, कि सद्गुरु की कृपा अनन्त है, और वह कृपा आप ही में देखने को मिली है, आपको पाकर ही मैंने गुरु का महत्त्व थोड़ा बहुत जाना है। प्रभु! आप ऐसा आशीर्वाद दें, कि मैं अपने को सांसारिक जाल-भ्रम से ऊपर उठकर, आपके चरणों में बैठकर आपकी सेवा कर सकूं, आपके चरणों में बैठने के योग्य बन सकूं। ऐसी शक्ति-भक्ति दें, कि मैं अपने काम, क्रोध, मोह, आलस्य को त्याग कर अपना

पूरा जीवन आपके चरणों में बिता सकूं।

सत्यनारायण नामदेव
भीलवाड़ा

दीक्षा मूलं गुरु कृपा

मैं हृदय रोग से ग्रसित हो गया था, मेरे लिए चलना-फिरना तक दूभर था, मेरी दशा बहुत ही बिगड़ चुकी थी, और शरीर अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण सा हो गया था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था, कि मैं क्या करूं? मैं जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहा था।

ऊपरी इलाज में पचास हजार रुपये का व्यय था, जो कि मेरे लिए असम्भव था, ऐसी दशा में पूज्य गुरुदेव का आगमन ६ से १२ अक्टूबर ९४ को लखनऊ में हुआ। उस शिविर में मैं पत्रिका का पांच वर्षीय सदस्य बना, और गुरु जी द्वारा दो दीक्षाएं भी प्राप्त कीं, उन दीक्षाओं के प्रभाव से मेरे अन्दर इन्हीं ७५ दिनों में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया। अब मेरी खांसी बन्द है, भूख भी लगती है और शरीर में शक्ति भी बन रही है, इस प्रकार दिन-प्रतिदिन मेरा स्वास्थ्य सुधरता जा रहा है।

योगेन्द्र नाथ पाण्डे
लखनऊ, उ० प्र०

रोम-रोम गुरु नाम उचारे

मैं राजकीय माध्यमिक विद्यालय नवागढ़ (धनबाद) में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हूं। आज से २५ वर्ष पूर्व की बात है, एक संत "आनन्द स्वामी छोटे उड़िया बाबा" से मेरी मुलाकात हुई थी, उनके ढेर सारे शिष्य थे धनबाद में। बाबा साल में एक बार धनबाद आते थे।

मैंने बाबा से काफी आग्रह किया, कि मुझे भी दीक्षा दें, लेकिन बाबा ने कहा– "बेटा, तेरे गुरु कोई और हैं, वे पूर्वजन्म में भी तुम्हारे गुरु थे और इस जन्म में भी वे गुरु होंगे, लेकिन दीक्षा प्राप्ति तथा उनसे सम्पर्क होने में अभी विलम्ब है। तुम नित्य गायत्री मंत्र का जप अवश्य किया करो।"
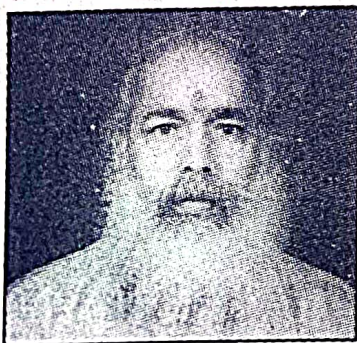
नवम्बर ९३ में अचानक **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका के सम्पर्क में आया। १३ जनवरी १९९४ को बोकारो स्टील सिटी में गुरुदेव के दर्शन किये एवं दीक्षा प्राप्त की। दीक्षोपरान्त प्रातः एवं सायं गुरु पूजन तथा गुरु मंत्र का जप नियमित रूप से करता हूं, और मैं जप में इतना तल्लीन हो जाता हूं, कि सोते-जागते निरन्तर गुरु मंत्र-जप चलता ही रहता है।

यह घटना १४/०८/९४ की है। रात्रि ११.३० बजे मैं बिछावन पर मानसिक जप में संलग्न था, कि अचानक मुझे ऐसा आभास होने लगा, जैसे अभी और इसी क्षण कोई बड़ी घटना घटने वाली है। मैं तुरन्त घर से निकल कर छत पर गया तथा पत्नी एवं लड़कों को जगाया और उनसे अपनी आशंका का जिक्र किया तथा उन्हें सावधान रहने को कहा।

करीब पन्द्रह मिनट बाद मेरा बड़ा लड़का मेरे पास आकर बोला, कि सुनील काका के घर में डाकू प्रवेश कर गये हैं। सुनील का घर मेरे घर के बिलकुल बगल में है। मैंने लड़के को सावधान किया, कि वह किसी प्रकार का शोरगुल न करे, लेकिन लड़के ने छत पर जाकर मेरे मना करने के बावजूद हल्ला करना शुरू कर दिया। भागते हुए डाकुओं ने एक गोली मेरे लड़के के ऊपर चला दी।

गोली सीने में दाहिनी तरफ लगी थी। मैं उसे तुरन्त मैडिकल कॉलेज अस्पताल भागलपुर ले गया। सुबह १५ अगस्त था, इसलिए अस्पताल के अधिकांश कर्मचारी छुट्टी मना रहे थे, लेकिन मुझे निरन्तर ऐसा आभास हो रहा था, मानो गुरुदेव स्वयं वहां उपस्थित हों, और तब तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा, जब एक्सरे रिपोर्ट से जानकारी मिली, कि गोली अन्दर नहीं है। एक सप्ताह के उपचार के बाद उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई।

मेरे परिवार में अभी तक मैंने ही दीक्षा ली है, लेकिन परिवार के सभी सदस्य गुरुदेव की पूजा में तल्लीन रहते हैं और सारा परिवार खुशहाल है, और ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव होता है, कि गुरुदेव प्रतिपल हमारे साथ हैं।

गुरुदेव आप साक्षात् ब्रह्म हैं, तभी तो विश्वभर में फैले अनगिनत शिष्यों का सूक्ष्म निरीक्षण प्रतिपल करते रहते हैं तथा उनके आत्मिक विकास की प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। आपकी कृपा-दृष्टि बनी रहे और अपने को आप में पूर्णतः विसर्जित कर सकूं, ऐसे ही आशीर्वाद की लालसा है गुरुदेव!

शशिधर झा
धनबाद, बिहार

गुरुदेव कैलाश चन्द्र जी श्रीमाली पर

जब पूज्य गुरुदेव ने ऊर्ध्वपात किया

ऋषि परम्परा की पुनरावृत्ति . . . . बूंद को सागर बनाने की क्रिया . . . . शव से शिव बनाने की क्रिया, अद्वितीय क्रिया . . . . जिसके साक्षी हैं हजारों साधक . . . . प्रकृति और वह क्षण, जब हजारों वर्षों बाद वह क्रिया दोहराई गई, जो सामान्य व्यक्तित्व के बस की बात नहीं है . . . . जिसके लिये चाहिए साधनात्मक बल, तेजस्विता, विराट व्यक्तित्व, वही इस क्रिया को सम्पन्न कर सकता है! ! !

नवरात्रि का वह पावनतम दिन, जब उनकी आंखें मुंदी जा रही थीं. . .पूज्य गुरुदेव का सौ-सौ सूर्यों के समान देदीप्यमान एवं तेजस्वी मुख, काल भी जिनके सामने नतमस्तक हो रहा था. . .उस दृश्य को देखकर तो समस्त शिष्य व साधकगण ही नहीं, अपितु पूरे ब्रह्माण्ड में ही हलचल मच गई थी, और वे सभी दृश्य-अदृश्य शक्तियां पूज्य गुरुदेव जी द्वारा घटित उस घटना क्रम को टकटकी लगाये देख रही थीं. . .कितना अनोखा था वह क्षण, जब वे एक अत्यंत विशिष्ट क्रिया के माध्यम से अपने जैसा ही एक प्रतिरूप समाज के सामने प्रस्तुत कर रहे थे— वह भी प्रत्यक्ष रूप में. . . जिन्हें ये स्थूल चक्षु हतप्रभ हो, सहजता से देखने का प्रयास कर रहे थे. . . वह क्रिया थी, मनुष्यत्व को देवत्व प्रदान करने की क्रिया, लघु से महान बना देने की क्रिया, कुछ से बहुत कुछ हो जाने की क्रिया।

—और उस क्रिया के पूर्ण होते ही अकस्मात्. . .?

वे लड़खड़ाकर बैठ गये, क्योंकि उस तीव्र शक्तिपात को सहन कर लेना किसी सामान्य व्यक्ति के बस की बात ही नहीं है, उनका पूरा शरीर कम्पायमान हो रहा था. . . ऐसा लग रहा था, कि वे इस विस्फोटजनक स्थिति को सहन करने का पूरा प्रयास कर रहे हैं, क्योंकि उन पर जो शक्तिपात किया गया था, वह मात्र शक्तिपात अथवा दिव्यपात न होकर इससे भी अत्यन्त आगे की क्रिया "ऊर्ध्वपात" थी . . . यह था पूज्य गुरुदेव **कैलाश चन्द्र जी** पर ऊर्ध्वपात।

अनेकों साधना सम्पन्न किसी संन्यासी पर यदि पूर्ण क्षमता के साथ ऊर्ध्वपात प्रदान कर दिया जाय, तो वह भी इसकी तेजस् शक्ति को सहन करने की सामर्थ्य नहीं रखता, क्योंकि इस क्रिया के द्वारा कुण्डलिनी में व्याप्त ऊर्जा-शक्ति अत्यन्त तीव्रता के साथ क्रमशः समस्त चक्रों को आघात पहुंचाती हुई उन्हें अत्यधिक तीव्र स्पन्दन युक्त बना देती है, जिसके कारण शरीर की समस्त नाड़ियों में खून का प्रवाह अत्यधिक बढ़ जाता है। इतने तीव्र गति से हो रहे प्रवाह को सहन न कर पाने के कारण नाड़ियां

फट जाती हैं, और उस संन्यासी को मृत्यु सम्भावित दिखने लगती है।

. . .एकजुट हो सभी की दृष्टि पूज्य गुरुदेव द्वारा किये जा रहे उस ऊर्ध्वपात पर केन्द्रित हो गई थी, पता नहीं अगले ही क्षण क्या हो जाय।

— किन्तु उनकी देह ने वह सब कुछ सहन कर लिया! जब ऊर्ध्वपात क्रिया सम्पन्न हुई, तो उसके प्रभाव से आस-पास के लोगों की आंखें भी चुंधिया सी गईं और वे कुछ देर के लिए ही सही ध्यानस्थ हो गये थे।

— "गुरु-पुत्र" थे, इसलिए उस असीमित शक्ति को आत्मसात् कर सके. . . और कुछ क्षणों बाद स्वयं को संभाल कर, गुरुदेव के चरणों में साष्टांग दण्डवत् कर, उनके श्री चरणों का अपने प्रेमाश्रुओं से अभिषेक कर डाला. . . और कुछ क्षणों के लिए मौन हो गये, किन्तु वे मौन न होकर मन ही मन गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे, और गुरुदेव भी अपने कृपा-दृष्टिपात से तथा अपनी मादक मुस्कान के साथ उन्हें वह सब कुछ प्रदान कर रहे थे, जो उन्हें देना था— वह परम पद, जिसका अधिकारी केवल मात्र योग्य गुरु ही हो सकता है।

वहुत कुछ बनने, प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक तप-साधना करनी पड़ती है, आग में जलना पड़ता है, लहूलुहान हो जाना पड़ता है, अपने 'स्व' को समर्पित करना पड़ता है, अपने-आप को फना कर देना पड़ता है. . . और जब सब कुछ समाप्त हो जाता है, तभी नव निर्माण की प्रक्रिया का प्रारम्भ होता है। केवल मात्र सद्गुरु में ही वह शक्ति, वह सामर्थ्य होती है, कि नव निर्माण कर सके. . . और ऐसा ही कुछ किया नवरात्रि के पर्व पर पूज्य गुरुदेव ने नव सूर्य का धरती पर निर्माण कर— जो अपने ज्ञान के प्रकाश की रश्मियों से अंधकार आच्छादित जगत् को प्रकाशवान कर सके, आलोकित कर सके. . . और फिर "गुरु-पुत्र" तो स्वयं गुरु के ही तेज से उत्पन्न उन्हीं का देहांश होते हैं।

शास्त्रों, पुराणों आदि में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखनीय है, कि गुरु पद प्राप्त करने हेतु या तो किसी व्यक्ति में गुरु बनने की पात्रता हो, योग्यता हो या फिर गुरु का ही योग्य पुत्र शिष्यवत् बने. . . यदि उसमें वह क्षमता और सामर्थ्य है, तो वह उस परम पद का अधिकारी होता है।

पूज्य गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी जब संन्यासी जीवन में थे, तो उनके दर्शन मात्र से ही कितने व्यक्तियों पर शक्तिपात हो जाया करता था, ऐसे तेजस्वी व्यक्तित्व की निकटता और आत्मीयता पाने का अर्थ है, कि उस व्यक्ति के कई जन्मों के पुण्य एकत्र हुए होंगे, जो वह उनका सान्निध्य प्राप्त कर सका. . . और फिर वे तो गुरु-पुत्र हैं— यों ही वे गुरुदेव के पुत्र रूप में नहीं उत्पन्न हो गये। उन्हें गुरुदेव के पुत्र रूप में जन्म लेने के लिए न जाने कितनी कठोर तपस्या और घोरतम साधनाएं करनी पड़ी होंगी, और उनके न जाने कितने ही जन्मों के

गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी, श्री कैलाश चन्द्र जी एवं श्री अरविन्द श्रीमाली जी

पुण्य इकट्ठे हुए होंगे, जो वे गुरु-पुत्र कहलाये— यह कोई मामूली बात नहीं है। गुरुगृह में जन्म लेना कोई साधारण बात हो भी नहीं सकती, यह तो अवश्य ही कोई दिव्यात्मा होगी, जो कि उनके अंश स्वरूप वहां उपस्थित है, इसमें कोई दो राय नहीं।

गुरुगृह में लालन-पालन होना, और उस आध्यात्मिक वातावरण में जन्म लेकर बड़ा होना, जहां चारों प्रहर विशिष्ट यज्ञों की अग्नि का धूम्र वातावरण को दिव्यता प्रदान कर रहा हो तथा वेद मंत्रों का उच्चारण हो रहा हो. . . अल्पायु में ही जहां उन्हें विभिन्न शास्त्रादि के ज्ञान के साथ ही साथ साधना, जप-तप आदि क्रियाओं का भी ज्ञान भली-भांति दिया जा रहा हो, और वह भी ऐसे योग्य सद्गुरु के द्वारा, जिनके चरण-कमलों में बैठना ही जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि कही जाती है. . . जरूर उनमें कोई न कोई विशेषता तो होगी ही, तभी तो वे इस अद्वितीय सौभाग्य को प्राप्त करने के अधिकारी बन सके. . . और जो कुछ न्यूनता उनमें रह गई थी, वह गुरुदेव ने **"ऊर्ध्वपात दीक्षा"** द्वारा अपनी समस्त साधनाएं एवं सिद्धियां उनमें समाहित कर उन्हें पूर्ण कर दिया, क्योंकि सद्गुरु में शिष्य को अपने जैसा बना लेने की सामर्थ्य होती है—

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः।
स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः स नयति यदहो स्वर्णतामश्मसारम्।।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे सद्गुरुः स्वीय शिष्ये।
स्वीयं साम्यं विधत्ते भवति निरुपमस्तेन वा लौकिकोऽपि।।

अर्थात् ''इस संसार में शिष्यों को ज्ञान प्रदान करने वाले सद्गुरु की साम्यता के लिए कोई दृष्टांत (उदाहरण) देना सम्भव नहीं है। पारस-पत्थर लोहे को अपने स्पर्श से सोना तो बना देता है, किन्तु अपने जैसा पारस नहीं बना सकता। सद्गुरु शिष्य को बिना स्पर्श किये, दृष्टिमात्र से ही अपने जैसा चैतन्य पुरुष बना देता है, अतः सद्गुरु के लिए समस्त लौकिक उपमा व्यर्थ है... और यही हुआ भी, उन्होंने अपने जैसा ही चैतन्य पुरुष बना दिया उन्हें।

पूज्य गुरुदेव ऊर्ध्वपात करते हुए

ऊर्ध्वपात क्रिया के पश्चात् निश्चित रूप से गुरु-पुत्र एक पूर्ण समर्थ गुरु बन चुके हैं, इसकी प्रामाणिकता का साधकों को ''गुरुदेव श्री नन्द किशोर जी एवं श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी'' के सान्निध्य में बैठने पर स्वयं ही अनुभव होता है, जिनके आभामयी मुखमण्डल को देखकर कोई भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, उनके मुख से झलकती सौम्यता, सहजता, मधुरता और उनकी शांत चित्त प्रवृत्ति को देखकर, कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सकता, कि इस व्यक्तित्व के अन्दर भी इतना गूढ़तम ज्ञान समाहित होगा, क्योंकि वे स्वयं प्रदर्शन से परे रहना चाहते हैं। धीरे-धीरे, एक-एक कदम आगे बढ़ते हुए, अर्थात् किसी भी विषय पर अजस्र गति से धाराप्रवाह बोलना, वाणी में मधुरता, सम्मोहकता, एक विशेष प्रकार का आकर्षण, जिसे सुनते ही मानो कानों में एक दिव्य नाद झंकृत हो रहा हो, उनके दीक्षा देने के उपक्रम तथा अन्य क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं से अब उनकी उच्चता और श्रेष्ठता का स्पष्टतः भान भी होने लगा है।

उन्होंने अपने शिष्यों का मार्ग प्रशस्त कर, उन्हें सफलता प्रदान की है, जिसका उदाहरण वे शिष्य स्वयं हैं, जो उनके बताये मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, और जीवनोन्नति एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए गतिशील हैं।

श्री नन्द किशोर जी एवं श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी अर्थात् गुरुदेव के कार्य करने का तो ढंग ही निराला है, वे एक तरफ जहां बाह्य रूप से जितने शांत, मधुर, हास्य प्रिय, करुणामयी दिखाई देते हैं, वहीं वे साधना, प्रयोग, अनुष्ठान आदि करवाते समय उतने ही कठोर और दृढ़ स्वभाव के भी दिखाई देते हैं, क्योंकि साधना आदि गुह्य एवं महत्त्वपूर्ण क्रिया पद्धतियों में किसी भी प्रकार की शिथिलता बरतना एवं चूक हो जाना उन्हें असहनीय हो जाता है, न तो वे स्वयं साधना आदि सम्पन्न करते समय कोई शिथिलता बरतते हैं, और न ही वे शिष्यों को ऐसा करते देख पाते हैं, क्योंकि वे किसी भी प्रकार से अपने शिष्य को न्यून नहीं रहने देना चाहते। शिष्य को साधना या उसके इच्छित कार्य में पूर्णता प्राप्त हो, इसके लिए अब वे समय-समय पर दीक्षा द्वारा शक्तिपात की दिव्य क्रिया को भी सम्पन्न कर रहे हैं।

शिष्यों को भी छोटे गुरुदेव द्वारा किये गये दीक्षा एवं शक्तिपात से उन साधनाओं में सिद्धि प्राप्त हो सकी, जिनमें उन्हें सफलता नहीं मिल पा रही थी, इस बात को तो मैंने स्वयं भी अनुभव किया है, और सफलता व सिद्धि प्राप्त की है, तथा मेरे मनोवांछित कार्य भी पूर्ण हुए हैं, यह तो उनके ललाट और तेजस्वी मुखमण्डल पर व्याप्त आभामंडल को देखकर ही ज्ञात होने लगा है, कि वे सामान्य व्यक्ति से भिन्न विशिष्ट व्यक्तित्व हैं।

वे स्वयं भी पूजनीय सद्गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी द्वारा बताई गई गुह्य साधनाओं को रात्रिकालीन समय में सम्पन्न करते हैं। समय-समय पर पूजनीय गुरुदेव जी स्वयं उन्हें अपने पास बैठाकर, अत्यन्त उच्चकोटि की साधनाओं को सम्पन्न करवाते रहते हैं, क्योंकि वे अपने ही समकालीन अथवा समरूप उन्हें भी बना देना चाहते हैं। वे चाहते हैं, कि वे भी उच्च श्रेणी के ज्योतिषी, वेदज्ञ, मंत्र-तंत्र के ज्ञाता तथा कालज्ञानी कहला सकें, और सद्गुरुदेव जी की इच्छा के अनुरूप ही गुरुदेव कैलाश जी भी उन क्रियाओं को बड़े परिश्रम और लगन के साथ गुरुदेव के निर्देशानुसार तथा उनके द्वारा समय-समय पर विभिन्न साधनाओं हेतु दिव्य शक्तिपात को प्राप्त कर अपने में आत्मसात् करने की प्रक्रिया कर रहे हैं, जिससे कि वे पूजनीय गुरुदेव की तरह ही वास्तविक एवं प्रामाणिक ज्ञान से लोगों का मार्ग प्रशस्त कर सकें, और उनके जीवन को चैतन्यता, सप्राणता, रसमयता, आनन्दमयता से आपूरित कर सकें, तथा लुप्त होती भारतीय विद्याओं का वास्तविक परिचय एवं वास्तविक स्वरूप, जो सिद्धाश्रम संस्था द्वारा अबाध गति से समाज के सामने प्रस्तुत हो रहा है, उसे अनवरत् क्रम से आगे बढ़ाते हुए, समाज को उससे अवगत करा सकें, और स्थान-स्थान पर दीक्षा, शक्तिपात तथा प्रवचन द्वारा आध्यात्मिक चेतना

की ज्ञान-गंगा के प्रवाह को आगे बढ़ा कर, समस्त विश्व को उससे ओत-प्रोत कर विश्व में शांति, मधुरता और प्रेम की स्थापना करने के लिए ही प्रयासरत् हैं।

क्या होती है 'दीक्षा'?

– **गुरु और शिष्य!**
– **सिंह और उसके शावक!!**
– **धूप में पड़े, अलसाये से, कुनमुनाते हुए,**
– **सिंह उन्हें पालने में नहीं लिटाता,**
– **न ही थपकी देकर सुनाता है मीठी लोरियां,**
– **पंजों के वार और लातों के प्रहार से इधर-उधर फेंकता है उन्हें,**
– **दांतों से उन्हें उठाकर पटक देता है चट्टानों पर,**
– **वह छोटे-छोटे शावक, इस चट्टान से उस चट्टान पर,**
– **भले ही हो जाएं लहूलुहान।**
– **और तब निखरती है उनकी सुनहरी देह,**
– **भूरे रोम और तीखे पंजे. . .**
– **आंखों की कौंध और गुर्राहट!**
– **अड़ला कर चलने की शैली. . .**
– **सिंह-शावक से सिंह बनने की सम्पूर्ण कथा।**
– **यही होती है 'दीक्षा'।**

गुरुदेव कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी

मैं यहां पर कुछ लोगों की तुच्छ मानसिकता को भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं, जो इस बात को सुनकर ही, कि उनसे मिलने की फीस इतनी है, और दीक्षा के लिए इतनी धनराशि लोगों से क्यों ली जाती है, जैसी धारणा बना बैठे हैं, जो कि सर्वथा गलत है, उन्हें वास्तविकता से परिचित करा देना चाहता हूं।

प्रारम्भ में मैं भी कुछ ऐसी ही बेसिर-पैर की बातें सोचता रहता था, किन्तु वास्तविकता क्या है, इसे जान लेने के लिए मैं हर क्षण बेचैन रहता, और फिर वह अवसर भी मुझे प्राप्त हुआ, जब मैं पूजनीय कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी अर्थात् छोटे गुरुदेव से मिला और उनसे दीक्षा प्राप्त कर, उन्हीं के सान्निध्य में रहने का अवसर भी मुझे प्राप्त हुआ। धीरे-धीरे जब मुझे वास्तविकता का बोध हुआ, तब अपने-आप पर बहुत आत्म-ग्लानि हुई, और तब अनुभव हुआ, कि *गुरुदेव से मिलने के लिए ली गई धनराशि कोई डॉक्टर की फीस नहीं है, और न ही दीक्षा कोई जादू की छड़ी है, कि घुमाया और अगले ही पल काम हो गया, वह तो एक ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति के उद्देश्यों की पूर्णता हेतु उसका मार्ग प्रशस्त करती है, और उसकी इच्छा पूर्ण होने की सम्भावना बनती है।*

यह धनराशि लेने का प्रयास नहीं है, अपितु **उन्हीं की भलाई और उन्हीं के जीवन-निर्माण को सम्पूर्ण करने का प्रयास है, जिसका उदाहरण 'सिद्धाश्रम'.है, जिसका नव निर्माण कराला (दिल्ली) में हो रहा है।** जहां हमारी ही तरह हजारों-लाखों शिष्य जीवन के सभी आयामों को स्पर्श कर, श्रेष्ठ एवं उच्च जीवन को प्राप्त कर सकें और अपने जीवन के स्वप्न को साकार रूप दे सकें। उन्हें एक नई चेतना, प्राणस्विता, ऊर्जस्विता मिल सके, जिससे कि वे तनावमुक्त हो अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों में पूर्णता प्राप्त कर सकें।

— और यही सिद्धाश्रम का उद्देश्य भी है, भौतिक और आध्यात्मिक पक्ष में पूर्ण होना ही जीवन की सम्पूर्णता है।

आज के इस भौतिकतामय जीवन को जीने के लिए धन की आवश्यकता होती ही है, किन्तु यह मुझे पूर्णतः ज्ञात हो चुका है, कि शिष्यों से प्राप्त धन का हजारवां हिस्सा भी गुरुगृह में व्यय नहीं होता, और न ही उस धन का प्रयोग वे स्वयं के लिए करते हैं, वह धन तो शिष्यों के कार्यों में, उन्हें ही उच्चकोटि की साधनाओं आदि कार्यों को पूर्णतः सम्पन्न कराने के लिए आवश्यक सामग्री हेतु या इसी ज्ञान-गंगा के प्रचार व प्रसार

एवं आश्रम हेतु व्यय किया जा रहा है— इसमें कोई दो राय नहीं है, और यही सत्य है।

तथ्य से परिचित होते हुए भी लोग शायद अपरिचित होने का ढोंग व उपहास कर अपनी ही मूढ़ता और अज्ञानता को प्रदर्शित कर रहे हैं।

दीक्षा प्राप्त करना तो हमारे जीवन का अहोभाग्य है, कि ये हमें इतनी सरलता व सुगमता से पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदान की जा रही हैं। प्राचीन काल में तो गुरु से दीक्षा प्राप्त करने के लिए बहुत ही दुर्लभ प्रक्रियाओं को सम्पन्न करना पड़ता था, अपना घरबार छोड़कर, गुरु की सेवा में दिन-रात एक कर. . . और यही नहीं, पूरा जीवन ही उनके चरणों में समर्पित करने के बाद भी गुरु से दीक्षा प्राप्त हो जाय, वह क्षण उनके जीवन का स्वर्णिम क्षण कहा जाता था, इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को बहुत प्रयत्न करने पड़ते थे।

आज जितनी सरलता से दीक्षा कार्य को सम्पन्न किया जा रहा है, और विभिन्न उच्चकोटि की दीक्षाएं जितनी सुगमता से प्राप्त हो रही हैं, इसे तो जीवन का अद्वितीय सौभाग्य ही कहा जा सकता है। पूज्य गुरुदेव से अपनी मनोवांछित दीक्षा प्राप्त कर शीघ्र उसमें पूर्णता प्राप्त हो, इससे ज्यादा सरल और शीघ्र ही मनोरथ पूर्ण होने का इस प्रगतिशील, भौतिकतामयी युग में अन्य कोई उपाय नहीं।

— फिर भी जो कुछ आपने सोचा है, आप उसके लिए स्वतंत्र हैं, क्योंकि—

"जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन्ह तैसी!"

राशिफल

मेष - चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें, आपसी मतभेद समाप्त होने की सम्भावना। इस माह में १, २, ३ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल सिद्ध होंगी तथा ५ व ६ तारीखें शुभ नहीं हैं, ध्यान रखें। जीवन में समानता लाने के लिये माणिक्य धारण करें, इष्ट की साधना-उपासना से स्थिति में सुधार होगा, मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। पड़ोसियों से मतभेद की स्थिति में शांति बरतें। राजकार्य आसानी से पूरा होगा। किसी से उधार लिया धन देने से आर्थिक स्थिति में न्यूनता आयेगी, अतः ऋण न लें, नये सम्पर्क भविष्य में लाभदायक सिद्ध होंगे। व्यापार के विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन आय के साथ-साथ खर्च में भी वृद्धि होगी।

मिथुन - का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

अपने-आप को संयत बनाये रखेंगे, तो सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। इस माह की ४, ५, ६ तारीखें सभी दृष्टियों से शुभ एवं अनुकूल रहेंगी। आप पन्ना धारण करें, तो सफलतायें प्राप्त होंगी। अपने इष्ट की साधना-आराधना से समस्याओं का समाधान होगा। घरेलू मामलों की उपेक्षा न करें, आपसी अनबन की सम्भावना। मांगलिक कार्यों का योग बनेगा। नौकरीपेशा वर्ग के व्यक्ति अधिकारियों से मधुर सम्पर्क बनाये रखें। संतान की ओर से चिंताजनक स्थिति निर्मित होगी, अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दें। प्रेम-प्रसंगों को लेकर हानि उठानी पड़ सकती है। बेरोजगार व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। भूमि के क्रय-विक्रय का योग निर्मित होगा। अपने धन को अचल सम्पत्ति में लगाने से लाभ होगा।

सिंह - मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे

जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें, आपसी मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। ३, ८, १०, १३, १६, २० तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। मित्रों के सहयोग से बिगड़े काम बनेंगे। जीवन साथी से सुख प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। ऋण न लें, इससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा। नये सम्पर्क भविष्य में लाभदायक सिद्ध होंगे। व्यापार के विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, आय के साथ-साथ व्यय में वृद्धि भी होगी। संतान की ओर से चिंताजनक सूचनाएं प्राप्त होंगी। नवीन व्यापार की दृष्टि से सौन्दर्य प्रसाधन एवं ज्वेलरी तथा धातु के कार्यों पर विचार किया जा सकता है। यात्राएं अनुकूल रहेंगी। स्वास्थ्य में गड़बड़ी, अतः स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। शत्रु पराजित होंगे।

वृषभ - इ, उ, ऐ, ओ, बा, बी, बु, बे, बो

कला-जगत् के व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति में तथा मानसिक परेशानियों के दौर में रहेंगे। प्रेम-प्रसंग सामान्य ही रहेगा। किसी के कार्य में हस्तक्षेप न करें। नया व्यापार प्रारम्भ करने के लिये समय उचित। जमीन-जायदाद से सम्बन्धित कार्य में लाभ होगा, तनाव की स्थिति में शांति बनाये रखें। कार्तवीर्यार्जुन प्रयोग सम्पन्न करने से स्थिति में सुधार होगा। स्त्रियां स्वास्थ्य के मामले में सावधानी बरतें, स्वास्थ्य सम्बन्धी गिरावट की सम्भावना। कारोबारी यात्राएं फलप्रद होगीं। राज्य पक्ष से सम्मान प्राप्त होगा।

कर्क - ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

२ तारीख सभी दृष्टियों से अनुकूल। नये व्यापार प्रारम्भ होने की सम्भावना, धातु से सम्बन्धित कार्य अधिक फलप्रद होगा। नौकरी की अपेक्षा व्यापार अधिक लाभदायक होगा। अपने विचारों को जबरदस्ती किसी पर न थोपें, वाद-विवाद की सम्भावना। अदालती मामलों में नरमी आयेगी। जीवन साथी की उपेक्षा न करें। आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग क्षीण, लॉटरी, सट्टे आदि में धन व्यय न करें। मांगलिक कार्यों का योग बन रहा है, तुरन्त निर्णय लेने से लाभ होगा। २, ११, १६, २० तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी।

कन्या - टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग नहीं है। अधिकारियों से मतभेद की स्थिति में सावधानी बरतें, अन्यथा मान-हानि होगी। भूमि से सम्बन्धित विवाद गहरे होंगे, स्थानान्तरण के योग बनेंगे। हृदय एवं मानसिक रोगों में वृद्धि होगी। सुख-सुविधा के साधनों में धन अधिक व्यय होगा। महिलाओं को कटु आलोचनाओं का सामना करना पड़ेगा। प्रेम विवाह में प्रारम्भिक अनुकूलता प्राप्त होगी। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। इस माह की ५, १५, १८, २३ व २४ तारीखें अनुकूल रहेंगी।

तुला -

रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग निर्मित होंगे। नये मित्र बनेंगे, जो भविष्य में अनुकूल सिद्ध होंगे। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें, समय अच्छा नहीं। घर-परिवार की उपेक्षा का परिणाम मानसिक अशांति के रूप में सामने आयेगा। स्वास्थ्य को लेकर धन व्यय-भार बढ़ेगा। घर के किसी सदस्य को लेकर चिंता व्याप्त होगी, मानसिक सन्तुलन बनाये रखें। सम्बन्धियों की ओर से सुखद समाचार आने पर प्रसन्नता होगी। मांगलिक कार्यों की सम्भावनाएं बढ़ेंगी। साधनात्मक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा।

वृश्चिक -

तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

व्यापारिक प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा, अतः सोच-समझ कर ही कोई कार्य करें, स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा, अध्ययन में रुचि लें। भूमि तथा भवन के क्रय-विक्रय के योग बन रहे हैं। स्त्री-सुख सामान्य तथा संतान की ओर से उपेक्षित व्यवहार प्राप्त होगा। मित्र वर्ग आप से सहयोग प्राप्त करना चाहेगा। आर्थिक स्थिति सामान्य सी रहेगी। रचनात्मक कार्यों में एवं नेतृत्वपूर्ण कार्यों में रुचि पैदा होगी। कार्य का होना या न होना आपके परिश्रम पर निर्भर रहेगा।

धनु -

ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अपनी बातचीत के प्रभाव से व्यापार में होने वाली हानि से बचें। राज्य पक्ष अनुकूल होगा। अधिकारियों से मतभेद हो सकता है, संयम से काम लें। जीवन साथी से वैचारिक सामंजस्य बनाये रखें। जिस कार्य को हाथ में लिया है, पहले उसे पूरा करें, तभी अन्य कार्यों में हाथ डालें। मित्रों के सहयोग से व्यापारिक स्थितियों में सुधार होगा। मान-सम्मान को क्षति पहुंचेगी। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। सभी सम्मेलनों में व्यस्तता रहेगी। कारोबार के मामलों में यात्रा फलप्रद रहेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। नए अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे।

मकर -

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

व्यापारिक वर्ग के व्यक्ति शिथिलता न बरतें, नवीन व्यापार प्रारम्भ करने का योग नहीं, सोच-समझ कर निर्णय लें, जल्दबाजी में कोई कार्य न करें। शुक्रवार का दिन सामान्यतः अनुकूल। किसी के कहने में आकर वाद-विवाद न करें। संतान पक्ष की ओर से चिंताजनक समाचार प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य में गड़बड़ी बनी रहेगी। अचल संपत्ति का क्रय-विक्रय लाभ देगा, वाहन के क्रय-विक्रय को रोकें। मशीनरी से सम्बन्धित कार्य लाभदायी सिद्ध होंगे।

कुंभ -

गू, गे, गो, सी, सु, से, सो, दा

मन में उदासी की भावना रहेगी, भविष्य में कुछ कर दिखाने की भावना प्रबल होगी। आध्यात्मिक भावनाओं का विकास होगा। मित्रों से मेलजोल बनाकर चलें, सफलता प्राप्त होगी। पत्नी की उपेक्षा न करें तथा वैचारिक सामंजस्य बनाकर चलें। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। राज्य पक्ष की ओर से बाधाओं का आगमन होगा तथा अधिकारियों से वार्तालाप कर समाधान प्राप्त करें। मुकदमे में विजय के अवसर निर्मित होंगे। धार्मिक एवं पारिवारिक प्रसंगों को लेकर यात्रा के योग बनेंगे। जमीन-जायदाद के मामले सुधर सकते हैं, यदि विवेकपूर्ण निर्णय लिए जायें।

मीन -

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

व्यापार के विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। इस माह में आपके लिए २, ४, १३, १७, २३ व २७ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। पदोन्नति होने के योग निर्मित होंगे। सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त करने की आशा व्यर्थ। पत्नी पक्ष के लोग सहायता करेंगे। मित्रों से व्यवहार में कटुता आयेगी। सुख-सुविधा के साधनों में वृद्धि होगी। मुकदमे आदि में हाथ न डालें। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति रोजगार प्राप्त करेंगे। आकस्मिक धन-लाभ के योग।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०६/०६/९५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८	अष्टमी सिद्ध योग
०८/०६/९५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १०	श्री गंगा दशमी
०९/०६/९५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ११	निर्जला एकादशी
११/०६/९५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १३	प्रदोष व्रत
१३/०६/९५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १५	पूर्णमासी
१६/०६/९५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष ४	चतुर्थी व्रत
२३/०६/९५	**आषाढ़ कृष्ण पक्ष ११**	**योगिनी एकादशी**
२५/०६/९५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष १३	प्रदोष व्रत
२७/०६/९५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष ३०	भौमवती अमावस्या
०५/०७/९५	आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७	सर्वार्थ सिद्ध योग
०८/०७/९५	आषाढ़ शुक्ल पक्ष ११	देवशयनी एकादशी
०९/०७/९५	आषाढ़ शुक्ल पक्ष १२	सर्वार्थ सिद्ध योग
१०/०७/९५	आषाढ़ शुक्ल पक्ष १३	प्रदोष व्रत
१२/०७/९५	**आषाढ़ शुक्ल पक्ष १५**	**गुरु पूर्णिमा**
१५/०७/९५	**श्रावण कृष्ण पक्ष ४**	**गणेश चतुर्थी**
१८/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष ६	सर्वार्थ सिद्धि योग
१९/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष ७	सिद्ध योग
२३/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष ११	कमला एकादशी
२५/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष १३	प्रदोष व्रत
२७/०७/९५	**श्रावण कृष्ण पक्ष ३०**	**हरियाली अमावस्या**
२८/०७/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष १	पुष्य नक्षत्र
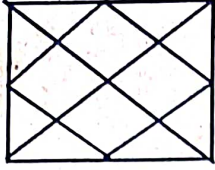
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्र०— दवाखाना कब चलेगा?
उ०— आप पूर्ण भाग्योदय दीक्षा प्राप्त कर पूर्ण भाग्योदय साधना सम्पन्न करें।

डॉ० अविनाश, नागपुर

प्र०— भाग्योदय के लिए क्या करूं?
उ०— ग्रह बाधा दोष-निवारण अनुष्ठान करें।

परमजीत, रायपुर

प्र०— स्वयं का मकान बन सकेगा या नहीं, भाग्यवर्द्धक रत्न अवश्य सुझाएं?
उ०— मकान बनेगा, परन्तु विलम्ब से, सूर्यकांत उपरत्न पहिनें।

कमल कुमार वेद, इन्दौर

प्र०— मेरी मनोकामना कब पूरी होगी?
उ०— तीन वर्ष के अन्दर। शीघ्र समाधान के लिए मनोकामना पूर्ति दीक्षा प्राप्त करें।

कुमारी दुर्गेश गुप्ता, बस्ती

प्र०— मेरी आर्थिक समस्या का समाधान कैसे सम्भव है?
उ०— तारा साधना सम्पन्न करें।

रवीन्द्र श्रीवास्तव, पडरौना

प्र०— जिससे प्रेम है, विवाह सम्भव है या नहीं?
उ०— नहीं।

संजीव सैनी, दिल्ली

प्र०— व्यवसायिक भविष्य कैसा है?
उ०— महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त कर साधना करें।

अविनाश, महेन्द्र गढ़

प्र०— सफल व्यवसाय कौन-सा? कब तक?
उ०— होटल, आयात-निर्यात व घरेलू उद्योग से सम्बन्धित व्यवसाय उचित रहेगा।

निखिल, महेन्द्र गढ़

प्र०— जिद्द करना व चीज न मिलने पर तोड़-फोड़ करना और बाद में कुछ भी याद न रहना।
उ०— सम्मोहन दीक्षा प्राप्त कर साधना करें।

चन्द्रकला यादव, बोरीवली

प्र०— मैं आई० ए० एस० बनूंगा या रेवन्यू सेवा में किस साल जाऊंगा?
उ०— दो वर्ष के अन्दर, किन्तु आई० ए० एस० बनने की सम्भावनाएं अत्यन्त क्षीण।

रमेश तिवारी, पटना

प्र०— मुझे सरकारी नौकरी अथवा अर्ध सरकारी नौकरी मिलेगी या नहीं? कब मिलेगी?
उ०— सरकारी नौकरी की सम्भावनाएं कम हैं, किन्तु अर्ध सरकारी नौकरी मिलेगी और शीघ्र ही।

चन्द्रकान्ता, पठानकोट

प्र०— पुत्र योग कब तक?
उ०— पुत्रेष्टि अनुष्ठान सम्पन्न करें।

सुरेन्द्र पौल, पठानकोट

प्र०— प्रशिक्षण एवं सम्पर्क योजना से ऊपर सुधार निगम में स्थानान्तरण करना हित में है या अहित में?
उ०— हित में।

रामप्रकाश फर्रुखाबाद

प्र०— मुझे सरकारी नौकरी कब तक मिलेगी?
उ०— सम्भावनाएं अत्यन्त ही क्षीण।

मनोज गणपत राव अचलपुर

प्र०— सर्राफे की दुकान सही नहीं चल रही, क्या करूं?
उ०— व्यापार बन्ध निवारण प्रयोग अनुष्ठान करें।

पंकज वर्मा, शाहजहांपुर

प्र०— नौकरी परमानेन्ट कब होगी?
उ०— शीघ्र ही।

नरेश चन्द्रपाल, झाबुआ

प्र०— शेयरों के खरीदने में नुकसान होने से कर्जा, जिससे मानसिक तनाव, क्या करूं?
उ०— आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा एवं साधना।

रवि प्रकाश अग्रवाल, मथुरा

प्र०— क्या मेरी आर्थिक स्थिति हमेशा ऐसी ही बनी रहेगी, इसमें कब सुधार होगा?
उ०— आपकी आर्थिक स्थिति में शीघ्र ही सुधार होगा, आप महालक्ष्मी साधना करें।

खेमसिंह राणा, उत्तरकाशी

प्र०— मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता, क्या कोई ट्रेनिंग आदि करने से लाभ रहेगा या पढ़ना ही ठीक रहेगा?
उ०— आप अभी पढ़ाई में रुचि लें तथा सरस्वती दीक्षा प्राप्त करें।

कीर्तिमान सिंह, मण्डी

प्र०— किराने की दुकान पर नौकरी में हूं, मैं दुकान खोलना चाहता हूं?
उ०— आप दुकान खोलें, आपके लिए उचित होगा।

मानसिंह सोलंकी, बम्बई

प्र०— क्या आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग है? कौन-सा प्रयोग शीघ्र सफलतादायक सिद्ध होगा?
उ०— योग क्षीण है, आप आकस्मिक धन-प्राप्ति दीक्षा प्राप्त कर साधना करें, लाभ होगा।

सुरेश कुमार, अहमदाबाद

प्र०— दुकान में लाभ होगा या नहीं?
उ०— दुकान में लाभ होगा, किन्तु धैर्य रखें।

हेमन्त शाक्य, सागर

प्र०— मुझे इज्जत और शोहरत चाहिए, किस क्षेत्र में आगे बढ़ूं?
उ०— कला अथवा समाज सेवा के क्षेत्र में।

कु० आरती सोलंकी, खरगान

(कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)

नाम :-...

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्................

जन्म स्थान :- .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-...

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय
306, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034

दिव्यास्त्र स्वरूप, शत्रु स्तम्भन करने वाली

मन्त्र

*इस बार हम **बगलामुखी साधना** से सम्बन्धित एक पत्र का प्रकाशन कर रहे हैं। हमें उम्मीद है, कि साधक एवं पाठकगण भाई दिनेश जी के पत्र व उनके द्वारा सम्पन्न की गयी, पूज्य गुरुदेव द्वारा बतायी गयी बगलामुखी साधना विधि को अपनाकर अपने जीवन की अड़चनों को पूर्णतः समाप्त कर सकते हैं। यहां प्रस्तुत है श्री दिनेश जी तथा पत्रिका कार्यालय द्वारा आदान-प्रदान किए गये पत्र—*

परम श्रद्धेय गुरु जी,

प्रणाम,

मैंने आपके द्वारा लिखित **''मंत्र रहस्य''** एवं **''तांत्रिक सिद्धियां'', ''वृहद हस्तरेखा शास्त्र''** तथा अन्य ज्योतिष से सम्बन्धित कई ग्रंथों का अध्ययन किया है। आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** को पढ़कर मुझे ऐसा विश्वास होने लगा है, कि मेरे जीवन पर और मेरे पूरे खानदान पर जो संकट पिछले कई वर्षों से मण्डरा रहा है, वह दूर हो जायेगा। बहुत ही ज्यादा उम्मीद और प्रार्थना करते हुए यह पत्र लिख रहा हूं।

पत्रिका पढ़कर मुझे यह मुझे विश्वास हो गया है, कि वर्तमान युग में आप ही भगवान राम, भगवान कृष्ण के साक्षात् अवतार हैं, तथा **हम जैसे दुःखी मनुष्यों को प्रसन्नता प्रदान करने तथा मुसीबतों से छुटकारा दिलाने के लिए ''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' के रूप में अवतार लेकर इस कलिभूमि पर विचरण करते हुए हम पतितों का उद्धार करने के लिए संकल्पबद्ध हैं।**

हे गुरुदेव! आप मेरी याचना को स्वीकार कर मुझे इस घोर संकट से उबार लें। हे दीनबन्धु! हे दीनानाथ! हे करुणा के सिन्धु! अब तो आप के दर पर आ गया हूं, और मुझे पूर्ण विश्वास है, कि आप मुझे खाली हाथ नहीं लौटायेंगे। मैं बहुत ही व्यथित हृदय से यह पत्र लिख रहा हूं, और यह समझ नहीं पा रहा हूं कि अपनी किस परेशानी को सबसे पहले आपके समक्ष व्यक्त करूं?

मेरा तीन भाइयों का संयुक्त परिवार है, और मैं अपने परिवार में सबसे बड़ा हूं। इस कारण सम्पूर्ण परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेवारी मेरे ऊपर आ गयी, क्योंकि जब मैं मात्र तेरह वर्ष का ही था, तभी मेरे पिता जी की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। जब तक वे जीवित थे, तो घर-परिवार के सभी लोग, जैसे— मेरे बड़े पिता जी तथा चाचा जी हम सभी को अपने सिर, आंखों पर बैठा कर रखते थे।

मेरे पिता जी जल निगम में मुख्य अभियन्ता के रूप में कार्यरत थे, और आज से पच्चीस वर्ष पूर्व इतना बड़ा अधिकारी होना बहुत ही अधिक मान एवं प्रतिष्ठा का सूचक था। पिताजी के रहते हुए हम सभी भाई और मेरी दो बहिनें बिलकुल राजकुमार व राजकुमारियों की तरह जीवन व्यतीत करते थे। हमारे चेहरे पर आयी दुःख की एक छोटी-सी लकीर से भी तहलका सा मच जाता था, और पिताजी हमारी सारी इच्छाएं पूरी करते रहते थे।

मैं वह दुर्भाग्यशाली दिन कभी नहीं भूल सकता हूं, जिस दिन ने मेरे सिर से पिता का साया छीन लिया। उस दिन सुबह-सुबह ही पिताजी को साइड पर जहां पुल बन रहा था, वहां जाना था। वे एक जीप में बैठ कर चले गये। आठ बजे हम भी अपने स्कूल चले गये। दोपहर में चपरासी आया और बोला— दिनेश को प्रिंसिपल ने बुलाया है।

मैं समझ नहीं सका कि क्या वजह हो सकती है? मैं जब प्रिंसिपल के ऑफिस में पहुंचा, तो थोड़ी देर बाद ही मेरे दोनों भाई और बहिनें भी वहां आ गयीं। प्रिंसिपल ने कहा, कि तुम्हारे पापा की तबीयत खराब हो गयी है, इसलिए तुम लोगों को अभी घर जाना है।

बिना कुछ सोचे-समझे, मन में अनेक बाल-सुलभ प्रश्न लिए मैं अपने भाइयों और बहिनों के साथ घर आ गया। घर आकर देखा तो समझ ही नहीं पाया कि पापा को जमीन पर क्यों लिटाया गया है? मम्मी क्यों रो रही है. . .और मम्मी ही नहीं, वहां तो सभी लोग रो रहे थे। मेरे एक पड़ोस के अंकल आकर हम सभी को घर के अन्दर ले गये और सारी स्थिति को समझाने का प्रयास किया। मेरे छोटे भाई-बहिन मां को रोता देखकर रोने लगे। जब मुझे यह पता चला कि पापा की जीप एक्सिडैन्ट में मृत्यु हो गयी है, तो मैं बिलकुल विश्वास नहीं कर सका, लेकिन जब उन्हें ले जाकर श्मशान में मेरे छोटे-छोटे हाथों से मुखाग्नि दिलायी गयी और अन्य क्रिया-कर्म कराये गये, तब भी मुझे यही लगता, कि अभी मेरे पापा आयेंगे और मुझे प्यार से बिठा कर पढ़ायेंगे।

समय के साथ ही साथ धीरे-धीरे मेरे जख्म भरते चले गये और असमय पड़ गये पारिवारिक बोझ के कारण मैं बहुत जल्दी बड़ा हो गया। पापा की पेन्शन से मिलने वाले पैसों से ही अब हमारा गुजारा चलने लगा, क्योंकि **हमें बच्चा जान कर चाचा और बड़े पिता जी ने जमीन-जायदाद को धीरे-धीरे अपने कब्जे में कर लिया, और हमें पूरे परिवार से अलग कर अनाथ जीवन जीने के लिए छोड़ दिया।**

उस दिन से ही मैं निरन्तर अपने भाग्य से लड़ता आ रहा हूं, किन्तु फिर भी मुझे भगवान पर पूरा भरोसा

है, कि मेरा कल्याण होगा ही, क्योंकि "निर्बल के भगवान।"

हे गुरुदेव! मैंने आप में ही भगवान का दर्शन किया है। **आप ही कोई रास्ता बताइये, जिससे मैं वापिस अपनी जमीन-जायदाद को प्राप्त कर सकूं, अपनी बहिनों का विवाह कर सकूं तथा भाइयों को उच्च शिक्षा दिला सकूं,** और कोई छोटा-सा व्यापार प्रारम्भ कर अपने पिता के द्वारा अर्जित प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित कर सकूं। उम्मीद व विश्वास के साथ मैं इस पत्र के साथ अपनी फोटो भी भेज रहा हूं, जिससे आप जो उचित समझें दीक्षा एवं साधना प्रदान करें।

आपका कृपाकांक्षी
दिनेश,
दमदम, कलकत्ता

प्रिय दिनेश,

आशीर्वाद

तुम्हारा अत्यन्त मार्मिक व हृदयस्पर्शी पत्र प्राप्त हुआ। निश्चित रूप से तुम्हारे साथ तुम्हारे भाग्य ने अत्यन्त दारुण्य खेल खेला है, लेकिन तुम्हारे भाग्य ने ही यह सुअवसर तुम्हें प्रदान किया, कि तुमने पत्रिका कार्यालय को अपनी व्यथा पत्र के माध्यम से व्यक्त की, **तुम्हारी सभी परेशानियों का निदान पूज्य गुरुदेव ने केवल मात्र एक साधना के द्वारा ही बताया है, वह साधना है, दस महाविद्याओं में से एक "बगलामुखी साधना।"** इस साधना के बारे में तुमने पत्रिका में पढ़ा होगा, फिर भी पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार इसकी साधना विधि तथा इसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री **बगलामुखी यंत्र, पीली हकीक माला** तथा सम्पूर्ण **सुख-समृद्धि प्रदाता गुटिका** भेजा जा रहा है।

इस साधना को सम्पन्न कर आप अपनी प्रत्येक समस्या से मुक्ति पा सकते हैं। इस त्रिदिवसीय साधना को किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ कर सकते हैं।

ब्रह्मास्त्र स्वरूपा शत्रुओं को स्तम्भित करने वाली पीताम्बरा देवी के स्मरण मात्र से ही पवन की गति भी रुक जाती है, अतः इनकी साधना सम्पन्न साधक के जीवन में किसी भी प्रकार की अड़चनें, परेशानियां, बाधाएं रहती ही नहीं हैं, यदि कोई समस्या हो भी तो उसका अतिशीघ्र ही निदान हो जाता है।
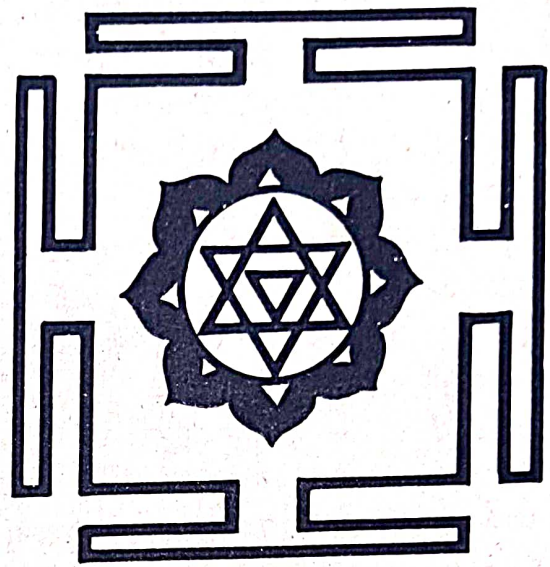
अत्यन्त कृपामयी पीताम्बरा देवी की साधना विधि इस प्रकार है—

"दैनिक साधना विधि" पुस्तक के अनुसार पहले गुरु-पूजन सम्पन्न करें, उसके पश्चात् निम्न प्रकार से न्यास करें-

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः
बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा,
सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्,
वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं,
जिह्वां कीलय कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट्,
बुद्धिंविनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्।

फिर पूरे शरीर को स्पर्श करते हुए मंत्र बोलें— मूलं सर्वतत्त्व व्यापिनी बगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि नमः सर्वांगे।

फिर बगलामुखी देवी का ध्यान करें-

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेदी,
सिंहासनोपरि गतां परिपीत वर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्य विभूषितांगीं;
देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम्।।
जिह्वाग्रमादाय करेणदेवी, वामेन शत्रुन् परि पीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

अर्थात् वे पीताम्बरा देवी, जो सुधा सिन्धु के मध्य स्थित **मणियुक्त मण्डप** के मध्य **रत्न जड़ित सिंहासन** पर आसीन हैं, जो पीतवर्णा हैं, पीले वस्त्र, पीले आभूषण और पीली माला से अलंकृत हैं, जो दाहिने हाथ में मुद्गर और बाएं हाथ से शत्रु की जीभ पकड़ कर गदा की चोट से शत्रु को पीड़ित कर रही हैं, उन्हें मैं श्रद्धायुक्त नमन करता हुआ अपनी रक्षा की प्रार्थना करता हूं।

फिर रक्त चन्दन से पीले वस्त्र के ऊपर तीन बिन्दियां निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए लगाएं—**ग्लौं गणपतये नमः, मूलं ॐ आधार शक्ति कमलासनाय नमः** एवं **सर्व शक्ति पद्मासनाय नमः।**

इन बिन्दियों के ऊपर **बगलामुखी यंत्र** को स्थापित करें, फिर शत्रु स्तम्भनी मां बगलामुखी का आह्वान करें—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां मुख स्तम्भिनि सकल मनोहारिणि अम्बिके इहागच्छ सन्निधिं कुरु सर्वार्थं साधय साधय स्वाहा।

आवाहन के उपरान्त सम्पूर्ण **सुख-समृद्धि प्रदाता गुटिका** को यंत्र के दाहिनी ओर **पीली सरसों की ढेरी** पर रखें, और -**"ॐ अपराजितायै स्तम्भिन्यै मोहिन्यै विजयायै नमः"**, बोल कर पीला पुष्प चढ़ायें।

पूजा समाप्त कर **पीली हकीक माला** से निम्न मंत्र का एकाग्रचित होकर छः माला मंत्र-जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं फट्

इस प्रकार तीन दिन तक पूजन सम्पन्न करने के उपरान्त जिस दिशा में शत्रु का घर हो, उसी दिशा में जा कर गुटिका के नीचे रखे सरसों को बिखेर दें। बगलामुखी यंत्र को तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दें, तथा २१ दिन तक गुटिका को अपनी दाहिनी भुजा में पीले धागे से बांधकर धारण करें और २२ वें दिन उसे भी नदी में प्रवाहित कर दें।

इस प्रकार यह साधना यदि आप पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ सम्पन्न कर लेते हैं, तो निश्चित रूप से ही आपके समस्त कार्य आपकी इच्छानुसार पूर्ण हो जायेंगे।

पूज्य गुरुदेव ने आपको साधना में सफलता प्राप्त हो, ऐसा आशीर्वाद प्रदान किया है। इस साधना में आपको पूर्वाभिमुख होकर पीले आसन पर, पीले ही वस्त्र पहिन कर, बैठकर मंत्र-जप करना है। ब्रह्मचर्य का पालन करें, शांत-चित्त रहें और यथा सम्भव अपना अधिक समय घर में ही आध्यात्मिक वातावरण बनाते हुए व्यतीत करें।

आदरणीय पूज्य गुरुदेव,

श्रीचरण वन्दन,

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। आपके द्वारा दिये गये निर्देश के अनुसार ही मैंने साधना सम्पन्न की। जिस दिन से मैंने साधना प्रारम्भ करने का निर्णय लिया, उसी दिन से मुझे मेरी परेशानियों से राहत मिलने लगी, और साधना सम्पन्न होने के सात या आठ दिन बाद ही मेरे चाचा व बड़े पिताजी दोनों लोग मेरे घर आये, और क्षमा-प्रार्थना करते हुए हमारे हिस्से की जमीन-जायदाद हमें वापिस कर गये।

इस प्रकार का परिणाम देख, मेरी आंखें भीग गयीं और मैं पूरी तरह से आपके प्रति कृतज्ञ हो उठा। इसके बाद पन्द्रह दिन के अन्दर ही अन्दर मेरी बड़ी बहिन के रिश्ते की बात तय हो गयी, और लड़के वालों ने बिना किसी दहेज की मांग किए ही रिश्ता स्वीकार कर लिया. . . और पूरा महीना बीतते-बीतते हमारे कई रिश्तेदार, जिन्होंने मेरे पिता जी से पैसा उधार लिया था, जिसकी हमें जानकारी भी नहीं थी, आकर स्वयं ही दे दिया।

इस प्रकार गुरुदेव! आपके अनुग्रह से मैंने अपनी समस्याओं से एक-एक कर छुटकारा पा लिया है। आप से अनुरोध है, कि हमारा यह पत्र और साधना विधि इसी प्रकार पत्रिका में प्रकाशित कर दें, जिससे कि मेरे जैसे दुःखी अन्य लोगों को भी उनके कष्टों से मुक्ति मिल सके।

मेरा रोम-रोम आपके प्रति कृतज्ञ है कि आपने मुझे फोटो के द्वारा ही **"शत्रु स्तम्भनी बगलामुखी दीक्षा"** प्रदान की तथा मां पीताम्बरा की यह अत्यन्त लघु और तीक्ष्ण प्रभावयुक्त साधना के रहस्य सूत्रों को उजागर किया।

आप-अपनी कृपा-दृष्टि इसी प्रकार हमारे ऊपर बनाए रखें। आप से यह विनम्र निवेदन है, कि आप मेरा पूरा पता पत्रिका में प्रकाशित नहीं करें, क्योंकि मैं तो एक निमित्त मात्र हूं, मैं आपकी सेवा में रत रहूं और साधना के द्वारा अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में अग्रसर होता रहूं, इसी प्रार्थना के साथ।

आपका कृपापात्र
दिनेश, कलकत्ता

गुरु पूर्णिमोत्सव

एक ऐसा वसन्तोत्सव जहां प्रत्येक पुष्प-शिष्य को गुरु-वसन्त अपने हृदय से लगाने को आतुर है।

9-10-11-12 जुलाई 1995

प्रिय बन्धु,

लो! अब वह पूर्णिमा भी आ ही गई, जिसका इंतजार कण-कण को होता है, क्योंकि यह क्षण है मिलन का, और मिलकर आत्मसात् हो जाने का, क्योंकि यह तो प्रेम युक्त होते हुए प्रेम की पूर्णता की पूर्णिमा है, चूंकि यह सम्बन्ध दैहिक नहीं, आत्मिक है. . . और अपना स्वत्व गुरु-चरणों में पूर्णता से समाप्त कर देना ही शिष्य की चैतन्यता है, सौभाग्यशालिता है।

वैसे तो गुरु का जीवन में मिलना ही दुर्लभ है, और गुरु मिल भी जाये, किन्तु वे सही अर्थों में गुरु हों, यह कोई आवश्यक नहीं, जब व्यक्ति के कई जन्मों के पुण्य इकट्ठे होते हैं, तभी उसे वास्तविक गुरु की प्राप्ति होती है, अन्यथा वह उन्हीं विषय-वासनाओं में लिप्त होकर अपने जीवन को समाप्त कर डालता है, और फिर एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा. . .इस प्रकार जन्म-जन्म तक वह वास्तविक गुरु की खोज में भटकता ही रहता है।

किन्तु यह बात भी सत्य है, कि जब तक वह जीवित रहता है, तब तक उसे कोई पहिचान नहीं पाता, सब उसकी आलोचना करते हैं, उसे प्रताड़ित करते हैं, और वह निरन्तर इन प्रबल झंझावातों से जूझता हुआ भी मुस्कराता ही रहता है, और बार-बार उन्हें यह समझाने का प्रयास करता है, कि **मैं जन्म-मरण से परे हूं, जहां कालखण्ड भी अपने-आप में तुच्छ और नगण्य है, और जिस स्थिति में मैं हूं, उसे तुम अपनी चैतन्यता, अपनी क्षीण बुद्धि से समझ भी नहीं सकते.** . .और यही मैं भी कहना चाहता हूं, कि जिस रूप में पूजनीय गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी आपके सामने उपस्थित हैं, उन्हें मैं कुछ ही शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।

यह तो तुम लोगों का सौभाग्य है, कि तुम उनकी उपस्थिति के साक्षीभूत बने हो, और उस "कौस्तुभ जयंती" के सुअवसर पर तुमने उनसे ऐसी उच्चकोटि की दीक्षाएं प्राप्त करने का सौभाग्य भी प्राप्त किया है, जो कोई गुरु नहीं, अपितु सद्गुरु ही प्रदान कर सकता है, और आप तो षष्ठीपूर्ति महोत्सव पर इस गुरु पूर्णिमा में आने का वायदा कर ही चुके हैं, तुम उन्हीं की आत्मा के अंश स्वरूप हो, यह तुमने षष्ठीपूर्ति महोत्सव पर लाखों की संख्या में आकर नाच-कूदकर, आनन्दमग्न हो, प्रेममय हो साबित कर दिया है।

. . .और जब तुमने यह बता ही दिया है, कि तुम उन्हीं के प्राण हो, उन्हीं की धड़कन हो, तो गुरु पूर्णिमा(९-१०-११-१२ जुलाई १९९५) पर आने के लिए ठिठकना कैसा, तुम्हें तो आना ही है, यह कोई कहने की बात तो नहीं है, और न ही इसे कहने की अब कोई आवश्यकता ही रह गई है, क्योंकि जीवंत-जाग्रत गुरु की पूर्णिमा कोई सामान्य घटना नहीं होती, और तुम तो फिर उन्हीं के प्राण हो, और प्राण कैसे अलग हो सकते हैं, उन्हीं के आत्मयुत हो, तो फिर कैसे उनसे दूर तुम जीवित रह सकते हो, और कितनी देर तक।

. . .क्योंकि दूर रह कर भी तुम जीवित नहीं रह सकते, क्योंकि जिस गुरु की पूर्णिमा पर मैं आप लोगों का आवाहन कर रहा हूं, उन्हीं ने तुम्हें यह जीवन प्रदान किया है, और अपने कठोर परिश्रम से, अपने रक्त की एक-एक बूंद का कतरा-कतरा बहा कर तुम्हारी मूर्ति को गढ़ा है, तुम्हें सजाया है, उसमें प्राण प्रस्फुटित किये हैं, स्पन्दन दिया है, चैतन्यता प्रदान की है, और तुम्हें चलना, फिरना, हंसना, चहकना सिखाया है।

पहले तुम्हारा जीवन था ही क्या— नीरस, एक ठूंठ की तरह, किन्तु पूज्य गुरुदेव ने अपने नाम के अनुरूप ही माली बनकर बड़ी मेहनत और लगन से प्रेम का बीज अंकुरित कर अपनी बगिया के फूलों को सींचा है, उन्हें खुशबू दी है, जिन फूलों पर भंवरे झूम-झूम कर मस्ती के साथ उनका रसास्वादन कर सकें. . .इन आनन्ददायक क्षणों में इस वसंतोत्सव पर फिर क्यों न डूब जायें मस्ती में, और ऐसा ही करना है, अब गुरु-चरणों में लीन हो अपनी समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर लेना है. . . और अब कोई इच्छा शेष नहीं रह सकती, क्योंकि ऐसा ही कुछ घटित होने जा रहा है, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी।

तुम सभी शिष्य रूपी पुष्पों को संवारने में कितनी बार तुम्हारे दामन पर उगे कांटों को उन्होंने अपनी उंगलियों पर सहा है, और फिर भी चुप रह गये, कितनी बार तुम उन्हें एक के बाद एक कांटे चुभोते गये और वे मुस्कराते हुए अपने झरते हुए लहू को देखकर भी कुछ नहीं बोले, तुम्हें बदले में प्रेम ही दिया, और हर बार कुछ दिया ही, और दे रहे हैं, इसीलिए तो किन्हीं विशेष क्षणों में किसी न किसी माध्यम से तुम्हें अपने निकट, अपनी सामीप्यता प्रदान कर, स्थान-स्थान पर शिविरों का आयोजन करके देने का बहाना ढूंढते रहते हैं। वास्तव में शिविर तो माध्यम है तुम्हें एकत्र कर उस लक्ष्य तक पहुंचा देने का, जिसके लिए वे आये हैं, और इतना तनाव, दुःख, पीड़ा, कष्ट, आलोचना आदि, जो तुम्हारा दिया हुआ है, उस जहर को शिव के समान अपने कण्ठ में स्थापित करके भी आह्लादित और प्रसन्न दिखाई देते हैं।

. . .और ऐसा इसलिए, क्योंकि वे अपना सर्वस्व दे देना चाहते हैं, जो कुछ उनके पास शेष रह गया है, क्योंकि वे अपने ही समरूप तुम्हें बना देना चाहते हैं, अमृतमय, प्रेममय, आनन्दमय, जहां न किसी प्रकार का दुःख हो, और न ही किसी प्रकार का शोक।

—क्योंकि वे चाहते हैं, कि तुम सुगन्ध बनकर चारों ओर व्याप्त हो सको, स्वयं सुवासित होते हुए दूसरों को सुवासित कर सको।

—क्योंकि उन्होंने तुम से भी एक ऐसे ही उपवन की कल्पना की है।

—क्योंकि तुम उन्हीं के द्वारा रोपे गये पौधे हो, और माली को इस बात का पूर्णतः ज्ञान होता है, कि कौन-सा बीज ज्यादा उत्तम होगा, जिसमें खाद-पानी डालने पर वह आशानुकूल अपना फल भी प्रदान कर सके।

उन्हें तुम पर पूर्ण विश्वास है, कि तुम उनके अनुकूल बन सकोगे और इसके लिए तुम्हें बार-बार उनके चरणों में आना ही होगा, तभी तो वे तुम्हें कुछ दे सकेंगे, जब तुम आओगे ही नहीं, तो वे तुम्हें दे भी क्या सकेंगे!

यह तो तुम्हारा फर्ज है, तुम्हारा कर्त्तव्य है, कि तुम आओ और उनके चरणों में श्रद्धा, विश्वास और प्रेम के पुष्प अर्पित कर, अपने को समर्पित कर गुरु-ऋण से मुक्त हो जाओ।

—तुमने हमेशा उनसे लिया ही है, कभी कुछ दिया भी है? हमेशा अपने स्वार्थ के वशीभूत हो "गुरु-गुरु" रटते रहते हो, और जब उस इच्छा की पूर्ति हो जाती है, तो अपने घर में दुबक

कर बैठ जाते हो—क्या कभी तुमने उनके दुःख को हल्का करने का प्रयास किया है. . .शायद निस्वार्थ भाव से कभी नहीं किया. . .यदि किया होता, तो उन्हें समाज का इतना जहर नहीं पीना पड़ता, और न ही इतनी वेदना सहन करनी पड़ती। वे तो तुम्हें अपने अनुरूप ढालना चाहते हैं, किन्तु तुम्हीं भ्रमवश लक्ष्य से बार-बार दिग्भ्रमित हो जाते हो, और उन्हें सबसे बड़ा दुःख ही इसी बात का है, कि वे जब-जब तुम्हें अपने हृदय से लगाने के लिए खड़े होते हैं, तुम उस क्षण को चूक जाते हो, उस क्षण का तुम महत्त्व नहीं समझ पाते. . .यह तो समय का एक चक्र है, जो एक बार चूक जाने पर वापिस पूरा चक्कर लगाने के बाद भी प्राप्त होना असम्भव सा है, इसलिए उस क्षण को चूक जाना शिष्य की अज्ञानता है, मूर्खता है, जिसके फलस्वरूप वह सौभाग्य से वंचित हो जाता है।

गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली

—और इसी दुःख, इसी वेदना को २१ अप्रैल इलाहाबाद में अपने समस्त शिष्यों के बीच उन्होंने स्पष्टतः शिष्यों के सम्मुख व्यक्त भी कर दिया. . .और जाने का निश्चय कर बैठे। जिसे सुनकर सभी के मन भय से कांप उठे, और सभी इस बात से भी आशंकित होने लगे, कि इस बार गुरु पूर्णिमा मनाई भी जायेगी . . . या क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता।

किन्तु तुम शिष्यों की करुण प्रार्थना पर न जाने का निर्णय दे, कृपा कर उन्होंने एक बार फिर हमें अपना ऋणी कर दिया।

यह हमारा परम सौभाग्य और गुरुदेव की परम अनुकम्पा ही है, कि उन्होंने इस बार हमें यह अवसर प्रदान किया है, हमें एक और अवसर, एक और मौका दिया है, अपने-आप को गुरु-चरणों में समर्पित कर देने का, क्योंकि तभी तो हम उनके प्राणों से एकाकार हो, उस दिव्य आनन्द में लीन हो सकेंगे।

गुरुदेव ने एक बार फिर हम शिष्यों का अनुग्रह स्वीकार कर. . .और वापिस इस जीवन में लौटकर, वास्तव में हम शिष्यों को धन्य-धन्य कर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। गुरु पूर्णिमा इसी गुरु-ऋण से मुक्त होने का दिव्य क्षण है, जब गुरु, शिष्य की समस्त न्यूनताओं को, समस्त भूलों को माफ कर उसे अपने में समाहित करने के लिए तत्पर खड़ा रहता है।

आवश्यकता है इस क्षण को समझने की, आवश्यकता है इस पूर्णिमा के महत्त्व को समझने की, आवश्यकता है जीवित-जाग्रत गुरु को पहिचानने की . . . और अगर अब भी नहीं समझ सके, तो फिर कोई और समझा भी नहीं सकेगा, फिर तो उसके पास हाथ मलने के सिवाय और कुछ शेष बचेगा नहीं, और तब उसे एहसास होगा, कि वह एक बहुत बड़े सौभाग्य से वंचित रह गया, आने वाली पीढ़ियां भी उसे क्षमा नहीं कर सकेंगी, इससे ज्यादा उसके लिए आत्म-ग्लानि की बात और हो भी क्या सकती है, कि उसने समाज में चंद चांदी के टुकड़ों को इकट्ठा करने के चक्कर में कोहिनूर हीरे को ही गंवा दिया।

उन्होंने फिर एक बार आवाज दी है, कानों में मधुर संगीत झंकृत किया है, वीणा के तार छेड़े हैं, हृदयों को स्पन्दित किया है, अब यह तो तुम पर निर्भर करता है, कि तुम कितना उन्हें समझ सके हो। इस बार हमें उन्हें निराश नहीं करना है, दुःख, वेदना, तकलीफ नहीं देनी है, अपितु यह दिखा देना है, कि हम उन्हीं के आत्मांश हैं, उन्हीं का रक्त हमारी धमनियों में बह रहा है। हमें भी यह दिखा देना है, कि हम उनसे अलग नहीं हैं, उनके लहू की एक-एक बूंद का महत्त्व हमें ज्ञात है, और इसे यों ही व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

उनके परिश्रम का प्रतिरूप बनकर दिखाना होगा, और जब ऐसा हो जायेगा, हम इन भावों को अपने प्रेमाश्रुओं से उनके चरणों में तिरोहित कर देंगे, अपने शरीर, मन, प्राण, रोम-प्रतिरोम को उनके चरणों में विसर्जित कर देंगे, तभी सही अर्थों में शिष्य कहला सकेंगे, क्योंकि यह सब कुछ गुरु को अर्पित कर देना ही शिष्यता है, तभी हम गुरुमय हो सकेंगे, गुरु-ऋण से मुक्त हो सकेंगे, और पूर्णिमा के चन्द्र की भांति शीतल एवं सौन्दर्ययुक्त हो प्रेम-वर्षा से सराबोर हो सकेंगे।

पानीपत के **सत्यवीर सक्सेना, गुरु सेवक** तथा **हरियाणा सिद्धाश्रम साधक परिवार,** इन आयोजकों की ओर से आप सब गुरु बहिन-भाइयों को आवाहन है, कि **पानीपत** में हो रहे **९-१०-११-१२ जुलाई ९५** को इस चार दिवसीय शिविर में आकर, इस पूर्णिमा पर तुम्हें पूर्ण हो जाना है. . .और खाली हाथ नहीं लौटना है।

गुरुदेव के श्री चरणों का अपने प्रेमाश्रुओं से पूजन कर, उन्हें अपने प्रेम की बेड़ियों से बांधकर, अपने मध्य रहने के लिए उन्हें विवश कर देना है।
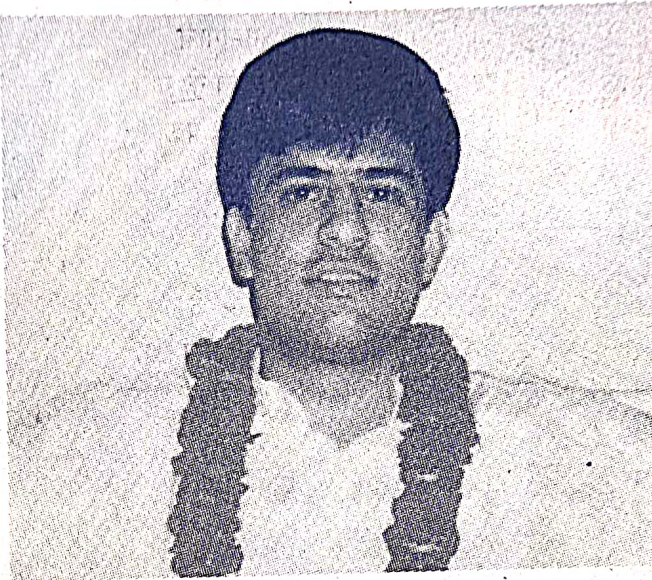
आकर्षक योजना
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
१९८१ से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के कई दुर्लभ अंकों की मांग आप सभी पाठकों द्वारा की गई है। आपकी इस आवश्यकता को ध्यान में रख कर ही हमने इन दुर्लभ अंकों का प्रकाशन किया है। इन्हें प्राप्त करने के लिए आप सिर्फ अपना नाम व पता हमें लिख कर भेज दें, और हम आपको मात्र १००/- में भेजेंगे इन दुर्लभ १२ अंकों का पूरा सेट, इनका संग्रह आप अपने लिए कर सकते हैं और अपने किसी मित्र को उपहार में दे कर उसके जीवन को प्रशस्त करने का मार्ग प्रदान कर सकते हैं . . . अब देर नहीं करें –
पुनर्प्रकाशित विशेषांक –
१९९१ का पूरा सेट
१९९२ का पूरा सेट
१९९३ का पूरा सेट
१९९४ का पूरा सेट
१९८६ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८७ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८८ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८९ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९९० के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
इनमें से आप कोई भी १२ अंक अपनी इच्छानुसार हमें लिख भेजें।
हां! इतना अवश्य है कि यदि आप एक साथ ६ अंक मंगायेंगे, तो ६०/- देय होगा तथा १२ अंक मंगाने पर मात्र १००/- देय होगा। प्रति अंक १५/- देय होगा।
नोट : पुराने अंक सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं।
: प्राप्ति स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फैक्स : ०२९१-३२०१०

श्राद्ध
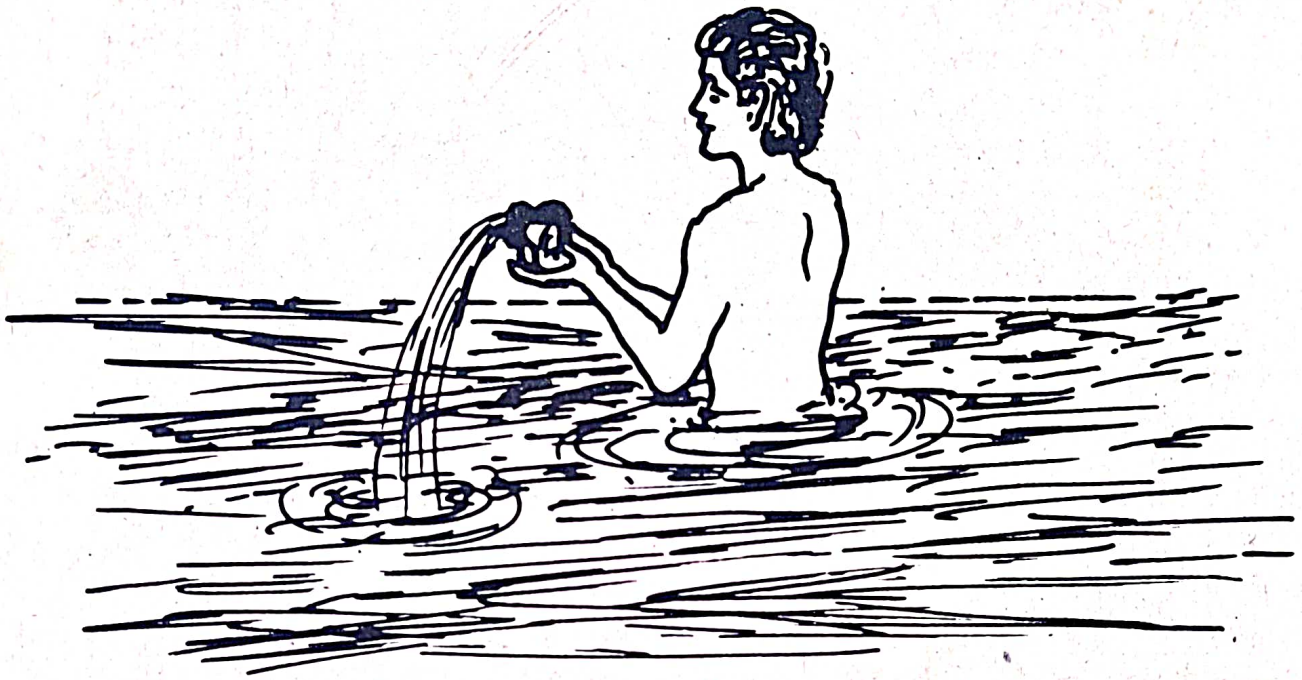
सृष्टि का क्रम जिस प्रकार एक निर्धारित समयानुसार सम्पन्न होता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन का निर्धारण भी विभिन्न निश्चित क्रमों से गुजरता हुआ जन्म से मृत्यु और मृत्यु से जन्म की ओर गतिशील होता है।

विश्वनियन्ता के इस निर्धारित क्रम के अनुसार ही हमारे ऋषियों-महर्षियों ने सम्पूर्ण मानव-जीवन को अर्थात् गर्भ में आगमन से लेकर जन्म और फिर मृत्यु तक, पूर्ण काल चक्र को विभिन्न खण्डों में विभाजित कर दिया है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया, जिससे मनुष्य एक अनुशासित

श्राद्ध का अर्थ है– श्रद्धापूर्वक कुछ देना या श्रद्धा व्यक्त करना। अपने मृत पूर्वजों के लिए कृतज्ञता ज्ञापन करना ही श्राद्ध है, क्योंकि भारतीय मान्यता के अनुसार मृत जीवात्मा विभिन्न लोकों में भटकती हुई दुःख योनियों में प्रविष्ट होती है, तथा अनन्त दुःखों को भोगती है . . . शास्त्रीय परम्परानुसार श्राद्ध के माध्यम से मृतात्मा को शांति प्राप्त होती है।

और सुव्यवस्थित तरीके से अपने जीवन को व्यतीत करे, और साथ ही प्रत्येक कार्य के साथ, वे कार्य, जो मानव-जीवन को प्राप्त करने और सुरक्षित रखने के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं, उनके हेतु परग पिता परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर, उनकी प्रसन्नता और आशीर्वाद प्राप्त कर सके।

सनातन धर्म में इस निर्धारित कार्य को ''संस्कार'' के नाम से सम्बोधित किया गया है। बहुत ही महत्त्वपूर्ण होते हैं ये संस्कार, योग्य पुत्र अथवा पुत्री की प्राप्ति हेतु। गर्भ में आगमन के समय 'पुंसवन संस्कार' सम्पन्न किया जाता है, तो जन्म लेने के उपरान्त 'नामकरण', 'चूड़ामणि संस्कार' सम्पन्न किया जाता है। जब बालक थोड़ा बड़ा होता है, अर्थात् पांच से पन्द्रह वर्ष की अवस्था तक उसका 'उपनयन संस्कार' कर, उसे शुद्र से द्विज बनाकर पूर्ण विद्यार्जन का अधिकार प्रदान किया जाता है।

यौवन का पदार्पण होने पर 'विवाह संस्कार' किया जाता है, और इस प्रकार विभिन्न संस्कारों से गुजरता हुआ व्यक्ति जब वृद्धावस्था को प्राप्त कर अपने जर्जर और रोगग्रस्त शरीर का त्याग कर किसी अन्य शरीर को धारण करने के लिए प्रस्थान करता है, तो उसके द्वारा त्यागे गये शरीर को हिन्दू धर्मानुसार अग्नि में समर्पित कर 'कपाल क्रिया संस्कार' सम्पन्न किया जाता है।

अत्यधिक व्यवस्थित है हमारी सनातन धर्म की संस्कृति और अत्यधिक उदार व सहृदय भी। मृत्यु के बाद भी हमारा रिश्ता उस मृतात्मा से जुड़ा रहता है, समाप्त नहीं होता, और उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने तथा उसकी मुक्ति के लिए ही बनाया गया है **''श्राद्ध''** नामक संस्कार।

श्राद्ध का महत्त्व सर्वविदित है, इसके बारे में कोई आवश्यक नहीं है, कि विस्तृत विवेचना की जाय, किन्तु यह बहुत ही कम लोगों को ज्ञात होगा, कि श्राद्ध बारह प्रकार के होते हैंः—

१. नित्य-श्राद्ध

जो श्राद्ध प्रतिदिन किया जाय, वह नित्य-श्राद्ध है। तिल, धान्य, जल, दूध, फल, मूल, शाक आदि से पितरों की संतुष्टि के लिए प्रतिदिन श्राद्ध करना चाहिए।

२. नैमित्तिक-श्राद्ध

''एकोद्दिष्ट-श्राद्ध'' के नाम से भी इसे जाना जाता है। इसे विधिपूर्वक सम्पन्न कर विषम संख्या (१,३,५) में ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

३. काम्य-श्राद्ध

जो श्राद्ध कामना युक्त होता है, उसे काम्य-श्राद्ध कहते हैं।

४. वृद्धि-श्राद्ध

यह श्राद्ध धन-धान्य तथा वंश-वृद्धि के लिए किया जाता है, इसे उपनयन संस्कार सम्पन्न व्यक्ति को ही करना चाहिए।

५. सपिण्डन-श्राद्ध

इस श्राद्ध को सम्पन्न करने के लिए चार शुद्ध पात्र लेकर उनमें गन्ध, जल और तिल मिला कर रखा जाता है, फिर प्रेत पात्र का जल पितृ पात्र में छोड़ा जाता है। चारों पात्र प्रतीक होते हैं— प्रेतात्मा, पित्रात्मा, देवात्मा और उन अज्ञात आत्माओं के, जिनके बारे में हमें ज्ञान नहीं है।

६. पार्वण-श्राद्ध

अमावस्या अथवा किसी पर्व विशेष पर किया गया श्राद्ध पार्वण-श्राद्ध कहा जाता है।

७. गोष्ठ-श्राद्ध

गौओं के लिए किया जाने वाला श्राद्ध कर्म गोष्ठ-श्राद्ध कहलाता है।

८. शुद्धयर्थ-श्राद्ध

विद्वानों की संतुष्टि, पितरों की तृप्ति, सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति के निमित्त ब्राह्मणों द्वारा कराया जाने वाला कर्म शुद्धयर्थ-श्राद्ध है।

९. कर्मांग-श्राद्ध

यह श्राद्ध कर्म गर्भाधान, सीमान्तोन्नयन तथा पुंसवन संस्कार के समय सम्पन्न होता है।

१०. दैविक-श्राद्ध

देवताओं के निमित्त घी से किया गया हवनादि कार्य, जो यात्रादि के दिन सम्पन्न किया जाता है, उसे दैविक-श्राद्ध कहते हैं।

११. औपचारिक-श्राद्ध

यह श्राद्ध शरीर की वृद्धि और पुष्टि के लिए सम्पन्न किया जाता है।

१२. सांवत्सरिक-श्राद्ध

यह श्राद्ध सभी श्राद्धों में श्रेष्ठ है, और इसे मृत व्यक्ति की पुण्य तिथि पर सम्पन्न किया जाता है। इसके महत्त्व का आभास 'भविष्य पुराण' में वर्णित इस बात से हो जाता है, जब भगवान सूर्य स्वयं कहते हैं– **"जो व्यक्ति सांवत्सरिक-श्राद्ध नहीं करता है, उसकी पूजा न तो मैं स्वीकार करता हूं न ही विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र और अन्य देवगण ही ग्रहण करते हैं।"** अतः व्यक्ति को प्रयत्न करके प्रति वर्ष मृत व्यक्ति की पुण्य तिथि पर इस श्राद्ध को सम्पन्न करना ही चाहिए।

जो व्यक्ति माता-पिता का वार्षिक श्राद्ध नहीं करता है, उसे घोर नरक की प्राप्ति होती है, और अन्त में उसका जन्म 'सूकर योनि' में होता है।

इस वर्ष श्राद्ध पक्ष का आरम्भ ९.९.९५ से हो रहा है और २४.९.९५ को इस पक्ष का समापन हो रहा है। इस पूरे पक्ष में व्यक्ति को अपने घर में निर्धारित तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म सम्पन्न करना चाहिए।

कुछ व्यक्तियों के सम्मुख यह प्रश्न होगा, कि उन्हें तो अपनी माता या पिता के मृत्यु की तिथि ज्ञात नहीं है, तो वे किस दिन श्राद्ध कर्म सम्पन्न करें?

– ऐसे व्यक्ति को श्राद्ध पक्ष की अमावस्या, जो इस बार दिनांक ९.९.९५ को है, श्राद्ध कर्म सम्पन्न करना चाहिए, सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध यथा– मां, दादी, परदादी आदि का श्राद्ध मातृ नवमी १९.९.९५ को करना चाहिए।

श्राद्ध कर्म केवल मृत माता-पिता के लिए ही सम्पन्न किया जाता है, ऐसी बात नहीं है। यह कर्म तो मृत पूर्वजों के प्रति आदर का सूचक है, और उनके आशीर्वाद को प्राप्त करने का सुअवसर है, अतः श्राद्ध कर्म प्रत्येक साधक और पाठक को सम्पन्न करना ही चाहिए।

पारम्परिक तरीके से श्राद्ध करना अर्थात् कुछ ब्राह्मणों को बुलाकर, उन्हें भोजन कराकर दान-दक्षिणा प्रदान कर देने मात्र से ही पितरों के प्रति दायित्व का निर्वाह नहीं हो जाता है, अपितु इसके लिए विशेष साधना-क्रम को अपनाकर सम्पन्न किया जाने वाला श्राद्ध ही ज्यादा अनुकूल व फलप्रद होता है, अतः साधक को चाहिए, कि वह निम्न साधना-विधान के अनुसार ही श्राद्ध कर्म को सम्पन्न करे।

साधना विधान

सामग्री - **पितृेश्वर तर्पण साफल्य यंत्र और ११ पितृेश्वर शान्ति बीज।**

समय - **यह साधना प्रत्येक साधक को अपने घर में निर्धारित पितृ विसर्जन की तिथि पर प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् ५ बजे से ७ बजे के मध्य सम्पन्न करनी चाहिए।**

दिशा - **दक्षिण।**

विधि -

इस विधि से श्राद्ध करने की विशेषता यह है, कि जिस मृतात्मा के निमित्त यह साधना सम्पन्न की जाती है, उसे पूर्ण शांति प्राप्त होती है, चाहे वह प्रेत योनि या अन्य किसी भी तुच्छ योनि में हो, उसे मुक्ति प्राप्त होती ही है, और निकट भविष्य में ही वह मृतात्मा किसी अच्छे गृह में जन्म भी ले लेती है। इस प्रकार इस साधना-विधान द्वारा पित्रात्मा की मुक्ति के साथ ही साथ उसकी विशेष कृपा भी साधक को प्राप्त होती है, जिसके कारण उसके घर में सुख-शांति बनी रहती है।

इस साधना का विधान अत्यधिक सरल है और कोई भी व्यक्ति इसे सम्पन्न कर सकता है। इसके लिए व्यक्ति प्रातःकाल उठकर, स्नानादि से निवृत्त होकर किसी स्वच्छ, श्वेत आसन पर दक्षिणाभिमुख होकर बैठे और अपने सामने ब्राह्मण को दान में देने वाली वस्तुओं को रख ले। किसी थाली में कुंकुम से मनुष्य की आकृति अंकित कर उस पर "पितृेश्वर तर्पण साफल्य यंत्र" को स्थापित करे और पुष्प, धूपादि से लघु पूजन करे, फिर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए "ग्यारह पितृेश्वर शान्ति बीजों" को भी उसी थाली में स्थापित करे।

मंत्र

ॐ अमुकं पितरै नमः

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते समय "अमुकं" के स्थान पर उस मृत व्यक्ति का नाम उच्चरित करें, जिसके लिए आप यह साधना सम्पन्न कर रहे हैं, तथा साथ ही पितृेश्वर शान्ति बीज का स्थापन भी करना है, और इसी मंत्र का पन्द्रह मिनट तक पितृेश्वर तर्पण साफल्य यंत्र पर त्राटक करते हुए लगातार जप करना है। जप समाप्ति के उपरान्त पितृेश्वर तर्पण साफल्य यंत्र और सभी पितृेश्वर शान्ति बीजों को नदी या तालाब में विसर्जित कर देना है, और दान में देने वाली सामग्री को किसी योग्य ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा स्वरूप दान में दे देना चाहिए।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यह संकल्प अवश्य लें, कि मैं यह साधना अपने पितरों की शांति एवं मुक्ति के लिए सम्पन्न कर रहा हूं। यहां पर यह बात अत्यधिक ध्यान रखने योग्य है, कि माता और पिता दोनों के लिए अलग-अलग साधना पैकेट प्रयोग किया जाना चाहिए।

सर्वथा पहली बार प्रकाशित

पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

एस-सीरिज के अन्तर्गत ये पुस्तकें. . .
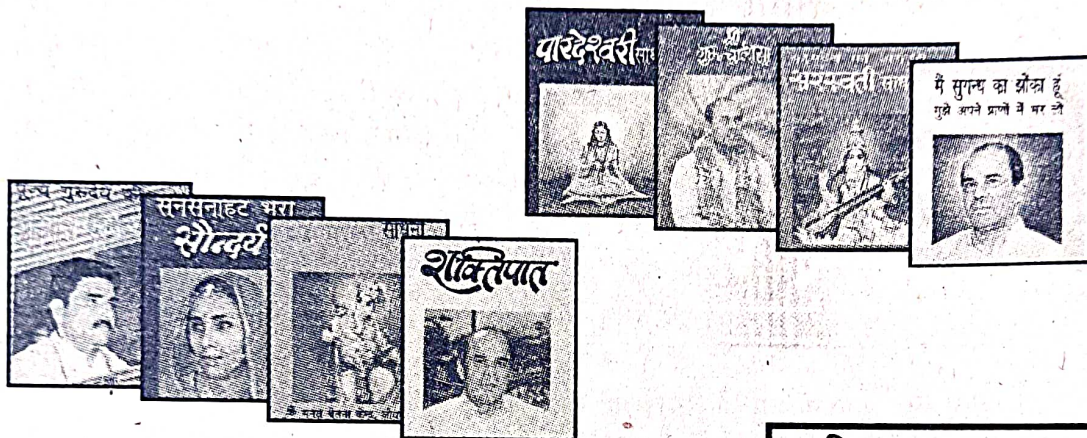
प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-

पारदेश्वरी साधना

एक विलक्षण और चैतन्य पुस्तक . . . पारे से धातु परिवर्तन क्रिया की आराध्या "पारदेश्वरी" का पूर्ण साधना विधान . . . गोपनीय, दुर्लभ. . . पहली बार प्रकाशित।

श्री यंत्र साधना

मां भगवती लक्ष्मी का व्रत्य विग्रह "श्री यंत्र" और उससे सम्बन्धित साधना तो विश्व की दुर्लभतम साधना कही जाती है. . . और यही साधना पहली बार।

सनसनाहट भरा सौन्दर्य

सौन्दर्य . . . जीवन की पूर्णता, किस विधि से, किस प्रकार से सनसनाहट भरा सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं. . . एक जीवन्त कृति।

मैं सुगन्ध का झोंका हूं

गुरु. . . हाड़-मांस का व्यक्ति नहीं, अपितु वासन्ती पवन का झोंका है, जो तन-मन को पुलक से भर दे, जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य, सुगन्धित कर दे . . . एक दुर्लभ पुस्तक।

गणपति साधना

समस्त प्रकार के कार्यों, कष्टों, परेशानियों से गुक्त होने व धन-धान्य एवं समृद्धि प्राप्त करने हेतु श्रेष्ठ साधना पुस्तिका।

सरस्वती साधना

स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु एवं बालकों का सर्वांगीण विकास व वाक्‌सिद्धि के लिए श्रेष्ठतम साधनाएं, प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी।

शक्तिपात

शक्तिपात क्यों, कब और कैसे . . . कुण्डलिनी जागरण किस विधि से . . . जीवन में तनाव मुक्ति सम्भव है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

बगलामुखी साधना

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता तथा सभी प्रकार के विकारों पर विजय के लिए बगलामुखी साधना सर्वोत्तम है, और इसी से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

श्री गुरु चालीसा

नित्य स्तवन योग्य तथा हृदय में गुरु को धारण करने की विधि लिए सुन्दर, मधुर स्तोत्र।

अनमोल सूक्तियां

प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी और आवश्यक . . . श्रेष्ठ पुस्तिका. . . जीवन में पूर्ण सफलता के लिए।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली.110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

> ‘भैरोंगढ़’, जहां भद्रकाली की गणिकाएं योगिनी रूप में दर्शन देती हैं. . . क्या मुझे भी उनका दर्शन मिलेगा. . . इन्हीं विचारों में खोया. . . अचानक पांव फिसला और मैं उस पहाड़ी से नीचे गिरने लगा . . . उफ! अब मृत्यु!! सहसा शेर पर सवार एक सुन्दरी . . . मस्तिष्क सुन्न हो गया।

प्रस्तुत सत्यकथा के प्रथम वाचक नागा बाबा 'मोरपंखी' हैं, जो आज भी पवित्र क्षिप्रा के तट पर स्थित अखाड़े में विद्यमान हैं, विचित्रता उनमें यही है, कि वे हमेशा सिर पर मोर-मुकुट धारण किये रहते हैं, शायद इसीलिए 'मोरपंखी बाबा' के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। वे हमेशा दिगम्बर रहते हैं, भभूत रमाये और गुप्तांग में एक बड़ा-सा ताला जकड़ा हुआ. . . और अखाड़े से बाहर आते हैं, तो अंगोछा लपेट लेते हैं। सिद्धि या चमत्कार जैसी कोई बात उनमें दिखलाई नहीं देती, किन्तु अपने नागा संन्यासी होने की जो सत्यकथा वे बतलाते हैं, वह अत्यन्त रहस्यमय है।

बाबा मोरपंखी ने बतलाया था–

काठमांडू के उत्तरी कोण में स्थित **''भैरोंगढ़''** की दुर्गम घाटी, पहाड़ी श्रृंखलाएं और जंगलों के हरहराते राक्षस . . . संध्या हो गई थी, विवश्वान् का उद्दीप्त मुख पश्चिमी क्षितिज में डूबते हुए धीरे-धीरे ओझल हो रहा था। घाटी की तलहटी में, गहरे वृक्षों की छाया में सैकड़ों नागा साधु विचरण कर रहे थे, सभी नंग-धड़ंग . . . कहीं चार-पांच बैठे गप्पें हांक रहे थे. . . तो कहीं सिद्धि-चमत्कार की गाथाएं सुनायी जा रही थीं।

नागाओं की प्रायः दो कोटियां देखने में आती हैं। प्रथम नागा तो वे होते हैं, जो रहते तो नंग-धड़ंग हैं, किन्तु अपने गुप्तांग में ताला नहीं लगाते। दूसरे नागा वे होते हैं, जो अपने गुप्तांग को ताले से जकड़ देते हैं। यह एक असाधारण और विलक्षण साधना है, जिसमें वासना की नाड़ी को बांध दिया जाता है, क्योंकि वासना ही वह बीज है, जिससे जन्म-जन्मांतरों की गाथाएं लिखी जाती हैं, और यदि वासना खत्म हो जाय, तो सुख-दुःख का चक्र ही समाप्त हो जाता है।

लिंग में ताला जकड़ने वाले नागा साधु एक बार जब साधना शुरू करते हैं, तो उसे बंद नहीं कर सकते, अन्यथा घोर पतन होता है, इसीलिए इस दीक्षा को प्रदान करने के पूर्व ही यह चेतावनी दे दी जाती है, कि साधना बंद करने पर जो भी दुष्परिणाम होंगे उनके जिम्मेदार वे साधक ही होंगे, जो अपना ताला खोलेंगे। ताला खोलने वाले साधु प्रायः पागल हो जाते हैं।

इन ताला जकड़ने वाले साधुओं की अनेक रोमांचक अनुभूतियां भी होती हैं। ये अनेकों सिद्धियों के स्वामी होते हैं, पद्मासन लगाकर जमीन से ऊपर उठ जाना और घंटों अधर में

स्थिर रहना, पानी की सतह पर चलना, हवा में ही हाथ लहरा कर कोई भी वस्तु प्रकट कर देना, इन नागा साधुओं के सामान्य सिद्धि-चमत्कार कहे जा सकते हैं।

अंधेरा धीरे-धीरे घाटी में उतर रहा था। हवा में तैरते हुए जुगनू ज्योतिबिन्दु जैसे प्रतीत हो रहे थे। जंगली जन्तुओं की भी आवाजें सुनाई पड़ रही थीं। उस एकान्त प्रांतर में कुछ नागाओं ने मशालें जला रखी थीं, सहसा ही दूरस्थ वन्यांचल से शेर की गर्जना गूंज उठी। चारों ओर एक अजीब-सी सनसनी फैल गई, जैसे वहां उपस्थित सभी साधुओं को सांप सूंघ गया हो। कुछ पलों के लिये गर्जना आकाश में जाकर विलुप्त हो गई, फिर एक दहाड़ गूंज पड़ी, अब आवाज एकदम नजदीक थी, जैसे कोई सिंह उस पहाड़ी-तलछटी के किसी एक ओर से आ रहा हो।

सब कुछ जैसे बहुत तेजी से हो रहा था, तभी एक ज्योति मंडल जैसा वहां प्रकट हुआ. . . जिसमें शेर गर्जना करते हुए दौड़ता चला जा रहा था. . . एक अविश्वसनीय दृश्य था। शेर अकेला नहीं था, अपितु उस पर एक दिव्य सुंदरी आरूढ़ थी . . . आह! क्या रूप था। इस संसार की किसी भी सुंदरता से उसकी तुलना नहीं की जा सकती थी। आश्चर्य यह भी था, कि वह सुंदरी पूर्णतः निर्वस्त्र थी, और उसकी सघन, दीर्घ केशराशि उसके सम्पूर्ण गौरांग को ढक रही थी।

शेर गर्जना करते हुए एक ओर से प्रकट हुआ तथा दूसरी ओर वृक्षों के समूह में जाकर ओझल हो गया, तभी एक जोरों की गर्जना सुनाई पड़ी और फिर एकदम ही सन्नाटा-सा छा गया। हमने देखा, कि हमारे आस-पास जितने भी नागा साधु थे, सभी बेहोश हो गये थे। हम भी जब मूर्च्छा की ओर जा रहे थे, तो किसी ओर से एक नागा की आवाज सुनाई पड़ी थी— "सिद्ध योगिनी है रे! आज तो यहीं जम जाओ, वाह! माता का ऐसा रूप. . .!"

फिर कुछ मंद आवाज सुनाई पड़ी थी— "अरे! कहो तो चिलम सुलगा लूं।" एक अट्टहास सा गूंजा और पूरा वातावरण शांत हो गया।

नेपाल में "भैरोंगढ़" एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। काठमांडू की यात्रा करने वाले पर्यटक इस सुरम्य घाटी को देखने अवश्य जाते हैं। लोकगाथाओं में कहा जाता है— "आज भी इस बीहड़ पहाड़ी क्षेत्र में अनेक गुप्त सिद्ध गुफाएं हैं, जहां सहस्रों वर्षों से सिद्ध योगिनियां निवास कर रही हैं, और वे लोगों को दर्शन भी देती हैं। **योगिनियों को माता भद्रकाली की गणिका कहा जाता है— सदैव सेवा में तत्पर वे शक्ति रूपा होती हैं, और ब्रह्माण्ड में सर्वत्र विचरण करने में समर्थ होती हैं।"**

उस रात जो कुछ घटित हुआ था, उसे देखकर अनेक नागा साधु दूसरे दिन ही वहां से भाग खड़े हुए, लेकिन कई ऐसे जीवट साधु थे, जो पूजा-पाठ, अनुष्ठान और मंत्र-जप में संलग्न हो गये। हमने अभी विधिवत् दीक्षा नहीं ली थी, इसलिए, जंगल में अकेले ही भ्रमण कर रहे थे। मन के किसी कोने में यह इच्छा अवश्य दबी थी, कि कहीं कोई सिद्ध गुफा देखने को मिल जाय, किन्तु उस भीषण जंगल में भयावह चट्टानों के अतिरिक्त कुछ भी लक्षित नहीं हो रहा था। यह भय भी था, कि कहीं रात वाली योगिनी हमारे सामने फिर से प्रकट हो गई, तो क्या करेंगे— कहीं प्राण ही न निकल जाय?

एक स्थान पर सीधी पहाड़ी के जैसी चढ़ाई थी— चट्टान के ऊपर चट्टान। हमारे भीतर न जाने कैसी प्रेरणा हुई, कि उछलकर एक चट्टान पर चढ़ गये, फिर उछलकर दूसरी चट्टान पर, और इस प्रकार ऊपर चढ़ते चले गये। हमारी सांस फूलने लग गई। ऊपर लगने लगा, जैसे स्वर्ग की सीढ़ियां हों— कभी न खत्म होने वाला सिलसिला . . . पसीने से लथपथ, ऊपर चढ़ते हुए कुछ समझ नहीं आ रहा था, बुद्धि चकरा रही थी . . . नीचे झांक कर देखा, तो जैसे प्राण ही सूख गए . . . इतनी ऊंचाई. . . और नीचे चारों ओर बीहड़ जंगल।

फिर पैर न जाने क्यों कांपने लगे। हवा का एक तीव्र, उन्मत्त-सा झोंका आया, हमारा पूरा शरीर उड़ा और तेजी से नीचे गिरने लगा. . .

— मृत्यु से ऐसा साक्षात्कार!

— उफ!!

— कोई कल्पना भी नहीं कर सकता. . . बस, अब थोड़ी ही देर में शरीर उस पथरीली जमीन से टकरायेगा, और एक-एक हड्डी चूर-चूर हो जायेगी, खून और मांस के लोथड़े चारों ओर बिखर जायेंगे। बुद्धि में शायद इसी तरह के विचार थे, और चेतना मूर्च्छा के क्षेत्र में प्रविष्ट हो रही थी, किन्तु सहसा एक पल के लिये नीचे वही शेर पर सवार सुन्दरी दिखलायी पड़ी, और फिर मस्तिष्क सुन्न पड़ गया।

किन्तु कुछ समय उपरांत जब चेतना लौटी, तो हम वहां पथरीली जमीन पर पड़े थे, सामने भयावह पहाड़ी चट्टानें थीं। हड़बड़ा कर, बिजली की गति से उठे, तो सिराहने एक आठ-दस वर्ष की बालिका बैठी खिलखिला कर हंस रही थी . . . इस वीरान जंगल में यह बालिका कैसे? आश्चर्य और विस्मय हृदय को मथने लगा। बालिका हंसती ही जा रही थी, फिर उसने अपना एक हाथ आगे बढ़ाया और बोली— **"क्यों, इस जंगल में मरने आ**

गया रे? ले. . . खा. . . भूखा है ना?''

बालिका के हाथ में एक पत्तों का दोना था और उसमें लाल-लाल बेर रखे थे। हमने हाथ बढ़ाकर दोना ले लिया. . . और जब खाने लगा, तो बड़े ही मीठे लगे, परन्तु अचरज की बात थी, कि दो-चार बेर खाने के बाद ही सारी क्षुधा और तृष्णा शांत हो गई। मन जैसे पूर्णतः पवित्र हो गया, आंखों में शीतलता आ गई।

दोना उस बालिका को लौटा दिया, और अब उसे ध्यान से देखा, तो लग रहा था, जैसे आस-पास के किसी गांव की बालिका हो। वह घाघरा पहिने हुए थी और खुले वक्ष पर मोतियों की एक सुंदर माला झूल रही थी। आंखों में एक तीव्र चमक! दोना हमारे हाथ से लेकर वह स्वयं बेर खाने लगी, फिर बोली— **क्यों रे, कुछ खाया नहीं?**

– अच्छा, सिद्धि– गुफा देखेगा?

वह उठ खड़ी हुई और हमारा एक हाथ पकड़ कर खींचने लगी।

मस्तिष्क विवश हो गया— जैसे एक आंधी-सी उठ खड़ी हुई हो। शरीर जैसे यंत्र चालित सा हो गया हो। वह खींचते हुए सामने की ही चट्टान के पीछे ले चली। उस चट्टान के पीछे ही एक गुफा का द्वार था, जिसे जंगली झाड़ियों ने आच्छादित कर रखा था। बड़े ही आश्चर्य की बात थी, सामने तो सीधी पहाड़ी थी, फिर यह गुफा कहां से आ गई? वह निर्भय होकर हमें भीतर खींचती चली गई।

गुफा के भीतर धुआं ही धुआं था, जिसके कारण कुछ साफ दिखलाई नहीं दे रहा था। कुछ पग भीतर जाने पर हमने जो देखा, उस पर सहसा विश्वास नहीं होता। आंखों के आगे जो दृश्य था, उसे कौन सत्य मानेगा? कोई भी कहेगा, कि नागा बाबा की मनगढ़न्त कहानी होगी, लेकिन ज्ञान की साक्षिका तो हमारी इन्द्रियां ही होती हैं— आंख, हाथ, पैर सब प्रमाण हैं, मन, जो दिखाई नहीं देता, उसे भी प्रमाण मान लेता है। नागा साधना-प्रद्धति, तो हर कदम पर एक रोमांचक अनुभूति है। नागा के मन में यदि कोई भाव आ जाता है, तो निश्चित रूप से कोई भौतिक घटना घटित होती है, यही इस साधना पद्धति की विशेषता है, सिद्धियां स्वतः ही हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती हैं. . . कहती हैं— 'बाबा! हमारी सेवा ले लो, मगर अपनी मस्ती में नागा साधु सिद्धियों का अतिक्रमण कर जाता है।

उस गुफा का दृश्य आज भी रोंगटे खड़े कर देता है। गुफा के बीचोंबीच धूनी जल रही थी, शायद उसी का धुआं चारों ओर फैला हुआ था। धूनी की लौ लाल-पीले रंगों में चमक रही थी। लौ के दो-तीन फीट ऊपर वही गौरांग युवती पूर्ण अनावृत्त पद्मासन में बैठी थी, उसका सुगठित शरीर विद्युत की आभा से दीप्तमान था, उसकी केशराशि स्कंध प्रदेश, ग्रीवा और वक्ष पर फैली हुई थी, आंखें बंद! प्रदीप्त मस्तक से जैसे किरणें फूट रही थीं। हमारी उपस्थिति के आभास से जैसे उसके होठों पर कंपन-सा हुआ और हम भयभीत से कांपने लगे। वह बालिका न जाने कहां धुएं में खो गई। हम आंखें मलने लगे– शायद भ्रम हो, स्वप्न हो, किन्तु शंका की कहीं कोई गुंजाइश नहीं थी।

उस बालिका के विलुप्त हो जाने से मन एकदम घबरा उठा। कांपते हुए धूनी की लौ के ऊपर पद्मासन में बैठी उस सुंदरी पर दृष्टि डाली, फिर गर्दन दूसरे कोने की ओर मोड़ी, तो वहां जो देखा, उसे अनुभव कर आत्मा सिहर उठी। वहां वह भयंकर सिंह बैठा था, जो उस समय परम शांत मुद्रा में था। हमारी दृष्टि उस पर पड़ते ही जैसे शरीर पर वात का आघात हुआ हो, मस्तिष्क में एक झटका-सा लगा . . . और दूसरे ही पल मूर्च्छित होकर हम एक ओर लुढ़क गये।

★★★★

पूस की ठण्डी रात थी, दस-ग्यारह ही बजे होंगे, आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। क्षिप्रा तट पर हम रामघाट की बुर्ज पर बैठे थे। तट के आस-पास भव्य मंदिरों के गुम्बद एवं ऊंची इमारतों की छाया पड़ रही थी। उस पार नागाओं के अखाड़े का बड़ा बजरंगी दरवाजा साफ-साफ दिखलाई दे रहा था। बाबा मोरपंखी अपने स्थान से उठे, एक ठण्डी सांस ली और बोले— **''हम कई घंटे की मूर्च्छा से जगे थे, तो अपने को उस पहाड़ी-तलछटी में अपने नागा साथियों और गुरुओं के बीच पाया था।''**

इस संसार में भैरोंगढ़ आज भी एक दिव्य स्थान है। सिद्ध गुफाएं और योगिनी शक्तियां आज भी वहां विद्यमान हैं। आवश्यकता सिर्फ उन साधुओं की है, जो मोक्ष-पथ का अनुगमन करना चाहते हैं।

बाबा ने स्नेह से मुझे देखा और सहज गति से रामघाट की सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे। मेरे दिमाग में यही बात आई, कि शायद बाबा स्नान करना चाहते हैं। एकदम सीधे-सादे से दिखने वाले उस साधु से मुझे किसी चमत्कार की अपेक्षा नहीं थी, और न ही शब्दशः मैं उनकी कथा पर विश्वास करना चाहता था, लेकिन देखते ही देखते चंद पलों में मेरे सामने जो अजूबा घटित हो गया, उसे देख कर मेरी बुद्धि कोई भी सतर्क उत्तर नहीं दे सकी।

बाबा धीरे-धीरे नीचे उतरे, क्षिप्रा की धारा से अंजुली में जल भर कर कुछ मंत्र-सा पढ़ा और जल शरीर पर छिड़क लिया। जो अंगोछा वे अपनी कमर पर लपेटे थे, उसे खोला, फर्रऽऽऽ से हवा में लहराया, और क्षिप्रा की लहरों पर फैला दिया . . . फिर स्वयं नाव की तरह उस पर जा कर बैठ गये, और देखते ही देखते वह अंगोछा तैरने लगा। बाबा इस तरह संतरित होते हुए क्षिप्रा पार कर नागाओं के अखाड़े की ओर जा रहे थे। ●

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी की दुर्लभ कृतियां

एस-सीरीज के अन्तर्गत प्रस्तुत हैं ये अमूल्य ग्रन्थ

मूल्य प्रति– 96/-

मूल्य प्रति– 240/-

हिन्दी कृति

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म :
कुण्डलिनी जागरण की क्रिया क्या होती है? क्या होते हैं विविध चक्र? कैसे सम्पादित होती है यह अति श्रेष्ठ क्रिया? इसका सूक्ष्म विवेचन है इस ग्रन्थ में . . .

ध्यान, धारणा और समाधि :
इन तीनों विषयों पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं, इन सभी के चक्कर में फंस कर मनुष्य इसके मूल चिन्तन के प्रति भ्रमित हो गया है, इसी भ्रम का निवारण है, यह ग्रन्थ . . .

फिर दूर कहीं पायल खनकी :
प्रिया के आगमन का संदेश, दूर से आती उसकी पायलों की खनक से प्राप्त हो जाता है . . . किन्तु हम अपने प्रिय (ईश्वर, गुरु, इष्ट) के आगमन की आहट सुनने की सामर्थ्य खो बैठे हैं. . . इस श्रवण शक्ति को पुष्ट करने का माध्यम है, यह कृति . . .

अंग्रेजी कृति

Meditation :
नाम के आकर्षण में फंस कर पूर्ण जानकारी न होने के कारण अधिकतर लोग ध्यान की खोज में भटकते रहते हैं। इस भटकने की क्रिया का समापन कर ध्यान का प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत है, इस कृति द्वारा . . .

Kundalini Tantra :
प्रस्तुत है इस ग्रन्थ के माध्यम से कुण्डलिनी की विस्तृत विवेचना, सप्त चक्रों का विश्लेषण, जिससे मनुष्य को पूर्णता प्राप्त हो सके।

The Sixth Sense :
छठी इन्द्रिय के जाग्रत होने का तात्पर्य है, सम्पूर्ण प्रकृति के कार्य में इच्छानुसार हस्तक्षेप करने की शक्ति प्राप्त कर लेना . . . लेकिन कैसे? यह आप इस ग्रन्थ को पढ़कर प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

भारत-पाक युद्ध की सम्भावनाएं बलवती होंगी, भारत तथा पाक के युद्ध को लेकर समस्त विश्व में तनाव रहेगा। पाकिस्तान की आन्तरिक स्थिति कमजोर तथा छिन्न-भिन्न होगी और पाकिस्तानी सत्ता में भारी फेर-बदल होगा। भारत, पाकिस्तान को लेकर अपने निश्चय पर अटल रहेगा। पाकिस्तान को किसी भी प्रकार की मदद न मिलने पर राजनीतिक स्थिति अत्यन्त कमजोर होगी।

वर्ष १९९५ रेल अग्निकांड जैसी भीषण दुर्घटनाओं से भरा रहेगा। ग्रहों की बदलती स्थिति से यह वात प्रकट होती है, कि इस वर्ष मौसमी आपदाओं को अत्यधिक हानिप्रद रूप में झेलना होगा।

भारतीय राजनीति इस माह भारी उथल-पुथल तथा झड़पों से भरी होगी। कांग्रेस सरकार की स्थिति अत्यन्त कमजोर होती जायेगी, उत्तर प्रदेश में राजनीतिक स्थिति मजबूत होगी। भाजपा का प्रभाव समस्त भारत में बढ़ता हुआ सा दिखाई देगा। मंदिर-मस्जिद का मामला अपनी सामान्य अवस्था में रहेगा।

सभी पार्टियां अपना वर्चस्व बनाने के लिए, नवीन मुद्दों को लेकर सामने आएंगी तथा वेवजह की तकरार अशान्ति उत्पन्न करने का प्रयास करेगी।

मुलायम सरकार की स्थिति कमजोर होगी, सम्भवतः समर्थन वापिस लेने की स्थिति में पहुंच जायेगी, और उत्तर प्रदेश के मंत्रीमंडल में फेर-बदल होने की सम्भावना तेज। श्रीलंका सेना तथा लिट्टे विवाद पुनः जोर पकड़ेगा।

कश्मीर में उग्रवाद की स्थिति शांतिपूर्ण रहेगी, वहीं पंजाब में उग्रवाद की छुट-पुट घटनाएं होंगी। पंजाब में विकास बढ़ाने के लिए कानून में नवीन संशोधन होंगे तथा विकास प्रक्रिया तीव्र होगी। हरियाणा के मंत्रीमंडल में भारी उथल-पुथल रहेगी, तथा सत्ता में बने रहने के लिए आन्तरिक झड़पें होंगी।

राजस्थान में कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी का ही अधिक प्रभाव दिखाई देगा। राजस्थान में मौसमी आपदाओं में बढ़ोतरी होगी।

शेयर मार्किट

जिस प्रकार शेयरों की खरीद-फरोक्त में आम आदमी की रुचि बढ़ रही है, वह अपने-आप में ही आश्चर्यजनक है। शेयर धारक नवीन शेयरों की खरीद को लेकर ऊहापोह की स्थिति में रहेंगे। शेयर मार्केट में ज्योतिष का बढ़ता प्रभाव अपने-आप में सही और सटीक होती भविष्यवाणियां ही हैं, जो साधनात्मक विधि से ज्ञात की जाती हैं।

इस माह शेयर बाजार कुछ मंदा ही रहेगा, जिस प्रकार से शेयरों के भाव बढ़ते-बढ़ते लुढ़के हैं, वह शेयर धारकों के उत्साह को ठंडा करने वाला रहा। जिन शेयरों का प्रचलन मार्किट में कम था, वे अकस्मात् ही तेजी में आने लगे हैं, और उनकी निरन्तर तेजी में आने की सम्भावनाएं बढ़ती ही जा रही हैं।

इस माह जिन शेयरों के मूल्य में विशेष परिवर्तन होगा, वे इस प्रकार हैं — टी एण्ड आई ग्लोवल, एवाजो हैवी इण्डस्ट्रीज लि०, मॉडल फाइनेंशियल कॉर्पो० ये नए इश्यू तेजी की स्थिति में रहेंगे, तथा नए इश्यू में अधिकतर शेयर अपनी सामान्य स्थिति में ही रहेंगे, उनमें किसी विशेष परिवर्तन की आशा नहीं की जा सकती।

ए० सी० सी०, अपोलो टायर, एशियन पेंट, बजाज ऑटो, बड़ौदा रेयन, बॉम्बे डाइंग, ब्रिटानिया इंड०, ब्रुक ब्रॉड, कैडबरी, ईस्ट इंडिया होटल, गुजरात फर्टि० हिंद० सीबा, हिंद० लीवर इस माह सामान्य से तेजी की स्थिति में रहेंगे, इनमें शेयर धारक लाभ की स्थिति में रहेंगे।

इस माह कुछ शेयर अपनी सामान्य स्थिति से नीचे की ओर जाने लगेंगे, जिनके बारे में कभी सोचा भी नहीं जा सकता। एच० डी० एच० सी०, हिंद० मोटर्स, एस० के० एफ०, एस० पी० आई० सी०, रिलायंस, जे० के० सिंथेटिक, जे० के० कॉर्पो०, इंडियन रेयन, एटलस साइकिल, बाटली बाय एण्ड कं०, जिंदल आयरन, मोदी जिरॉक्स जैसे शेयर इस माह कमजोर ही रहेंगे।

अन्य प्रकार के शेयर अपनी सामान्य से कुछ ऊपर-नीचे की स्थिति में रहेंगे, उनमें किसी भी प्रकार के विशेष परिवर्तन की सम्भावना नहीं रहेगी।

पारद
जो दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलता ही है

पारद धातु अपने-आप में पूर्णता का प्रतीक है। सदियों से पारद पर शोध होते आये हैं, जहां यह भौतिक समृद्धि का परिचायक है, वहीं यह आयुर्वेद की पूर्णता भी है। रसायन विज्ञान के माध्यम से पारद का मर्दन कर भस्म के द्वारा कई औषधियां बनाई जाती हैं, और तंत्र की दुनियां में तो इसका विशेष स्थान होता है। जहां साधनाओं में पूर्णता के लिये पारद की साधना सम्पन्न की जाती है। मंत्र से आबद्ध पारद से निर्मित वस्तु तो अपने-आप में ही चैतन्य होती है, इसकी उपस्थिति ही अपने-आप में पूर्णता की द्योतक मानी गयी है, अतः प्रयत्न कर मंत्रों से आबद्ध पारद से बनी धातु मूर्ति रूप में या अन्य किसी भी रूप में हो घर में स्थापित करनी ही चाहिए। आइये इससे सम्बन्धित हम आपके सुखद और समृद्ध जीवन के लिये आपको क्या सौंप रहे हैं—

१. पारद माला-

सौभाग्यदायक, अद्वितीय, चैतन्यता प्रदायक माला जिस भी व्यक्ति के पास होती है, निश्चित ही वह सौभाग्यवान होता है, जिसके धारण करने मात्र से ही सभी विघ्न, दुःख, दारिद्र्य एवं चिंताएं स्वतः उस घर से समाप्त हो जाती हैं।

२. पारद शंख-

यह लक्ष्मी का प्रतीक है, जिसके स्थापन से शीघ्र और निश्चित धन-लाभ की सम्भावना बनती ही है।

३. पारद शिवलिंग-

संसार के जितने भी दिव्य शिवलिंग माने गये, उनमें सर्वश्रेष्ठ देवताओं द्वारा अभिनन्दनीय और अकाल-मृत्यु हन्ता, रोग-शोक को नष्ट करने वाला है, यह अनन्त पूर्णदायी शिवलिंग।

४. पारद गुरु यंत्र-

जितने भी गुरु यंत्र की शास्त्रोक्त विधियां हैं, उनमें पारद गुरु यंत्र निश्चित ही साधक के लिए आध्यात्मिक और भौतिक पूर्णता का द्योतक है।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोनः 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोनः 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

यदि आप पत्थर को भी वश में करना चाहें तो

आश्चर्यजनक है।

?

कौन नहीं चाहेगा,
कि उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो,
जो दूसरों को प्रभावित कर सके, सम्मोहित
कर सके, परन्तु क्या आज के इस प्रगतिशील युग
में कोई ऐसा व्यक्तित्व है, जो दूसरों को प्रभावित कर सके,
जो पत्थर को भी वश में कर सके?. . . नहीं! . . .तो क्यों नहीं. . . ?

क्योंकि आज का मानव उस ज्ञान को भुला चुका है, जिसने उसके पूर्वजों को, उन ऋषियों और मुनियों को एक प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान किया था, वह ज्ञान जो शास्त्रोचित है, पुराणों में वर्णित है, वेदों और उपनिषदों में उल्लिखित है, लोगों में उसे प्राप्त करने की ललक व लालसा नहीं रह गई है, क्योंकि उन्हें उस ज्ञान को भली प्रकार से बताने वाला कोई नहीं मिला, जो अपने पास बैठाकर उन्हें उन सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञान दे सके, और यही कारण है, कि वे इन सूक्ष्म तत्त्वों से अज्ञात एवं परे हैं, जिसके फलस्वरूप उनका जीवन नीरस, असहाय, कमजोर सा दिखाई देता है, न तो उनके चेहरे पर कोई रौनक होती है, और

न ही मन में कोई उमंग या उल्लास ही।

जब वे खुद ही अपने व्यक्तित्व को देखकर हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं, तो वे दूसरों को कैसे अपने वश में कर सकते हैं? इसके लिए तो उन्हें सर्वप्रथम अपने व्यक्तित्व को सजाना-संवारना होगा, जिस प्रकार नारी का सौन्दर्य बिना आभूषणों के अधूरा माना जाता है, वैसे ही अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए भी दृढ़ता, सजगता, प्रखरता जैसे आभूषणों का होना जरूरी है।

— यदि आप-अपने व्यक्तित्व को निखारना चाहते हैं।

— यदि आप वह क्षमता प्राप्त करना चाहते हैं, जिससे सामने वाला व्यक्ति आपकी आज्ञा का पालन कर अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव कर सके।

— यदि आप पत्थर को भी अपने वश में करना चाहते हैं।

— तो आपके लिए इस प्रयोग को जानना आवश्यक है, जिसके द्वारा ऐसा प्रखर व्यक्तित्व प्राप्त किया जा सके, जो दूसरों पर अपनी अमिट छाप छोड़ दे।

एक ऐसा व्यक्तित्व, जो **'कृष्ण'** का था, ऐसा व्यक्तित्व, जो **'बुद्ध'** का था, और ऐसा ही व्यक्तित्व, जो **'राम'** को प्राप्त था, जिसने उस समय के, उस युग के स्त्री-पुरुष तो क्या, पशु-पक्षी, और यहां तक कि समूची प्रकृति को ही अपने वश में कर लिया था।

समय तो निरन्तर गतिशील रहता है, एक युग के बाद दूसरा युग, और दूसरे के बाद तीसरा. . .इस प्रकार हर युग में कोई न कोई अवतरण तो होता ही है, और यह क्रम चलता ही रहता है। ''कल्कि'' भी एक ऐसे ही अवतारी पुरुष हैं, इनका अवतरण पहले भी हुआ था, और युग के अनुसार निरन्तर होता रहेगा, क्योंकि जिन युग-पुरुषों का अवतरण पहले हो चुका है, उन्हीं का पुनः अवतरण युग के अनुसार होता है, और इस प्रकार यह चक्र चलता ही रहता है, जो कभी समाप्त नहीं होता।

कालचक्र का यह २८वां चक्र है। समय के अनुसार एक युग को हम चार भागों में वांटते हैं— सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग तथा कलियुग . . . और यह कलियुग ही है, जिसके अवतारी पुरुष 'कल्कि' हैं, जिनकी साधना-आराधना करना अपने-आप में सर्वश्रेष्ठ है, अद्वितीय है।

अवतारी पुरुष भी एक साधारण मनुष्य की भांति ही इस पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, और उन्हीं की भांति जीवन यापन कर अपने उच्च और प्रखर व्यक्तित्व को उन सामान्य लोगों के बीच उन्हीं की तरह रखते हैं, जिससे उनकी श्रेष्ठता और अद्वितीयता का भान होने लगता है। अवतारी पुरुष अपने व्यक्तित्व और क्रियाकलापों के द्वारा ही अपनी पहिचान को समाज के बीच कायम करते हैं, न कि किसी चमत्कार अथवा प्रदर्शन आदि के द्वारा अपने-आप को देव-पुरुष बतलाते हैं। अपने ज्ञान के माध्यम से वे लुप्त होती विद्याओं को उजागर कर, उनको सही प्रकार से विस्तार देकर इस पृथ्वी ग्रह से लौट जाते हैं, जिन्हें संसार ''महावतार'' या 'अवतारी पुरुष' कहता है।
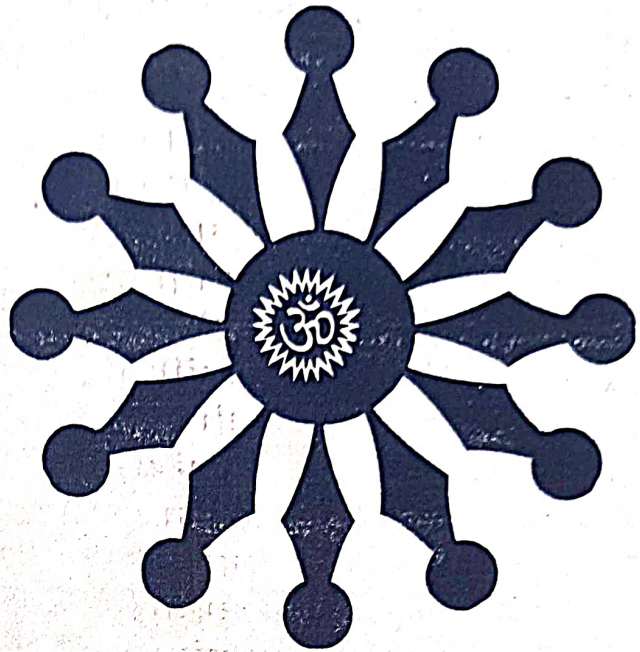
वे इस पृथ्वी ग्रह पर अवतरित होकर इस बात को भली प्रकार से समझाने का प्रयास करते हैं, कि किस प्रकार उन्हीं की तरह एक साधारण मानव भी वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है, जिसकी उसे आवश्यकता है, और सब कुछ प्राप्त करने के लिए आवश्यकता होती है— दृढ़ विश्वास, दृढ़ निश्चय और दृढ़ संयम की, किन्तु वह सब कुछ प्राप्त करना, जो मनुष्य की आकांक्षा है, तभी सम्भव है, जबकि उसके पास ऐसा दिव्य, प्रखर व्यक्तित्व हो, जो पत्थर को भी वश में कर ले।

कल्कि ने अपने समय में अनेकों साधनाएं एवं सिद्धियां प्राप्त की थीं, और उनके रहस्यों को उस युग के सामने उजागर किया था, जो आज भी शास्त्रों, उपनिषदों में वर्णित हैं, किन्तु उनके व्यक्तित्व का वह रहस्य, जिसने लोगों को अपने वशीभूत कर लिया, जड़ को चेतन कर दिया, यहां तक कि पत्थर को भी सम्मोहित कर दिया, वह इस **''कल्कि प्रयोग''** को सम्पन्न कर उसके परिणाम

स्वरूप ही जाना जा सकता है, तभी यह अनुभव किया जा सकता है, कि ऐसी कौन-सी दिव्य शक्ति थी उनके पास, जिसे देखकर व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना न रह सका?

किसी को भी अपनी नेत्र ज्वाला से भस्म कर देना, पत्थर को देखने मात्र से चूर-चूर कर देना जैसी घटनाएं सुनने में अद्भुत और आश्चर्यजनक लगती हैं, किन्तु ये घटनाएं या कथाएं अपने-आप में सत्यता लिये हुए होती हैं, क्योंकि **मात्र शरीर में संचरित ऊर्जा का जब विकास होने लगता है, तो उससे एक विद्युत प्रवाह सा उत्पन्न होता है, जिससे कि उस मनुष्य के चारों ओर एक विशेष प्रकार का आभामंडल तैयार हो जाता है, जोकि विशेष प्रकार की मंत्र-शक्ति के बल पर ही सम्भव है, और यही ऊर्जा सामने वाले व्यक्ति, पशु-पक्षी एवं समूची प्रकृति को अपने वशीभूत कर सकती है,** जैसा कि हर युग में एक अवतरित पुरुष आपके सामने एक उदाहरण है, और इस मंत्र-शक्ति के बल पर ही वह कुछ भी करने में समर्थ हो जाता है, जिसे लोग चमत्कार आदि का नाम देने लगते हैं, किन्तु वे कोई चमत्कार आदि न होकर वायुमंडल से प्राप्त कुछ शब्द होते हैं, जिन्हें **''मंत्र''** कहा जाता है, और यही मंत्र, जो पूरे ब्रह्माण्ड और वायुमंडल में गुंजरित होते हैं, उनका यदि सस्वर व स्पष्ट उच्चारण किया जाय, तो व्यक्ति एक प्रखर व्यक्तित्व प्राप्त कर सकने में सक्षम हो जाता है।

कल्कि ने जिस मंत्र को ब्रह्माण्ड से प्राप्त कर उच्चरित किया, और जिसके द्वारा उन्होंने पूर्ण यौवनवान, ऐश्वर्यवान और जाज्वल्यमान व्यक्तित्व प्राप्त किया, उसे 'कल्कि प्रयोग' का नाम दिया गया। इस गुह्य प्रयोग को सम्पन्न कर लेना, व इसमें सिद्धि प्राप्त कर लेना जीवन का सौभाग्य ही कहा जा सकता है, और इस प्रयोग के द्वारा किसी को भी अपने वशीभूत कर लेना जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है।

'कल्कि प्रयोग' के द्वारा मनुष्य व्यर्थ की आपाधापी, तनाव, विविध परेशानियों से मुक्त होकर आकाश में निर्द्वन्द्व विचरण करने लगता है, और अपने-आप को बना लेता है उत्फुल्लता से युक्त, निश्चिंत और आह्लाद से छलछलाता हुआ! . . . क्योंकि इसके माध्यम से वह स्वतः ही एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करने में सक्षम एवं समर्थ हो जाता है, जिसकी चकाचौंध युक्त सम्मोहक शक्ति के बल पर सामने वाला उसे देखते ही स्तम्भित सा खड़ा रह जाता है. . .अब आप ही विचार करें, कि आज के युग में ऐसा हो पाना क्या किसी वरदान पा जाने जैसा नहीं है?

इसके द्वारा व्यक्ति अपने-आप को ऐसे मंत्रों से सुसज्जित कर लेता है, जिसके प्रभाव से कोई भी व्यक्ति खुद-ब-खुद खिंचा चला आता है। इस प्रयोग को करने के बाद सुन्दर स्त्रियां स्वतः चारों ओर चक्कर लगाने लगती हैं। यह प्रयोग, सम्मोहन तथा वशीकरण दोनों ही प्रक्रियाओं का मिला-जुला रूप है, अतः इस प्रयोग को सिद्ध कर व्यक्ति देवतुल्य हो जाता है, यह एक प्रकार का तांत्रोक्त प्रयोग है, जो इस प्रकार है—

सामग्री— तांत्रोक्त नारियल, मधुरूपेण रुद्राक्ष, वशित्व माला

दिवस— २ अगस्त ९५ श्री कल्कि जयन्ती या अन्य किसी गुरुवार को।

समय— रात्रि ९ से १२ बजे।

दिशा— कोई भी।

विधि— यह रात्रि कालीन दो दिन का प्रयोग है, जिस दिन प्रयोग करना हो, उस दिन साधक स्वस्थ व प्रसन्नचित्त होकर, स्नान आदि से निवृत्त होकर, पीले आसन पर पीली धोती और गुरु चादर ओढ़ कर बैठ जायें, तथा सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर, किसी प्लेट में कुंकुम से पांच बिन्दियां बनाकर, उस पर **'तांत्रोक्त नारियल'** को स्थापित कर दें और कुंकुम से उस पर चार बिन्दियां लगायें। इसके पश्चात् नारियल के ऊपर चावल की ढेरी बनाकर, उस पर **'मधुरूपेण रुद्राक्ष'** को स्थापित कर दें।

इसके बाद अक्षत, पुष्प, धूप आदि दिखाकर पूजन करें, और पांच मिनट तक किसी भी बिन्दु पर एकाग्रचित्त होकर त्राटक करें, तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर अपने नाम व गोत्र का उच्चारण कर, तथा अपनी मनोकामना को पूरी करने का संकल्प करें, और फिर जल को जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद **'वशित्व माला'** से निम्न मंत्र का आसन पर ही खड़े होकर एक माला जप करें, तथा दस माला उसी आसन पर बैठ कर जप करें, इस प्रकार ११ माला मंत्र-जप करें—

मंत्र

ॐ क्रीं कल्क्यै क्रीं फट्

इस प्रयोग को प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु पूजन एवं एक माला गुरु मंत्र-जप करना आवश्यक है, क्योंकि तांत्रिक साधना में सफलता का एकमात्र सूत्रधार गुरु ही माने जाते हैं। दो दिन तक मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती करें, इसके बाद साधना-सामग्री को किसी एकान्त स्थान में घर से दूर ले जाकर जमीन में गाड़ दें, या नदी अथवा कुएं में इसे विसर्जित कर दें।

इस प्रयोग की समाप्ति के ३० दिन पश्चात् आप स्वयं में एक विशेष परिवर्तन अनुभव करने लग जायेंगे, और आपके व्यक्तित्व में पहले से अधिक निखार आने लगेगा, तथा आप एक दृढ़ एवं प्रखर व्यक्तित्व के स्वामी बन सकेंगे। ●

सर्वमनोकामना सिद्धि विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है साधना विधि सम्बन्धित लेख में प्रकाशित है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है। दीक्षा न्यौछावर का उपयोग केवल संस्था के भवन और संस्था के हित के लिए ही किया जाता है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
पारद गणपति	१३	३००/-
श्रीफल	१३	११/-
मूंगे की माला	१३	१५०/-
आरक्ष यंत्र	१७	२४०/-
सुरक्षा माला	१७	१५०/-
तीन अभय गुटिका	१७	५१/-
पूर्ण पौरुष साधना सामग्री पैकेट(१६ सामग्री)	२६	४७५/-
११ कमलबीज	२६	२५/-
लघु शत-पत्रिका		
यक्षिणी यंत्र	२६	१५०/-
स्थिर लक्ष्मी प्रदायक यंत्र	३३	२४०/-
महामाया माला	३३	२१०/-
सुदर्शन माल्य	४७	२१०/-
अनन्त पात्र	४७	८०/-
जनार्दन यंत्र	४७	२४०/-
२१ कमलगट्टे के बीज	४७	५०/-
बगलामुखी यंत्र	६१	२४०/-
पीली हकीक माला	६१	१५०/-
सुख-समृद्धि प्रदाता गुटिका	६१	१५०/-
पितृेश्वर तर्पण साफल्य यंत्र	६९	२४०/-
११ पितृेश्वर शांति बीज	६९	१०१/-
पारद माला	७६	८००/-
पारद शंख	७६	१५०/-
पारद शिवलिंग	७६	२४०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
पारद गुरु यंत्र	७६	१५०/-
तांत्रोक्त नारियल	७९	६०/-
मधुरूपेण रुद्राक्ष	७९	८०/-
वशित्व माला	७९	२०१/-

दीक्षा

दीक्षा	न्यौछावर
पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा	२१००/-
शिष्याभिषेक दीक्षा	३०००/-
सम्मोहन दीक्षा	२१००/-
गायत्री दीक्षा	२४००/-
रोग निवारण दीक्षा	२१००/-
ग्रह शान्ति दीक्षा	१५००/-
रम्भा दीक्षा	२१००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा	३१००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा	२१००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	२१००/-
तंत्र सिद्धि दीक्षा	२१००/-
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा	५१००/-
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा	२१००/-
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा	२१००/-
पुत्र-प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
गणपति दीक्षा	२४००/-
वांछा कल्पलता दीक्षा	३०००/-
सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ति दीक्षा	३०००/-
अघोर दीक्षा	२१००/-
कृष्णत्व गुरु दीक्षा	५१००/-
बगलामुखी दीक्षा	३१००/-
सरस्वती दीक्षा	१५००/-
त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा	३१००/-
नागेश दीक्षा	१५००/-
साधना सिद्धि दीक्षा	२१००/-
सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा	२४००/-
भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा	३०००/-
आत्म-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा	२१००/-
ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"	३०००/-
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"	२१००/-
दूसरों के मन की बात जानने के लिए "पराविज्ञान दीक्षा"	२१००/-

नोट : साधना-सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें। सम्पूर्ण धनराशि पर मनीऑर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धनराशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनीऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-342001(राज.),टेलीफोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आयें

306,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : 011-7182248

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13 , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/६३ | A.H.W. | पोस्टल-डी.एल.नं० १६०५२/६३

को पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे

दीक्षाएं

तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा,वशीकरण दीक्षा, सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा, पत्थर को वश में करने हेतु हादी तंत्र दीक्षा, गड़ा धन प्राप्त करने हेतु भूगर्भ सिद्धि दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा, दूसरों के मनकी बात जानने के लिए परा ज्ञान दीक्षा, गर्भस्थ वालक चेतना दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा, निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा, ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा, गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा।

- विशेष -

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

ये अदभुत और अचरज भरी दीक्षाएं पूज्य गुरुदेव साधक के अनुरूप चुनकर स्वयं प्रदान करेंगे।

दिनांक : 27-28-29-30 जुलाई 1995

सम्पर्क :

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४
फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

वर्ष-१५
अंक-६

नोट :

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।